ॐ

श्री कर्म दहन विधान

आचार्य श्री १०८ वीर सागर जी महाराज की सुशिष्याए
इस विधान के बीजाक्षर एव ध्यानसूत्र की रचयिता



क्षुल्लिका श्री सुशीलमति एव क्षुल्लिका श्री सुव्रता जी
फलटण (महाराष्ट)

ॐ

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला का छप्पनवां पुष्प

श्री कर्म दहन विधान

राजमल पवैया

सपादक
संहितासूरि प्रतिष्ठाचार्य
पं. नाथू लाल जी शास्त्री
ग्रंथमाला सपादक
श्री डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री नीमच
अध्यक्ष
अ भा दि जैन विद्वत परिषद

प्रकाशक
भरत पवैया एम. काम. एल. एल. बी.
सयोजक
तारादेवी पवैया ग्रंथमाला
४४ इब्राहीमपुरा भोपाल - ४६२ 001

प्रथम आवृत्ति	भारत का स्वर्ण जयती वर्ष १५ दिसम्बर १९९७	न्योछावर १५

ॐ

श्री कर्म दहन विधान

भावी प्रकाशन

१. श्री रत्नत्रय विधान
२. श्री सोलह कारण विधान
३. श्री नियम सार कलश विधान
४. श्री कसाय पाहुड़ विधान
५. श्री आत्मानुशासन विधान
६. श्री तत्त्वार्थ सार विधान
७. श्री ज्ञानार्णव विधान
८. श्री लुघ तत्त्व स्फोट विधान

दूरभाष ५३१३०९ तारादेवी पवैया प्रकाशन भोपाल ४४ इब्राहीमपुरा ४६२००१

ॐ

क्या कहूं

क्या कहू कुछ कहा नहीं जाता ।
मौन भी तो रहा नही जाता ॥

चिर प्रतीक्षित कर्म दहन विधान आपकी सेवा मे प्रस्तुत है कैसा है यह तो पढने पर ही ज्ञात होगा मुझे संतोष है कि एक महत्व पूर्ण कार्य जिसकी अनेक भाई बहिनो को प्रतीक्षा थी सहज सम्पन्न हो गया। तैयार तो बहुत पहिले से ही था किन्तु व्यवस्थित करने में समय लग गया । संपादकीय के लिए श्री प्रतिष्ठाचार्य सहितासूरि प नाथूलाल जी शास्त्री इन्दौर एव ग्रथमाला सयोजक डॉ देवेन्द्र कुमार शास्त्री नीमच का कृतज्ञ हू । अपने सरक्षको एव सहयोगियो का आभारी हू। सुन्दर कपोजिंग के लिए शुभ श्री आफसेट के चि नीरज जैन एवं त्वरित कला पूर्ण मुद्रण के लिए श्री योगेश सिहल अजना आफसेट को धन्यवाद देता हूं। समय सार की विशिष्ट ज्ञाता बा ब्र सुशीला श्री का एव उनकी छोटी बहिन बा ब्र कचन बेन सोनगढ एव बा ब्र. रमा बेन पारिख देवलाली का पुराना आग्रह पूर्ण हुआ इसका मुझे हर्ष है। उन्हे धन्यवाद कैसे दू। बीजाक्षर एव ध्यान सूत्र के लिए फलटण महाराष्ट्र की क्षुल्लिकाश्री सुशीलमति जी एव क्षुल्लिकाश्री सुव्रता जी का कृतज्ञ हू। आशा है अष्ट कर्म की १४८ प्रकृतियो का समझने के लिए इसका स्वाध्याय उपयोगी होगा । अत इसका स्वाध्याय अवश्य करे। इत्यलम् ।
भूलो के लिए क्षमाप्रार्थी ।

राजमल पवैया
१५/१२/९७ ४४ इब्राहीमपुरा भोपाल
दूरभाष ५३१३०९ ४६२ ००१

गीत

**मैं भवदधि की बूद भवोदधि मे रहता हू ।
पाप पुण्य की धारा में ही नित बहता हूं ॥
कर्म दहन करने को हे प्रभु निज मे आऊ ।
निज में त्वरित समाऊं निज के ही गुण गाऊ ॥
जिनगुण सपत्ति प्राप्त कर बन जाऊं भगवान ।
वीतराग अरहंत सम पाऊं पद निर्वाण ॥**

ॐ

विषय सूची

१.	मंगलाष्टक	२२
२.	पूजा पीठिका	२५
३.	मंगलाचरण	२७
४	पीठिका	२७
५	सिद्ध पूजन	३४
६	अरहंत पूजन	३८
७	कर्मदहन पूजन	४२
८	कर्मदहन समुच्चय पूजन	५२
९	ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत पूजन	५८
१०	दर्शनावरणी कर्म विनशक श्री अरहत पूजन	६५
११.	वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध पूजन	७३
१२	मोहनीय कर्म विनाशक श्री अरहत पूजन	७८
१३	आयु कर्म दहन कर्त्ता श्री सिद्ध पूजन	९३
१४	नाम कर्म दहन कर्त्ता श्री सिद्ध भगवत पूजन	९८
१५	गोत्र कर्म दहन कर्त्ता श्री सिद्ध भगवत पूजन	१३४
१६.	अतराय कर्म दहन कर्त्ता श्री अरहत पूजन	१४०
१७	अतिम महाअर्घ्य	१४७
१७	महाजयमाला	१४९
१८	शान्ति पाठ	१५४
१९	क्षमापना	१५५

ध्रुव सदैव ही सदा शाश्वत, व्यय उत्पाद क्षणिक नश्वर।
ध्रुव का आलंबन ही अनुपम एकमात्र है अविनश्वर ॥

सम्पादकीय

अपने राग द्वेष के कारण सर्वत्र भरी हुई अनंत कार्माण वर्गणाएँ कर्म रूप बनकर जीव के साथ एक क्षेत्रावगाह होकर योग से प्रकृति प्रदेश एवं कषाय से स्थिति अनुभाग बध रूप हो जाती हैं।

इसी से यह ससारी जीव ससार मे जन्म मरण करता हुआ सुख दुख का अनुभव करता रहता है। कर्मो का फल पच परविर्त्तन रूप भव सागर है। स्वय जैसा करता है वैसा ही फल भोगता है। कोई अन्य ईश्वर इसका कर्त्ता हर्त्ता नही है। जैन धर्म में आश्रव भाव से कर्म आते और बंधते हैं तथा गुप्ति समिति आदि से कर्म रुकते हैं और झडते है। द्रव्य भाव कर्मो से सर्वथा मुक्त होने पर मोक्ष (सिद्धावस्था) होता है।

आठ कर्मो की १४८ प्रकृतियॉ हैं ज्ञानावरण की ५, दर्शनावरण की ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २८, आयु की ४, नाम की ९३, गोत्र की २, अतराय की ५। चतुर्थ गुणस्थान से चतुर्दश गुणस्थान तक कर्मो का क्षय होने पर मुक्ति प्राप्त होती है। इन कर्मो के नाश होने से क्रमश अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अव्यावाधत्व अनत सम्यक्त्व (ज्ञान एवं चारित्र भी) अवगाहनत्व अगुरुलघुत्व और अनत वीर्य इस प्रकार सिद्धो के अष्ट गुण प्राप्त होते हैं। इनमें घाति कर्मो के नाश से अनत चतुष्टय (अनुजीवी) गुण प्राप्त होते हैं। एवं चार अघाति कर्मो के अभाव से चार प्रति जीवीगुण प्राप्त होते है । कर्म दहन विधान मे अष्ट कर्मो के नाशार्थ अनेक पूजायें हैं चतुर्थ गुणस्थान मे दर्शन मोह आदि की ७ प्रकृतियों का नाश होता है अत. चतुर्थी तिथि के ७ उपवास किये जाते हैं। इसी प्रकार ३, ३६,१, १६, ८५ प्रकृतियों के नाशार्थ क्रमश

निरहंकारी ममत्व विरहित परभावों का त्यागी बन ।
षटकायक जीवो मे रख समदृष्टि दया रस पागी बन ॥

तीन सप्तमी के ३, छत्तीस नवमियों के ३६, एक दशमी का १, सोलह द्वादशी के १६, पिच्चासी चतुर्दशी के ८५, तथा आठ अष्टमी के ८, उपवास किये जाते हैं। इस प्रकार कुल उपवास सख्या १५६ है।

अष्ट कर्मो के नाश हेतु ८ पूजाये है। "ओ ह्रीं णमो सिद्धाण" यह प्रतिदिन का सामान्य जप मत्र है। विशेष कर्मो के नामानुसार मत्र हैं। इस प्रकार यह विधान बडे महत्व का है जिसे अपनी नवीन हिन्दी पद्य रचना कर इसे नये रूप मे कविवर श्री पवैया जी ने रचा है।

इसकी भाषा एव रचना शैली सुन्दर और आकर्षक है। विधान उपयोगी है धार्मिक बन्धुओं को उक्त विधि अनुसार व्रत कर इसकी पूजा करना चाहिए।

यही पूजा विधान व्रत के पश्चात् उद्यापन मे भी किया जाता है।

सहितासूरि प्रतिष्ठाचार्य

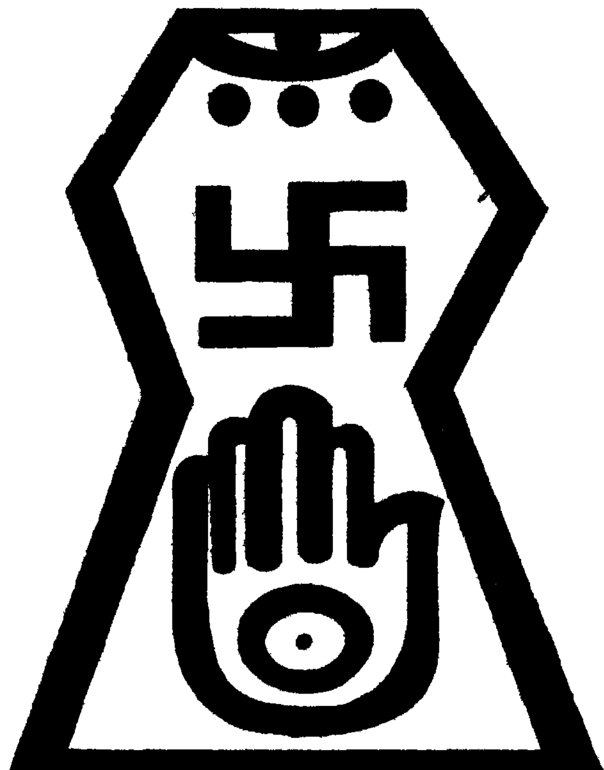
नाथूलाल जैन शास्त्री
४० सर हुकुम चद मार्ग इन्दौर

भजन

भूषित शक्ति अनत से हे त्रिभुवन के नाथ ।
सिद्धि शिला शोभित हुई हो गए आप सनाथ ॥
हो गए आप सनाथ आत्मा अपनी ध्या कर,
मै भवदधि के बीच पड़ा प्रभु पर को भा कर,
आज तुम्हे पा जाना मैने मै हू दूषित ।
इन्हे त्याग हो जाऊ तुम समगुणमणि भूषित ॥

ॐ

श्री कर्म दहन विधान



परस्परोपग्रहो जीवानाम्

ॐ

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला

संरक्षक सूची

प्रधान संरक्षक

११०१/-	परम आदरणीय महामहिम राष्ट्रपति डा. शकर दयाल जी शर्मा राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली
११०१/-	भारत की प्रथम महिला परम आदरणीय श्री. सौ. विमला शर्मा ध. प. राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल जी शर्मा, राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली

संरक्षक

२१,०००/-	श्री स्व. माते श्वरी सुवा बाई ध. प. स्व रतन लाल जी पहाडिया पीसागंन की पुण्य स्मृति में श्री रिखब चद जी नेमी चद्र जी पहाड़िया परिवार
१०,०००/-	श्री दि. जैन मुमुक्षु मंडल, झबेरी बाज़ार, मुबई
५,०००/-	श्री पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली
११०१/-	श्री डा. गौरीशकरजी शास्त्री एम.ए. (ट्रिपल) सप्ततीर्थ पी.एच.डी. अध्यक्ष म.प्र.स्वतंत्रता सग्राम सैनिक सघ भोपाल
११०१/-	श्री सौ. डा. राजकुमारी देवी ध.प. श्री डा. गौरीशकरजी शास्त्री भोपाल
११०१/-	बाल. ब्र. पद्मश्री सुमतिबेन शहा संस्थापक श्राविका सस्थान सोलापुर द्वारा बा.ब्र. विद्युल्लता शहा सोलापुर
२५००/-	स्व. बालचन्दजी, अशोक नगर द्वारा चौधरी फूलचन्दजी, न्यू मूंबई
१६००/-	श्री इन्द्रध्वज मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, तलोद
११००/-	श्रीमती बसन्ती देवी धर्मपत्नी स्व. डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, भिण्ड
११००/-	कु, लिटिल (पल्लवी) सुपुत्री पूर्णिमा धर्मपत्नी शैलेन्द्र कुमार जैन, भिण्ड
११००/-	श्रीमती सुहागबाई धर्मपत्नी बदामीलाल जैन, भोपाल
११००/-	श्री मोहनलाल जैन म. प्र. ट्रांसपोर्ट, भोपाल
११००/-	श्री हुकुमचन्द सुमतप्रकाश जैन, भोपाल
११००/-	श्रीमती सुशील शास्त्री धर्मपत्नी श्री के. शास्त्री, नई दिल्ली
११००/-	सौ. सुशीलादेवी धर्मपत्नी ताराचन्द जैन, इटावा
११००/-	श्री जैन युवा फेडरेशन मुरार से प्राप्त सम्मान राशि
११००/-	सौ. शशिप्रभा धर्मपत्नी महेशचन्द जैन, फिरोजाबाद
११००/-	सौ. प्यारीबाई धर्मपत्नी बाबूलाल जी विनोद, भोपाल

११००/-	स्व. परमेश्वरी देवी धर्मपत्नी सत्यप्रकाशजी गुप्ता, भोपाल
११००/-	सौ. स्नेहलता धर्मपत्नी चन्द्रप्रकाश सोनी, इन्दौर
११००/-	सौ. रानी देवी धर्मपत्नी सुरेशचन्द पाड्या, इन्दौर
११००/-	श्री दि. जैन महिला मंडल, भोपाल से प्राप्त सम्मान राशि
१०००/-	श्री दि. जैन स्वाध्याय मंदिर, राजकोट
१०००/-	देवलाली कवि सम्मेलन से प्राप्त सम्मान राशि
१०००/-	सौ. निर्मला धर्मपत्नी भरत पवैया, भोपाल
१०००/-	श्री भरत पवैया, भोपाल
१०००/-	श्री उपेन्द्र कुमार नगेन्द्र कुमार पवैया, भोपाल
१०००/-	श्री चौधरी फूलचन्दजी, वाशी न्यू मूंबई
१०००/-	श्री कुन्दकुन्द कहान स्मृति सभागृह, आगरा
१०००/-	श्री उम्मेदमल कमलकुमारजी बड़जात्या, दादर मूंबई
१०००/-	श्री हुकुमचन्दजी सुमेरचन्दजी, अशोकनगर
१०००/-	सौ. राजबाई धर्मपत्नी राजमल जी लीडर, भोपाल
१०००/-	सौ. सुधा धर्मपत्नी महेन्द्रकुमार जी अलकार लाज, भोपाल
१०००/-	सौ. मधु धर्मपत्नी जितेन्द्र कुमार जी सराफ, भोपाल
११०१/-	सौ. कमलादेवी धर्मपत्नी खेमचन्द जैन सराफ, भिण्ड
११०१/-	सौ. मधु धर्मपत्नी डा. सत्यप्रकाश जैन, नई दिल्ली
५५५५/-	श्री परमागम दि. जैन मदिर ट्रस्ट, सोनागिर
११००/-	सौ. जिनेन्द्रमाला धर्मपत्नी हेमचन्दजी जैन, सहारनपुर
११००/-	सौ. श्री कान्तादेवी ध. प. शान्तिप्रसाद जैन, दिल्ली (राजवैद्य एंड सस)
११००/-	सौ. रतनबाई धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर
११००/-	सौ. वैजयती देवी धर्मपत्नी बाबूलालजी पाडया लाला परिवार, इन्दौर
११००/-	पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली
२५०१/-	सौ. लाभुबेन ध. प. श्री अनिल कामदार, दादर मुबई
१०००१/-	पू. कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली
११०१/-	सौ. माणिकबाई धर्मपत्नी फूलचंदजी झाझरी, उज्जैन
११०१/-	सौ. सुनीता ध. प. विनय कुमार जी जैन ज्वेलर्स, देहरादून
११००/-	सौ. अनीता ध. प. मोहित कुमार जी मेरठ
११००/-	सौ. गजराबाई ध. प. चौधरी फूलचद्रजी, न्यु मुबई
११००/-	सौ. स्व. तुलसाबाई ध. प. स्व. बालचंद्रजी अशोक नगर
११०१/-	सौ. प्रेमबाई ध. प. शान्तिलाल जी खिमलासा

११०१/- सौ. स्नेहलता ध. प. देवेन्द्रकुमार जी बडकुल अरविन्द कटपीस, भोपाल
११०१/- सौ. शान्तिबाई ध. प. श्री श्रीकमलजी एडवोकेट, भोपाल
११०१/- सौ. रेशमबाई ध. प. श्रीछगनलाल जी मदन मेडिको, भोपाल
११०१/- श्रीमती जैनमती ध. प. स्व. मदनलालजी भोपाल
११०१/- सौ. कमलाबाई ध. प. श्री माणिकचद जी पाटोदी, लुहारदा
११०१/- सौ. तेजकुवर बाई ध. प. श्री उम्मेदमल जी बडजात्या दादर, मुंबई
१००१/- श्री दि. जैन मुमुक्षु मडल नवरग पुरा अहमदाबाद
११०१/- सौ. कोकिला बेन ध. प. श्री हिम्मतलाल शाह कहान नगर दादर, मुबई
११०१/- श्री सुरेशचदजी मुनीलकुमारजी, बेंगलोर
१०००/- श्री पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली
११०१/- सौ. सविता जैन एम. ए. ध.प. श्री उपेन्द्रकुमार पवैया, भोपाल
११०१/- सौ. सुशीलादेवी ध. प. श्री चद्र जैन सुभाष कटपीस, भोपाल
१००१/- श्री सौ. चंद्रप्रभा, ध. प. डां. प्रेमचंदजी जैन ४ अरविन्द मार्ग, देहरादून
११०१/- श्री आचार्य कुन्दकुन्द साहित्य प्रकाशन समिति, गुना
११०१/- सौ. शान्तिदेवी ध. प. श्री बाबूलालजी (बाबूलाल प्रकाश चद्र), गुना
११०१/- सौ. उषादेवी ध. प. श्री राजकुमारजी (बाबूलाल प्रकाश चद्र), गुना
११०१/- सौ. अशरफीदेवी ध. प. ज्ञानचदजी धरनावादवाले, गुना
११०१/- सौ. पद्मादेवी ध. प. श्री डां. प्रेमचंद जी जैन, गुना
११०१/- सौ. धनकुमारजी विजयकुमारजी, गुना
११०१/- सौ. आशादेवी ध. प. अरविन्द कुमारजी, फिरोजाबाद
११०१/- सौ. श्री ज्ञानचदजी मनोज कटपीस, भोपाल
११०१/- सौ. रजनीदेवी ध. प. श्री नरेन्द्र कुमारजी जियाजी सूटिंग, ग्वालियर
२००१/- सौ. मजुला बेन ध. प. श्री मणिलालजी, दादर मुबई
११०१/- स्व. सुआबाई मातुश्री रिखवचंद्र नेमीचद पहाड़िया, पीसागन (अजमेर)
११०१/- सौ. तुलसाबाई ध. प. श्री नवलचदजी जैन, भोपाल
११०१/- श्री नवल कुमारी ध. प. स्व बाबूलालजी मोगानी, भोपाल
११०१/- श्रीमती कमलश्री बाई ध. प. स्व डालचदजी जैन, भोपाल
११०१/- श्री परमागम मदिर ट्रस्ट, सोनागिर
११०१/- श्री दि. जैन मुमुक्षु मडल, हिम्मत नगर
११०१/- सौ. मजुला ध. प. शान्तिलाल गाधी, मैनेजर, सेन्ट्रलबैंक, जोरहाट
११०१/- श्रीमती सुखवती बाई ध.प. स्व. श्री बाबूलाल जी ठेकेदार, भोपाल
११०१/- स्व. श्रीमतीबाई ध. प. कालूरामजी, सत्यम टेक्सटाइल, भोपाल

११०१/-	सौ. शकुन्तलादेवी ध. प. रतनलाल श्री मोगानी, भोपाल
२५००/-	सौ. रमाबेन धर्मपत्नी सुमन भाई माणेकचंद्र दोशी, राजकोट
११००/-	सौ. मीनादेवी एडवोकेट धर्मपत्नी डां. राजेन्द्र भारिल्ल, भोपाल
१०००/-	श्रीमती पुष्पा पाटोदी, मल्हारगंज, इन्दौर
११००/-	श्री जेठाभाई एच. दोशी सेब्रित ब्रदर्स, सिकंदराबाद
११००/-	सौ. सुशीलाबाई धर्मपत्नी लक्ष्मीचंद जैन विकास आटो, भोपाल
११००/-	सौ. मीना जैन धर्मपत्नी राजकुमार जैन सेन्ट्रल इन्डिया बोर्ड एन्ड पेपर मिल, भोपाल
११००/-	सौ. रजनी जैन धर्मपत्नी अरविन्द कुमार जैन अनुराग ट्रेडर्स, भोपाल
१०००/-	स्व. गुलाब बाई धर्मपत्नी स्व. पातीराम जी जैन, भोपाल
१०००/-	श्रीमती मातेश्वेरी चौधरी मनोज कुमार जैन माटुन्गा, मुंबई
११००/-	श्री कोकिलाबेन पंकजकुमार पारिख दादर, मुंबई
११००/-	स्व. श्री ककुबेन रिखवदास जी द्वारा शान्तिलालजी दादर मुंबई
११००/-	श्री हीराभाई चिमनलाल शाह प्रदीप सेल्स पाय धुनी मुंबई
११००/-	श्रीमती दक्षाबेन विनयदक्ष चेरिटेबल ट्रस्ट दादर, मुंबई
१०००/-	सौ. फैन्सीबाई धर्मपत्नी सेममलजी कात्रज, पूना
११००/-	स्व. सौ. मिश्रीबाई धर्मपत्नी राजमल जी फर्म एम रतनलाल, भोपाल
११००/-	सौ. हीरामणी धर्मपत्नी श्री मागीलालजी जैन , भोपाल
११०१/-	सौ. पूनम जैन धर्मपत्नी श्री देवेन्द्र कुमार जैन, सहारनपुर
२१०१/-	श्री पंडित कैलाशचंद जी कुन्द-कुन्द कहान स्वाध्यायमंदिर देहरादून
११०१/-	सौ. मनोरमादेवी धर्मपत्नी श्री जयकुमार जी ब्रज कोहेफिजा, भोपाल
११०१/-	श्री भवुतमलजी भंडारी, बेंगलोर
११०१/-	श्री फूलचंदजी विमलचंद जी झाझरी, उज्जैन
११११/-	स्व. श्री जयकुमार जी की स्मृति में मेसर्स मनीराम मुंशी लाल उद्योग समूह, फिरोजाबाद
११०१/-	सौ. अनीता धर्मपत्नी राजकुमार जी, भोपाल
११०१/-	सौ. मीनादेवी धर्मपत्नी चन्द्रप्रकाश जी, इटावा
११०१/-	सौ. मोतीरानी धर्मपत्नी कैलाश चंद्र जी , भिण्ड
११०१/-	सौ. ब्रजेश धर्मपत्नी अभिनंदन प्रसाद जी, सहारनपुर
२१०१/-	सौ. रत्नप्रभा धर्मपत्नी मोतीचंदजी लुहाडिया, जोधपुर
५१११/-	श्री केशरीचंद जी पूनमचंद जी सेठी ट्रस्ट, नई दिल्ली
११०१/-	सौ. मीनादेवी धर्मपत्नी केशवदेव जी, कानपुर

११०१/- श्री श्यामलाल जी विजयवर्गीय पी. वी..ज्वेलर्स, ग्वालियर
११०१/- सौ. मधु धर्मपत्नी विनोद कुमार जी, ग्वालियर
११०१/- स्व. चमेलीदेवी धर्मपत्नी निर्मल कुमारजी एडवोकेट, ग्वालियर
११०१/- स्व. रघुवरदयाल जी की स्मृति में खेमचंद जी सत्यप्रकाश जी, भिण्ड
११०१/- चि. अंकुर पुत्र सौ. सुधा ध.प.सुनील कुमार जैन, भिण्ड
११०१/- सौ. मायादेवी धर्मपत्नी सुभाष कुमार जी, भिण्ड
११०१/- सौ. विमलादेवी धर्मपत्नी उत्तम चंद जी बरोही वाले , भिण्ड
११०१/- स्व. श्री मूलचद भाई जैचद भाई भू. पूर्व मत्री तारगा जी
११०१/- श्री दोसी बसंतलाल जी मूलचंद जी , मुंबई
११०१/- श्री कनुभाई एम. दोसी, मुबई
११०१/- श्रीमती लीलावती बेन छोटालाल मेहता, मुबई
११०१/- सौ निर्मलादेवी धर्मपत्नी छोटेलालजी एन. पाण्डे, मुंबई
११०१/- श्री शान्तिलाल जी रिखवदास जी दादर, मुबई
११११११/- स्व. मातेश्वरी सुवाबाई धर्मपत्नी स्व. रतनलालजी, पीसांगन की स्मृति में श्री रिखवचंदजी नेमीचंदजी पहाडिया परिवार द्वारा
११०१/- कुन्द कुन्द स्मृति भवन आगरा
२५०१/- श्री शान्तिनाथ दि. जैन ट्रस्ट केकडी द्वारा श्री मोहनलाल कटारिया
११०१/- श्री दि. जैन समाज, भीलवाड़ा
११०१/- श्री रामस्वरूपजी महावीर प्रसाद जी अग्रवाल, केकड़ी
११०१/- श्री लादूराम श्री ताराचदजी अग्रवाल, केकड़ी
२१०१/- सौ. चमेली देवी धर्मपत्नी शिखरचद जी सर्राफ , विदिशा
११०१/- सौ. सुषमादेवी धर्मपत्नी श्री डा. आर. के. जैन, विदिशा
११०१/- श्रीमती बदामी बाई धर्मपत्नी स्व. श्री बाबूलाल जी (५०१), भोपाल
११०१/- स्व. शक्कर बाई धर्मपत्नी स्व. बिहारीलाल जी, बैरसिया
११०१/- स्व. लक्ष्मीबाई धर्मपत्नी स्व. बशीलाल जी, भोपाल
११०१/- सौ. रतनबाई ध.प. नन्नूमल जी भडारी, भोपाल
११०१/- सुश्री बा .ब्र. पुष्पा बेन झाझरी, उज्जैन
११०१/- श्रीमती ताराबाई झाझरी. ध.प. स्व. श्री राजमल जी झाझरी, गौतमपुरा
५००१/- श्री दिगम्बर जैन मदिर, लशकरी गोठ, गोराकुन्ड, इन्दौर
११०१/- सौ. चदन बाला ध.प. श्री प्रकाशचद जी भडारी, भोपाल
११०१/- सौ. राजकुमारी ध.प. श्री महावीर प्रसादजी सरावगी, कलकत्ता
११०१/- सौ. स्नेह प्रभा ध.प. श्री सुगन चंद जी मानोरिया, अशोकनगर

२५०१/- श्री भरतभाई खेमचंद जेठालाल शेठ राजकोट
११०१/- ब्र. सुशीला श्री, ब्र. कंचनबेन, ब्र. पुष्पा बेन, सोनगढ
११०१/- सौ. विमलादेवी ध.प. श्री बाबूलालजी, हाटपीपलावाले, भोपाल
११०१/- श्रीमती विमलादेवी ध.प. स्व. श्री भगवानदासजी भंडारी, गंजबासोदा
११०१/- स्व. कुमारी शिखा सुपुत्री श्री नीलकमल बाममलजी पवैया, भोपाल
११०१/- सौ. स्नेहलता ध.प. श्री जैनबहादुर जैन, कानपुर
२१०१/- सौ. कंचनबाई ध.प. श्री सौभाग्यमलजी पाटनी, बंबई
२५०१/- श्री ताराबाई मातेश्वरी श्री मांगीलालजी पदमचंदजी पहाडिया, इन्दौर
११०१/- सौ. शशिबाला ध.प. श्री सतीश कुमारजी सुपुत्र श्री पन्नालालजी, भोपाल
११०१/- श्री आनद कुमारजी देवेन्द्र कुमारजी पाटनी, इन्दौर
११०१/- सौ. प्रभादेवी ध.प. श्री गुलाबचदजी जैन, बेगमगंज
११०१/- श्री समरतबेन ध.प. श्री चुन्नीलाल रायचद मेहता, फतेपुर
११०१/- श्री ताराबेन ध.प. स्व. धर्मरत्न बाबुभाई चुन्नीलाल मेहता, फतेपुर
११०१/- कुमारी ममता सुपुत्री श्री आशादेवी पाड्या सुपुत्री स्व. श्री किशनलालजी पाड्या, इन्दौर
११०१/- स्व. श्री राजकृष्णजी जैन (श्री प्रेमचंद्र जी जैन के पिता जी) दिल्ली
११०१/- स्व. श्रीमती कृष्णादेवी ध. प. श्री स्व. राजकृष्ण जी
११०१/- स्व. श्रीमती पदमावती ध. प. श्री प्रेमचन्द्रजी जैन अहिंसा मंदिर (दिल्ली)
११०१/- सौ. श्रीमती चन्द्रा ध.प. श्री उमेश चन्द्र जी जैन द्वारा श्री सजीवकुमार राजीव कुमारजी, भोपाल.
११०१/- सौ. पाना बाई ध. प. श्री मोहल लाल जी सेठी गौहाटी (आसाम)
३००१/- श्रीमती रत्नम्मा देवी ध. प. स्व. श्री रत्न वर्मा हैगडे मातेश्वरी राजर्षि श्री वीरेन्द्र हैग्गडे धर्माधिकारी धर्मस्थल (कर्नाटक)
१५००/- आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्र, भोपाल से प्राप्त पारिश्रमिक
११०१/- सौ. कलाबेन श्री हसमुख भाई वोरा, मुबई
११०१/- श्री स्वर्गीय जसवती बेन श्री प्रवीण भाई वोरा, मुबई
११०१/- सौ. पुष्पाबेन कान्तिभाई मोटाणी, मुबई
११०१/- पूज्य श्री स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली ६४ ऋद्धि विधान के समय कवि सम्मेलन में
११०१/- सौ. वसुमति बेन श्री मुकुन्दभाई खारा, मुबई
११०१/- श्री कटोरी बाई ध.प. स्व. जयकुमार जी जैन मातेश्वरी ब्रिगेडियर श्री एम.के.जैन, दिल्ली
११०१/- स्वर्गीय पानाबाई ध.प. सत्यनारायण सरावगी मातेश्वरी राजूभाई, कानपुर

११०१/-	सौ. राजकुमारी ध.प. श्री कोमलचन्दजी गोधा जयपुर
२१०१/	सौ. रतनबाई ध.प. श्री सोहनलालजी जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर
११०१/-	प्रदीप सेल्स कार्पोरेशन पायधुनी, मुंबई
११०१/-	सौ. कमलाबेन हिराभाई शाह, प्रदीप सेल्स पायधुनी, मुंबई
११०१/-	श्री दिलीप भाई प्रदीप सेल्स कार्पोरेशन, मुंबई
११००/-	प्रदीपभाई प्रदीप सेल्स कार्पोरेशन पायधुनी, मुंबई
११०१/-	सौ. कुसुमबाई पाटनी ध.प. श्री शान्तिलालजी पाटनी, छिंदवाडा
११०१/-	सौ. मंजु पाटनी ध.प. श्री सन्तोषकुमार पाटनी वासिम
११०१/-	स्व. कुसुम देवी ध. प. स्व. श्री कोमल चंद जी की स्मृति में अजय राज जी जैन भोपाल
११०१/-	सौ. इन्द्राणी देवी ध. प. श्री बागमल जी पवैया भोपाल
११०१/-	सौ. शकुन्तला ध. प. श्री धीरेन्द्र कुमार जी जैन भोपाल
११०१/-	स्व. पुतली बाई ध. प. स्व दीपचंद जी पाड्या (अतुल पब्लिसिटी भोपाल)
११०१/-	श्री झकारी भाई खेमराज बाफना चेरीटेबिल ट्रस्ट वैरागढ
१११०१/-	सौ. कमल प्रभा ध. प. श्री मानिक चंद जी लुहाडिया नई दिल्ली
१११०१/-	स्व. श्री उमरावदेवी ध. प. श्री जगनमल जी सेठी इम्फाल
११०१/-	सौ. आभा देवी ध. प. प्रकाश चंद जी जैन रायपुर
११०१/-	सौ. कमला देवी ध. प. श्री राधेश्याम जी अग्रवाल भोपाल
११०१/-	श्री अमर सिंह जी अमरेश समस्तीपुर (बिहार)
२५०१/-	श्रीमती रतन बाई ध. प. स्व. श्री केशरी मल जी पाड्या इन्दौर
११०१/-	सौ. मधु ध. प. श्री वीरन्द्र कुमार जी जैन नई दिल्ली
२१०१/-	जैन जाग्रति महिला मंडल गुना (म. प्र.)
११०१/-	सौ. ज्योति ध. प. श्री सुरेश चंद जी जैन पारस स्टोर्स गुना
११०१/-	श्री शकुन्तला देवी ध. प. स्व. श्री दरबारी लाल जी जैन दिल्ली
११०१/-	श्री शान्तिदेवी ध.प. स्व. पाडे मूलचंदजी जैन इटावा मातेश्वरी श्री वीरेन्द्र कुमार सिलचर, नरेन्द्र कुमार जी भोपाल
११०१/-	सौ. सुमनेश ध.प. श्री वीरेन्द्रकुमार जैन सिलचर (आसाम)
११००१/-	श्रीमंत सेठ शितावराय जी लक्ष्मी चंद जी साहित्योद्धारक फंड विदिशा
११०१/-	श्री सौ किरण चौधरी ध प श्री महेन्द्र कुमार जी चोधरी भोपाल
११०१/-	श्री सौ शशि ध प श्री आदित्य रंजन जैन राज ट्रेक्टर्स बीना
११०१/-	श्री सौ चमेली बाई ध प श्री कस्तूर चंद जी जैन सिलवानी वाले भोपाल
११०१/-	सौ कमलेश ध प गेदालाल जी सराफ चंदेरी
११०१/-	श्री रामप्रसाद जी हजारीलाल जी भंडारी भोपाल

११०१/-	श्री बिश्वंभर दास जी महावीर प्रसाद जी जैन सराफ दिल्ली
५००१/-	श्री फूलचद जी विमलचंद जी झांझरी उज्जैन
११०१/-	श्री दि. जैन शिक्षण समिति, रामाशाह मंदिर, मल्हारगज, इन्दौर
११०१/-	सौ अंजु देवी ध प अजय सोगानीमोटर हाऊस भोपाल
११०१/-	स्व. शान्ताबेन ध प श्री शान्ति भाई जवेरी मुंबई
११०१/-	श्री बसती बाई ध प स्व श्री हरख चंद जी छावडा मुबई
११०१/-	सौ शशि ध प श्री अशोककुमारजी छावडा सूरत
११०१/-	स्व. कान्ताबेन मोतीलालजी पारिख की स्मृति में प्र रमा बेन पारिख देवलाली
११०१/-	श्री मदन लालजी अनिल कुमारजी जैन, अनिल बेंगल्स, भोपाल
११०१/-	श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री मानिक चद जी जैन गुड वाले, भोपाल
११०१/-	श्री जिन प्रभावना ट्रस्ट प्रो सुमत प्रकाश जी जैन भोपाल
११११/-	श्री जैन स्वाध्याय मडल पढरपुर
११००१/-	श्री केशरी चद्र जी पूनम चद्र जी सेठी ट्रस्ट, नई दिल्ली
११०१/-	सौ प्रतिभा देवी ध प श्री मनोज कुमार जैन मुजफ्फर नगर
११०१/-	सौ ममता देवी ध फ श्री आदीश कुमार जी पीरागढी नई दिल्ली
११०१/-	प्रमिला देवी ध प श्री मांगीलाल जी पहाडिया इन्दोर
११०१/-	श्री गोकल चद जी चुन्नी लाल जी की स्मृति मे सुपुत्र श्री मागी लाल जी पहाडिया इन्दौर
११०१/-	सौ सुधा ध प श्री प्रवीण कुमार जी लुहाडिया नई दिल्ली
११०१/-	सौ पुष्पादेवी ध प श्री सतीश कुमार जी जैन नई दिल्ली
११०१/-	सौ रमा जैन ध प श्री दृगेन्द्र कुमार जी नई दिल्ली
११०१/-	अशोक कुमार जी सुपुत्र श्री दरबारीमल जी नई दिल्ली
११०१/-	श्री स्व मेमोदेवी ध प श्री अजित प्रसाद जी पीतल वाले नई दिल्ली
११०१/-	सौ कौशल्या देवी ध प श्री इन्द्र सेन जी शाहदरा दिल्ली
११०१/-	स्व निर्मला देवी ध प श्री पृथ्वी चद्र जी जैन नई दिल्ली
११०१/-	सौ विमला देवी ध प श्री विमल कुमार जी सेठी इन्दौर
११०१/-	सौ कमला देवी ध प वाणी भूषण पं ज्ञान चंद्र जी विदिशा
११०१/-	श्री कचन बाई ध प स्व हुकुम चद्र जी पाटनी मातेश्वरी आनद कुमार जी देवेन्द्र कुमार जी इन्दौर
११०१/-	श्री स्व सुन्दर बाई ध प श्री छोटेलाल जी पाडे झासी की स्मृति मे सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी

११०१/-	सिंघई श्री सुन्दरलालजी सुभाष ट्रान्सपोर्ट प्रा. लि. भोपाल
११०१/	स्व पंडित आनंदीलालजी जैन विदिशा
११०१/-	सौ. ताराबाई ध. प. श्री राजमल जी मिठ्ठूलाल जी नरपत्या, भोपाल
११०१/-	सौ. कुसुम जैन ध. प. प्रो श्री महेश चन्द्र जी जैन गोहद
११०१/-	सौ. आशा देवी ध. प. श्री पी सी जैन प्रबंधक स्टेट बैंक भोपाल
११०१/-	सौ. धनश्री बाई ध प. श्री कपूर चंद्र जी जैन भोपाल (डेडी)
११०१/-	सौ सावित्री बाई ध. प. चौधरी सुभाष चद्र जी जैन भोपाल
११०१/-	स्व श्री आभा देवी ध. प. श्री सुरेन्द्र कुमार जी सौगानी भोपाल
११०१/-	सौ श्री चद्रकान्ता ध प श्री महेन्द्र कुमार जी जैन सामन सुखा भोपाल
११०१/-	सौ. सविता देवी ध प. श्री अरुणकुमारजी जैन, भोपाल
११०१/-	सौ चम्पा देवी ध प श्री लक्ष्मी चद्र जी महावीर टेन्ट हाऊस, भोपाल
११०१/-	सौ वीणा देवी ध. प श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन आम्रपाली भोपाल
११०१/-	सौ विद्यादेवी ध प श्री देवेन्द्र कुमार जी सौगानी भोपाल
११०१/-	श्री देवेन्द्र कुमार जी पाटनी मल्हारगज इन्दौर
११०१/-	सौ. शकुन्तला देवी ध प श्री पदम चद्र जी भोच जयपुर
११०१/-	सौ भंवरी देवी ध प श्री घीसालाल जी छाबडा जयपुर
११०१/-	सौ कचन देवी ध प श्री जुगराज जी कासलीवाल कलकत्ता
११०१/-	सौ शान्ति देवी ध प पारसमल जी पाटनी अजमेर
११०१/-	सौ गुलाब देवी ध प श्री लक्ष्मी नारायण जी जैन शिवसागर आसाम
११०१/-	सौ शान्ति देवी ध प स्व श्री सेठ मुन्शीलाल जी फिरोजाबाद
११०१/-	सौ शकुन्तला देवी ध प स्व श्री जय कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/-	सौ सुलोचना देवी ध प श्री सुरेशचद्र जी जैन फिरोजाबाद
११०१/-	सौ सुषमा देवी ध प श्री प्रमोद कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/-	सौ राजमती देवी ध प श्री उग्रसेन जी सर्राफ फिरोजाबाद
११०१/-	सौ निशादेवी ध प श्री प्रदीप कुमार जी सर्राफ फिरोजाबाद
११०१/-	सौ. विमला देवी ध प श्री चद्रसेन जी जैन बडामुहल्ला फिरोजाबाद
११११/-	सौ सरोज देवी ध प श्री कोमल चद्र जैन बामौरा वाले भोपाल
११११/-	श्री पूनम चद्र जी वरदीचद्र जी पाटनी पारमार्थिक ट्रस्ट रतलाम
११११/-	सौ. विमला देवी ध प स्व श्री सोहन लाल जी अग्रवाल रतलाम
११११/-	श्री गोपी जी लखमी चद्र जी अजमेरा रतलाम
११११/-	स्व. कचन बाई जुहारमल जी एव स्व अनिल पाटौदी की स्मृति मे दिगबर जैन सोशल ग्रुप रतलाम

१९९९/- सौ. तारादेवी ध.प. श्री महेन्द्र कुमार मोठिया रतलाम
१९९९/- श्रीमती सूरज बाई ध. प. स्व. मन्नालाल जी गवका जैन रतलाम
१९९९/- श्रीमती विमला देवी ध. प. कैलाश चद्र जी पाटौदी रतलाम
११०१/- श्री सरजू बाई मातेश्वरी श्री सुरेश चद्र जी जैन, भोपाल
११०१/ स्व. श्री लक्ष्मीबाई ध.प. श्री मिट्ठूलाल जी नरपत्या भोपाल
११०१/- श्रीमती सतोष जैन ध. प. स्व. श्री रतन कुमार जी जैन, जन को. हमीदिया रोड भोपाल
११०५/- श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल अहमदाबाद (चौसठ ऋद्धि विधान पर)
११०१/- स्व. फूलाबाई एव स्व. श्रीपालजी (माता-पिता) की स्मृति मे राजमल बागमल पवैया, भोपाल
११०१/- श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
५००१/- श्री हीराभाई शाह प्रदीप सेल्स कारपोरेशन मबुइ
११०१/- श्री ए. आनद कुमार जी सम्यसार सदन मसूर
११०१/ श्री रेशम बाई ध. प. स्व. श्री लाभमल जी भोपाल
११०१/- सौ. मिनी देवी ध. प. श्री शान्ति कुमार जी विनोद भोपाल
११०१/- सौ. चद्र प्रभा देवी ध. प. श्री डॉ. कपूर चद जी कौशल भोपाल
११०१/- श्री स्व. कमला देवी ध. प. श्री पदम कुमार जी जैन करनाल
११०१/- श्री नथमल जी लूणिया नवरग पटना
११०१/- श्री सौ. सुधा बेन ध. प. श्री शशिकान्त वकील मुबई
११०१/- सौ. नीलाबेन ध. प. श्री विक्रम भाई कामदार मुबई
११०१/- श्री उल्लास भाई जोवलिया मुबई
५००१/- श्री सौ. मजुला बेन कबीनभाई पारिख मुबइ
११०१/- श्री अनत भाई अमोलख भाई मुबइ
११०१/- श्री सौ. मधुकान्ता बेन रमेश भाई मेहता मुबई
५००१/- श्री पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली
५००१/- श्री दिगबर जैन मुमुक्षु समाज अशोक नगर
११०१/ श्री रत्नीबाई ध. प. श्री बाबूलाल जी अशोक नगर
११०५/- श्री सौ. सरोज देवी ध. प. श्री डॉ. बाबूलाल जी अशोक नगर
११०१/- श्री धीरज लाल जी मलूकचद जी कामदार मुबई
११०१/- श्री बा. ब्र. सुकुमाल जी झाझरी उज्जैन
३००१/- श्री जैन युवा फेडरेशन द्वारा श्री प्रदीप झाझरी उज्जैन
११०१/- सौ. गीता गोइनका ध. प. श्री सावल प्रसाद जी गोइनका भोपाल

१९०१/- सौ. स्नेह लता गोइनका ध. प श्री अरविन्द गोइनका भोपाल
११०१/- सौ. राजकुमारी तिवारी ध प. श्री देवी शकर जी तिवारी भोपाल
११०१/- सौ रेशम बाई ध. प. श्री सौभाग्यमल जी स्व सेनानी भोपाल
५००१/- स्व श्री गजरादेवी की स्मृति में श्री फूलचद जी चौधरी न्यू मुबई
११०१/- श्री ओखी बाई ध. प श्री स्व जसराज जी बागरेचा बेगलोर
११०१/- श्री शान्ति लाल जी भायाणी मद्रास चेन्नई
५००१/- स्वस्ति श्री भट्टारक चारु कीर्त्ति स्वामी जी जैनमठ श्री क्षेत्र श्रवण बेलगोला
११०१/- कुमारी समता सुपुत्री आशा देवी जैन गोराकुन्ड इन्दौर
११०१/- दि जैन शिक्षण समिमति मल्हारगज इन्दौर
११०१/- ब्र हीराबेन दि जैन महिला श्राविका श्रम कचन बाग इन्दौर
११०१/- श्री किशोरी बाई अध्यापिका महू
११०१/- श्री दिगबर जैन मदिर समिति पिपलानी भोपाल
११०१/- श्री गीतादेवी C/o श्री राकेश कुमार जैन दिल्ली
११०१/- श्री कुसुम लता ध प डॉ बी सी. जैन देहरादून
११०१/- चि शशाक एव लोकान्त सुपौत्र श्री हेमचंद्र. जी जैन देहरादून
११०१/- चि कुमारी सुरभि सुपौत्री श्री हेमचद्र जी जैन देहरादून
११०१/- श्री सौ स्नेहलता ध प श्री चौधरी शान्ति लाल जी भीलबाडा
२१०१/- श्री सौ शशि प्रभा ध प श्री प्रकाश चद जी लुहाडिया इन्दौर
११०१/- सौ केशरबाई ध प श्री नेमीचद जी आमल्या वाले गुना
११०१/- स्व. श्री पुष्पा देवी ध प श्री केवल चंद जे कुभराज वाले उज्जैन
११०१/- सौ मजुला बेन ध प श्री जयती लाल जी शाह मुनाई वाले मुबई
५००१/- श्री महावीर दि जैन ट्रस्ट चिमन गज उज्जैन द्वारा ब्र श्री सुकुमार जी झाझरी
११०१/- सौ मनोरमा देवी ध प श्री नेमी चद जी पहाडिया पीसागज (अजमेर)
२००१/- श्रीमती सेठानी पुष्पा बाई ध प स्व कृषि पडित श्रीमत सेठ ऋषभ कुमार जी खुरई
११०१/- सौ मीनादेवी ध प. श्री सतोष कुमार जी जैन एडवोकेट भोपाल
११०१/- श्री सुभाष चद जी अनुज कुमार जी जैन सराय अगस्त
११०१/- श्री सौ मेमोदेवी ध प श्री विजय सेन जी जैन दिल्ली
११०१/- श्री सौ सुशीला देवी ध प श्री लक्ष्मी चद जी होजखास नई दिल्ली
११०१/- श्री संतोष देवी ध प स्व मदन लाल जी जैन करोल बाग दिल्ली
११०१/- सौ उषा देवी ध. प श्री सुनील कुमार जी करोल बाग दिल्ली
११०१/- श्री डा सुरेका एम. एस. ध प श्री डा गिरीश एम डी दिल्ली

११०१/-	श्री सौ. पूनम ध प श्री सुनील कुमार जी जैन आनदपुरी मेरठ
११०१/-	श्री जवर चद जी ज्ञान चद जी परमार्थिक ट्रस्ट सनावद
११०१/-	श्री कँवर सेन जी ज्ञान चद जी परमार्थिक ट्रस्ट सनावद
११०१/-	श्री एस पी. जैन नरीमन प्वाइन्ट मुबई
११०१/-	श्री सौ रक्षा देवी ध प श्री अमृत भाई चद्र लोक कालोनी इन्दौर
११०१/-	श्री सौ गजरा बाई ध प श्री कमल चद जी गुडा भोपाल
११०१/-	श्री सौ सुशीला बाई ध प श्री प जवाहर लाल जी बड़कुल विदिशा
११०१/-	श्री सौ रेखा ध प श्री सुनीत कुमार जी गुना
११०१/-	श्री ज्ञानमती ध प श्री प्रकाश चद जी जेन सिरसागज
११०१/-	श्री सो बसती देवी ध प श्री छीतरमल जी बाकलीवाल पीसागज
११०१/-	श्री सौ उमग कुवर ध प श्री गुलाबचद जी दोसी पीरागज
११०१/-	श्री सौ गुणमाला देवी ध प श्री रामजी जैन दिल्ली
११०१/-	श्री जवाहर लाल जी हजारी मल जी सराफ दाहौद (गुजरात)
११०१/-	श्री जैन युवा फडरेशन द्वारा श्री जीवधर जी सिंगतकर चद्रपुर (महाराष्ट्र)
२००१/-	श्री देवेन्द्र कुमरा जी हेमचद्र सर्राफ सहारनपुर
११०१/-	श्री प्रेम श्री बाई पत्नी स्व श्री नीलकान्त जी द्वारा रवि प्रकाश जी भोपाल
११०१/-	श्री सुशीला देवी पत्नी स्व परमेष्ठी दास जी उज्जैन की स्मृति मे सुपुत्री सौ. अजना रवि प्रकाश जी जैन भोपाल
११०१/-	श्री विजया देवेन्द्रप्पा ललित कूट दावनगेरे (कर्नाटक)
११०१/-	सौ रश्मि ध प श्री सजय कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/-	सौ कुम देवी ध. प श्री रमेश चद्र जी जैन फिरोजाबाद
११०१/-	सौ सरोजदेवी ध प डा सुरेश चद्र जी जैन व्रज विहार गाजियाबाद
५१०१/-	श्री पू. कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली
२१०१/-	श्री सौ पुष्पा बेन ध प श्री कान्ति भाई मोटाणी मुम्बई
११०१/-	श्री विलास बेन ध प श्री भूपत भाई शाह मुम्बई
११०१/-	सौ. शकरी बाई ध. प. तारादच शाह तलोद (एस आर)
११०१/-	चि पूजा, चि पियूष, सुपुत्र सौ वैशाली जीवधर जी सिगतकर उर्जानगर चद्र (महाराष्ट्र)
२१०१/-	श्रीमती सितारा बाई ध. प. स्व. कोमल चद्र जी समैया माधोगज विदिशा

सहायक सदस्य सूची

,०१/-	श्री रजनी कान्त शाह मलाड (मुबई)

ॐ

श्री कर्म दहन विधान

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

ओङ्कारंभक्ति संयुक्तं नित्यंध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ओङ्काराय नमो नमः ॥



अरहंता असरीरा आइरियासहउवज्झया मुणिणो ।
पढमक्खरणिप्पण्णो ओंकारो पंचपरमेट्ठी ॥

ॐ

श्री कर्म दहन विधान

मंगल कलश



मंगल कलश विश्व मगलमय। शुद्ध आत्मा शाश्वत शिवमय ॥
आत्म ज्ञान ही है मंगलमय। स्वानुभूति उत्तम मंगलमय ॥

निश्चय गति तो दो ही है प्रभु एक सिद्ध गति एक निगोद।
शेष चार गति दो सहस्र सागर तक कर ले मोद प्रमोद॥

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री· सिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्र मुकुटप्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वत्तपाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरूवः कुर्वन्तु ते मगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्य मखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीति विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥

ये सर्वेषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये
ये चाष्टाँग महानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः।

अगर सिद्ध गति नहीं मिली तो गति निगोद तो निश्चत है ।
जाग जाग रे अभी जाग, रे भूल न करना किंचित है ॥

पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वरा:,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृत: कुर्वन्तु ते मगलम् ।।५।।

कैलासे वृषभस्य निवृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपते: सम्मेदशैलेंऽर्हताम्।
शेषाणमपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनय: प्रसिद्धविभवा: कुर्वन्तु ते मंगलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरो कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्याशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा: कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।७।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जात: परिनिष्क्रमेण विभवो य: केवलज्ञानभाक्।
य: कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सभावित: स्वर्गिभि:
कल्याणानि च तानि पच सतत कुर्वन्तु ते मगलम् ।।८।।

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यमपत्पद,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थकराणा मुखात्
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धमार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

जिनेन्द्र स्तुति

छंद-गीतिका

अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किये ।
पुण्य सम्यक् ज्ञान के प्रभु आपने मुझको दिये ॥
सदाचारी आचरण हे प्रभु सिखाया आपने ।
धर्म श्रावक तथा मुनि का बताया प्रभु आपने ॥
आपका उपकार स्वामी भूल सकता हू नही ।
मिला सत्पथ अब कुपथ पर कभी जा सकता नहीं ॥
शरण पाकर आपकी मै तत्त्व निर्णय करूँगा ।
नाथ समकित प्राप्त करके मोह भ्रम तम्र हरूँगा ॥
आज उर अम्बुज सहज जिन रवि किरण पाकर खिला।
जिन बिम्ब दर्शन का सुफल हे नाथ अब मुझको मिला॥

अभिषेक स्तुति

मैंने प्रभु के चरण पखारे ।

जनम जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे ॥१॥
प्रासुक जल के कलश श्री जिन प्रतिमा ऊपर ढारे ।
वीतराग अरिहत देव के गूंजे जय जय कारे ॥२॥
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे ।
पावन तन मन नयन भये सब दूर भये अंधियारे ॥३॥

करलो जिनवर की पूजन

करलो जिनवर की पूजन, आई पावन घड़ी।
आई पावन घड़ी मन भावन घड़ी।।१।।
दुर्लभ यह मानव तन पाकर, करलो जिन गुणगान।
गुण अनन्त सिद्धों का सुमिरण, करके बनो महान।।करलो.।।२।।
ज्ञानावरण, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय।
आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय, आठों कर्म नशाय।।करलो.।।३।।
धन्य धन्य सिद्धों की महिमा, नाश किया संसार।
निज स्वभाव से शिवपद पाया, अनुपम अगम अपार।।करलो.।।४।।
रत्नत्रय की तरणी चढ़कर चलो मोक्ष के द्वार।
शुद्धातम का ध्यान लगाओ हो जाओ भवपार।।करलो.।।५।।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
अरिहंतों को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वंदन।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन।।१।।
और लोक के सर्वसाधुओं को है विनय सहित वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी प्रभु को बार-बार मेरा वन्दन।।२।।
ॐ ह्रीं श्री अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपामि।
मंगल चार, चार हैं उत्तम चार शरण में जाऊ मैं।
मन वच काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊ मैं।।३।।
श्री अरिहंत देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल।।४।।
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम।।५।।
श्री अरिहंत शरण में जाऊ, सिद्ध शरण में मैं जाऊ।
साधु शरण में जाऊ, केवलि कथित धर्मशरणा पाऊ।।६।।

ॐ ह्रीं नमो अर्हते स्वाहा पुष्पांजलि क्षिपामि।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
जिन गृह में जिन प्रतिमा सम्मुख सहस्त्रनाम को नमन करूँ।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन, सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं नि ।

जल गंधाक्षत, पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ धरूँ।
जिन गृह में जिनराज पंच कल्याणक पाँचों नमन करूँ।।

ॐ ह्रीं जिन पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य करुँ।
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम जिन बिम्बों को नमन करूँ।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य संबंधी कृत्रिम, अकृत्रिम जिनालय जिन बिम्बेभ्यो अर्घ्यं ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ करूँ।
जिन गृह में सर्वज्ञ दिव्यध्वनि जिनवाणी को नमन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ करूँ।
जिन गृह में पाँचों परमेष्ठी के चरणों में नमन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठीभ्यो अर्घ्य ।

स्वस्ति मंगल

मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुन्दकुन्द मुनि मंगल जैन धर्म सुखकर।।१।।
मंगलमय श्री ऋषभदेव प्रभु मंगलमय श्री अजित जिनेश।
मंगलमय श्री संभव जिनवर मंगल अभिनंदन परमेश।।२।।
मंगलमय श्री सुमति जिनोत्तम मंगल पद्मनाथ सर्वेश।
मंगलमय सुपार्श्व जिन स्वामी मंगल चन्द्रप्रभु चन्द्रेश।।३।।
मंगलमय श्री पुष्पदंत प्रभु, मंगल शीतलनाथ सुरेश।
मंगलमय श्रेयांसनाथ जिन मंगल वासुपूज्य पूज्येश।।४।।
मंगलमय श्री विमलनाथ विभु, मंगल अनन्तनाथ महेश।
मंगलमय श्री धर्मनाथ जिन मंगल शांतिनाथ चक्रेश।।५।।
मंगल कुन्थुनाथ जिन मंगल मंगल श्री अरनाथ गुणेश।
मंगलमय श्री मल्लिनाथ प्रभु मंगल मुनिसुव्रत सत्येश।।६।।
मंगलमय नमिनाथ जिनेश्वर मंगल नेमिनाथ योगेश।
मंगलमय श्री पार्श्वनाथ प्रभु, मंगल वर्धमान तीर्थेश।।७।।
मंगलमय अरिहंत महाप्रभु, मंगल सर्व सिद्ध लोकेश।
मंगलमय आचार्य श्री जय मंगल उपाध्याय ज्ञानेश।।८।।
मंगलमय श्री सर्वसाधुगण , मंगल जिनवाणी उपदेश।
मंगलमय सीमन्धर आदिक, विद्यमान जिन बीस परेश।।९।।
मंगलमय त्रैलोक्य जिनालय, मंगल जिन प्रतिमा भव्येश।
मंगलमय त्रिकाल चौबीसी, मंगल समवशरण सविशेष।।१०।।
मंगल पंचमेरु जिन मंदिर, मंगल नन्दीश्वर द्वीपेश।
मंगल सोलह कारण दशलक्षण, रत्नत्रय व्रत भव्येश।।११।।
मंगल सहस्त्र कूट चैत्यालय मंगल मानस्तम्भ हमेश।
मंगलमय केवलि श्रुतकेवलि मंगल ऋद्धिधारि विद्येश।।१२।।
मंगलमय पांचों कल्याणक, मंगल जिन शासन उद्देश।
मंगलमय निर्वाण भूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष।।१३।।
सर्व सिद्धि मंगल के दाता हरो अमंगल हे विश्वेश।
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊं तब तक पूजूं हे ब्रह्मेश।।१४।।

पुष्पांजलि क्षिपामि

सदाचार की पृष्ठ भूमि पर पावन क्षमा सुतरु फलता ।
अहिंसादि पांचों व्रत की भावना सहित श्रावक चलता ॥

ॐ

श्री कर्म दहन विधान

मंगलाचरण

अनुष्टुप

मंगलं सिद्ध परमेष्ठी मगलं तीर्थंकरम् ।
मगलं शुद्ध चैतन्य आत्म धर्मोस्तु मंगलम् ॥
मगल शुद्ध ज्ञानाय तत्त्व निर्णय मंगलम् ।
मंगलं सर्व सर्वज्ञ आत्म निर्णय मंगलम् ॥

दोहा

जयति पचपरमेष्ठी जिन प्रतिमा जिन धाम ।
जय जगदम्बे दिव्य ध्वनि श्री जिन धर्म प्रणाम ॥
मॉ जिनवाणी की कृपा मझे मिले दिनरात ।
भेदज्ञान बल प्राप्त कर पाऊ समकित प्रात ॥

चामर

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञान रूप मंगलम् ।
गणधरादि सर्व साधु ध्यान रूप मगलम् ॥
आत्म धर्म विश्व धर्म सार्व धर्म मगलम् ।
वस्तु का स्वभाव ही अनाद्यनत मगलम् ॥
कर्म दहन की सुवधि कर्म वसु क्षयकरम् ।
कर्म दहन यह विधान श्रेष्ठ मंगलकरम् ॥

पीठिका

कर्म क्षय की सुविधि दर्शक कर्मदहन विधान है ।
सुविधि होते ही क्रियान्वित कर्म का अवसान है ॥

पीठिका

एक मात्र निर्ग्रंथ पंथ ही है उपाय भव अंत का ।
इसके द्वारा एक दिवस मिल जाता पद अरहंत का ॥

कर्म जड पुद्गल अचेतन भव दुखो का मूल हैं ।
शुद्ध निज चैतन्य के तो ये महा प्रतिकूल हैं ॥
इन्हीं के क्षय हेतु मैं अब शरण मे आया प्रभो ।
प्रकृति इनकी नाश करने को तुम्हें ध्याया विभो ॥
मनुज भव उत्तम मिला है मिली जिनवर भक्ति भी ।
मिला समकित का सुअवसर तथा सयम शक्ति भी ॥
ध्यान ज्वाला मे करूगा दहन आठो कर्म को ।
सिद्ध पद निष्कर्म पाऊ पाप्त कर सद्धर्म को ॥
दो मुझे आशीष पावन पूज्य श्री जिनवर महान ।
कर्म दहन विधान करके करू पहिले आत्म भान ॥

हरिगीत

नाश ज्ञानावरण ज्ञान अनत निज प्रगटाऊगा ।
नाश दर्शन आवरण सुअनत दर्शन पाऊगा ॥
वेदनीय विनाश अव्याबाधी सुख मै पाऊगा ।
मोहनीय विनाश कर मै वीर्य गुण प्रगटाऊँगा ॥
आयु कर्म विनाश गुण अवगाहनत्व सुपाऊगा ।
नाम कर्म विनाश गुण अगुरुलघुत्व सुपाऊगा ॥
गोत्र कर्म विनाश गुण सूक्ष्मत्व हे प्रभु पाऊगा ।
अतराय विनाश गुण सम्यक्त्व क्षायिक पाऊगा ॥
अष्ट कर्म विनाश हे प्रभु गुण अनत प्रगट करू ।
आत्म ज्ञान प्रकाश पा ससार सर्व विघट करू ॥

सोरठा

कर्म सर्व दुखरूप मूल प्रकृतियां आठ है ।
इक शत अडतालीस उत्तर प्रकृति प्रसिद्ध है ॥

परभावो मे जिया बहुत अब शुद्ध भाव मे ही जीले ।
एक बार बस एक बार तू शुद्ध भाव रस ही पीले ॥

कर्म घातिया चार आत्मा के गुण घातते ।
हैं अघातिया चार मुक्ति सौख्य बाधक सदा ॥
कर्म घाति है चार पहिला ज्ञानावरण है ।
इसका ही तो भ्रात द्वितिय दर्शनावरण है ॥
भव विभ्रम का मूल मोहनीय है तीसरा ।
शिव सुख बाधक पूर्ण अतराय चौथा गिनो ॥
अरु अघातिया चार पहिला आयु प्रसिद्ध है ।
द्वितिय कर्म है नाम तृतिय गात्र पहचानिए ॥
भवमय दुख सुख रूप वेदनीय चौथा सुनो ।
ये ही आठो कर्म त्वरित दहन के योग्य है ॥

ताटक

घाति कर्म की सैतालीस प्रकृति करती घातक उत्पात ।
अघातिया की इकशत एक प्रकृति से रुकता मुक्ति प्रभात॥
पहिले घाति कर्म क्षय करना फिर अघातिया क्षय करना।
दोनो को क्षय करके ही तुम मुक्ति प्रभात प्राप्त करना ॥

वीरछंद

कर्मो की उत्कृष्ट स्थिति को अव तुम जानो भली प्रकार।
ऐसी स्थिति नही बधे फिर इसका ही तुम करो विचार ॥
ज्ञानावरण कर्म की उत्कृष्ट कोडा कोडी सागर तीस ।
कर्म दर्शनावरणी की है कोडा कोडी सागर तीस ॥
वेदनीय कर्म की स्थिति कोडा कोडी सागर तीस ।
अतराय की उत्कृष्ट स्थिति कोडा कोडी सागर तीस ॥
नाम कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कोडा कोडी सागर बीस ।
गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कोडा कोडी सागर बीस ॥

आनंदकंद चैतन्य चंद्र निर्मल अबध देदीप्यमान ।
त्रैकालिक ध्रुव निज आत्मतत्त्व तनदेवल में है विद्यमान॥

आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तुम तैतीस सागर लो जान।
मोहनीय की सत्तर कोडा कोडी सागर स्थिति मान ॥
अब कर्मो की जघन्य स्थिति भी जानो तुम भली प्रकार।
उन्हें नहीं बधती है जो करते देते हैं इनका संहार ॥
जैसे नाम कर्म का होता वैसा ही बंधता अनुभाग ।
स्थिति तदनुसार बंधती है जैसा भी होता है राग ॥

रोला

है अन्तमुहूर्त्त कर्म ज्ञानावरणी की ।
है अन्तमुहूर्त्त कर्म दर्शनावरणी की ॥
मोहनीय की है अन्तमूहूर्त्त यह जानो ।
वेदनीय की है बारह मुहूर्त्त पहचानो ॥
आयु कर्म की भी अन्तमुहूर्त्त पहचानो ।
अन्तराय की भी अन्तमुहूर्त्त तुम जानो ॥
नाम कर्म की केवल आठ मुहूरत जानो ।
गोत्र कर्म की केवल आठ महूरत मानो ॥
जैसा हो परिणाम बध वैसा होताहै ।
जघन्य या उत्कृष्ट मध्य बध होता है ॥
कौन कौन सी प्रकृति बधी वह प्रकृति बंध है ।
आत्म प्रदेशो मे बधना वह प्रदेश बध है ॥
कितनी स्थिति बधी वही स्थिति बध है ।
कितना रस बल बधा वही अनुभाग बध है ॥
नाना कर्म उदय को ही विपाक कहते है ।
इस विपाक को ही अनुभाग बध कहते हैं ॥

अनुकूल तथा प्रतिकूल संयोगों में होता है दुखी सुखी ।
संयोगी भावों मे रहकर होता सदैव तू महादुखी ॥

स्थिति पूरी होते ही सविपाक निर्जरा ।
स्थिति के पहिले होती अविपाक निर्जरा ॥
कर्मो के नामानुसार अनुभाग बध है ।
भाव द्रव्य आस्रव से ही यह कर्म बध है ॥
शुभ परिणामों से शुभ प्रकृति अधिक बधती है ।
उसके सग अशुभ प्रकृत्ति आकर बधती है ॥
अशुभ भाव से अशुभ प्रकृति अधिक बधती है ।
उसके संग मे शुभ प्रकृति अल्प बधती है ॥

दोहा

ज्ञानावरणी ढक रहा है अनादि से ज्ञान ।
पाच प्रकृति इस कर्म की नाशक निज भगवान ॥
कर्म दर्शनावरणी को दर्शन बाधक मान ।
इसकी कुल नौ प्रकृतिया क्षय करते भगवान ॥
वेदनीय इस कर्म की निज सुख बाधक मान ।
इसकी दोनो प्रकृतिया क्षय करते गुणवान ॥
मोहनीय सम्यक्त्व मे पूरा बाधक मान ।
नाश योग्य है प्रकृतिया अट्ठाईस प्रधान ॥
आयु कर्म से बध है चहुंगति का पहचान ।
प्रकृति चार के नाश से हो जाते भगवान ॥
नाम कर्म जड देहप्रद सर्व दुखों की खान ।
है तिरानवे प्रकृतिया नाश योग्य लो जान ॥
गोत्र कर्म को जानिए ऊंच नीच है काज ।
इसकी भी दो प्रकृतिया क्षय करते मुनिराज ॥

पीठिका

सप्त भयों से सदा रहित होते है सम्यक् दृष्टि निशक ।
दृढ विश्वास आत्मा का है अत नहीं है कर्म कलक ॥

दान लाभ भोगगादि मे बाधक है अतराय ।
प्रकृति पाच इस कर्म की क्षय करते मुनिराय ॥
कर्म प्रकृतिया मूल वसु ये ही भव तरु मूल ।
इकशत अडतालीस हे उत्तर प्रकृति जु शूल ॥
चार घातिया नाशते श्री अरहत महान ।
चार अघाति विनाशते श्री सिद्ध भगवान ॥
अष्ट कर्म को नाश कर हुए सिद्ध भगवत ।
त्रिलोकाग्र के शीर्ष पर सदा सतत जयवत ॥

वीरछद

मूल बध का कर्म वृक्ष है जिसमे चार घाति दृढ मूल ।
सग बध करता अघातिया भी जो है निज के प्रतिकूल ॥
इन्हे नष्ट करने का श्रम ही सर्वोत्तम श्रम कहलाता ।
केवल निश्चय श्रमण साधु ही इन्हे नष्ट है कर पाता ॥
पहिले घाति कर्म क्षय करता सर्व कषाय भाव क्षय कर।
फिर अघातिया क्षय करता है सकल योग पूरे जयकर ॥
हो जाती निष्कर्म अवस्था कर्मजयी बन जाता है ।
द्रव्य भाव नो कर्म नाशकर कर्म रहित हो जाता है ॥
जो अघातिया क्षय करने का पहिले करते व्यर्थ उपाय ।
वही घातिया कर्मो के बधन पाते है बहु दुखदाय ॥
उलटी ही गिनती गिनता है करता है सब औंध काम ।
कर्म नही क्षय कर पाता है पाता है सदैव दुखधाम ॥
सीधी गिनती गिने अगर तो घाति कर्म क्षय हो जाता ।
फिर अघातिया भी क्षय होते फिर न लौट वापस आता॥

द्वादशांग श्रुतज्ञान सुफल है आत्म ज्ञान ही महा महान ।
आत्म ज्ञान फल निज अनुभव है निज अनुभव ही मोक्ष प्रधान॥

पहिले दर्शन मोह जीतना सम्यक् दर्शन प्रगटाना ।
फिर चारित्र मोह जीतना निज अरहंत दशा पाना ॥
यही सुविधि है मोक्षमार्ग की इसका ही पालन करना ।
मत बहकावे मे तुम आना पहिले घाति नाश करना ॥
नही समझना यह मिथ्यात्व अकिंचित्कर तुम पलभर भी।
जैसे भी हो यह मिथ्यात्वतिमिर क्षय करना मरकर भी ॥
इसे अकिंचित्कर कहने वाले तो है बहु भोले प्राणी ।
इसे अकिंचित्कर न मानना कभी भूलकर हे प्राणी ॥
व्रत लेने का अगर भाव हो तो पहिले समकित लेना ।
फिर व्रत लेना बडे भाव से कर्मो को क्षय कर देना ॥
बिन सम्यक् दर्शन के यदि व्रत लोगे तो यह तुम जानो।
त्रस पर्याय व्यर्थ जाएगी आगम का कहना मानो ॥

गीतिका

दो मुझे आशीष जिनवर करू मै पूजन महान ।
कर्म दहन विधान करके करू पहिले आत्म भान ॥
कर्म आठों ध्वस्त कर दू नाथ ऐसी शक्ति दो ।
धर्म रत्नत्रय परम की सतत पावन भक्ति दो ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्य मत्र- ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण

भजन

जितने गुण हैं आप में उतने मुझ में नाथ ।
फिर कैसे बतलाइये रहू आप के साथ ॥
रहूं आपके साथ मिलेगा क्या बतलाओ ।
शरण आपकी पाऊं स्वामी क्यों जतलाओ ॥
भवदधि बीच मोह से पाए हैं दुख कितने ।
मात्र आपने ही बतलाया सागर जितने ॥

स्याद्वाद रूपी जिनवाणी में जो करते सदा रमण ।
चिरमिथ्यात्वभाव हट जाता उनका पलभर में तत्क्षण ॥

ॐ

पूजन क्रमांक १

श्री सिद्ध पूजन

स्थापना

ताटंक

हे सिद्ध तुम्हारे वन्दन से उर मे निर्मलता आती है ।
भव भव के पातक कटते हैं पुण्यावलि शीश झुकाती है॥
तुम गुण चिन्तन से सहज देव होता स्वभाव का भान मुझे।
है सिद्ध समान स्वपद मेरा हो जाता निर्मल ज्ञान मुझे ॥
इसलिये नाथ पूजन करता कब तुम समान मै बन जाऊँ।
जिस पथ पर चल तुम सिद्ध हुए मै भी चल सिद्ध स्वपद पाऊ॥
ज्ञानावरणादिक अष्टकर्म को नष्ट करू ऐसा बल दो ।
निज अष्ट स्वगुण प्रगटे मुझमे सम्यक् पूजन का यह फल हो॥

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ स्थापन ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्म मलिन हू जन्म जरा मृतु को कैसे कर पाऊँ क्षय ।
निर्मल आत्म ज्ञान जल दो प्रभु जन्म मृत्यु पर पाऊं जय॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनत गुणधाम ।
नित्य निरजन भवदुख भजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्ध सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

शीतल चदन ताप मिटाता किन्तु नही मिटता भव ताप ।
निज स्वभाव का चदन दो प्रभु मिटे राग का सब सताप॥

एक ज्ञान के ही प्रताप से होता स्वपर भेद विज्ञान ।
पर द्रव्यों से भिन्न मूर्ति चैतन्य धातु निर्मित निज जान ॥

अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनंत गुणधाम ।
नित्य निरजंन भवदुख भंजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्ध सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चदन नि. ।

उलझा हूं ससार चक्र में कैसे इससे हो उद्धार ।
अक्षय तन्दुल रत्नत्रय दो हो जाऊ भव सागर पार ॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनंत गुणधाम ।
नित्य निरजन भवदुख भजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्री णमो सिद्ध सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

काम व्यथा से मैं घायल हूं कैसे करूं काम मद नाश ।
विमल दृष्टि दो ज्ञान पुष्प दो कामभाव हो पूर्ण विनाश ॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनंत गुणधाम ।
नित्य निरजन भवदुख भंजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्री णमो सिद्ध सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधारोग के कारण मेरा तृप्त नही हो पाया मन ।
शुद्ध भाव नैवेद्य मुझे दो सफल करूँ प्रभु यह जीवन ॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनत गुणधाम ।
नित्य निरजन भवदुख भंजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्री णमो सिद्ध सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

मोह रूप मिथ्यात्व महातम अन्तर मे छाया घनघोर ।
ज्ञान द्वीप प्रज्वलित करो प्रभु प्रकटे समकित रवि का भोर॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनत गुणधाम ।
नित्य निरजन भवदुख भंजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्री णमो सिद्ध सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

कर्म शत्रु निज सुख के घाता इनको कैसे नष्ट करू ।
शुद्ध धूप दो ध्यान अग्नि मे इन्हें जला भव कष्ट हरूँ ॥

तत्त्वज्ञान में अनभ्यस्त है परभावों में है अभ्यस्त ।
निज स्वरूप को भूल स्वयं ही है संसार भाव से त्रस्त ॥

अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनंत गुणधाम ।
नित्य निरजंनं भवदुख भजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्ध सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

निज चैतन्य स्वरूप न जाना कैसे निज मे आऊँगा ।
भेदज्ञान फल दो हे स्वामी स्वयं मोक्षफल पाऊगा ॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनंत गुणधाम ।
नित्य निरजन भवदुख भजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥
ॐ ह्री णमो सिद्ध सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिने महामोक्ष फल प्राप्ताये फल नि ।

अष्ट द्रव्य का अर्घ चढाऊँ अष्टकर्म का हो संहार ।
निज अनर्घ पद पाऊ भगवन सादि अनत परम सुखकार॥
अजर अमर अविकल अविकारी अविनाशी अनत गुणधाम ।
नित्य निरजंन भवदुख भजन ज्ञानस्वभावी सिद्ध प्रणाम॥
ॐ ह्री णमो सिद्ध सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं नि. ।

जयमाला

मुक्तिकन्त भगवन्त सिद्ध को मन वच काया सहित प्रणाम।
अर्ध चन्द्र सम सिद्ध शिला पर आप विराजे आठों याम॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीय अन्तराय मिटा ।
चार घातिया नष्ट हुए तो फिर अरहन्त रूप प्रगटा ॥
वेदनीय अरु आयु नाम अरु गोत्र कर्म का नाश किया ।
चऊ अघातिया नाश किये तो स्वंय स्वरूप प्रकाश लिया॥
अष्टकर्म पर विजय प्राप्त कर अष्ट स्वगुण तुमने पाये।
जन्म मृत्यु का नाश किया निज सिद्ध स्वरूप स्वगुण भाये॥
निज स्वभाव मे लीन विमल चैतन्य स्वरूप अरुपी हो ।
पूर्ण ज्ञान हो पूर्ण सुखी हो पूर्ण बली चिद्रूपी हो ॥

अंतर दृष्टि पूर्वक जो सेवन करता चैतन्य स्वभाव ।
ब्रह्मानंद समुद्र प्राप्त कर क्षय कर देता सकल विभाव ॥

वीतराग हो सर्व हितैषी राग द्वेष का नाम नहीं ।
चिदानन्द चैतन्य स्वभावी कृतकृत्य कुछ काम नहीं ॥
स्वयं सिद्ध हो स्वयं बुद्ध हो स्वयं श्रेष्ठ समकित आगार।
गुण अनन्त दर्शन के स्वामी तुम अनंत गुण के भंडार ॥
तुम अनन्त बल के हो धारी ज्ञान अनन्तान्त अपार ।
बाधा रहित सूक्ष्म हो भगवन् अगुरुलघु अवगाह उदार॥
सिद्ध स्वगुण के वर्णन तक की मुझ मे प्रभुवर शक्ति नहीं।
चलूं तुम्हारे पथ पर स्वामी ऐसी भी तो भक्ति नहीं ॥
देव तुम्हारा पूजन करके हृदय कमल मुसकाया है ।
भक्ति भाव उर में जागा है मेरा मन हर्षाया है ॥
तुम गुण का चिन्तवन करे जो स्वयं सिद्ध बन जाता है।
हो निजात्म मे लीन दुखों से छुटकारा पा जाता है ॥
अविनश्वर अविकारी सुखमय सिद्ध स्वरूप विमल मेरा।
मुझमे है मुझसे ही प्रगटेगा स्वरूप अविकल मेरा ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं नि स्वाहा ।

शुद्ध स्वभावी आत्मा निश्चय सिद्ध स्वरूप ।
गुण अनन्तयुत ज्ञानमय है त्रिकाल शिवभूप ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः ।

गीत

ज्ञानगुण गाए जा । निज मे समाएजा ।
शिव पथ तो दूर नही चरण बढाए जा ॥
लेकर स्वभाव बल, हरदे विभाव दल ।
मुक्ति के शीर्ष पर निज को चढाए जा ॥

ध्रुव स्वभाव के लक्ष्य मात्र से वीतराग बन जाता है ।
व्यय उत्पाद लक्ष्य में हो तो राग द्वेष से नाता है ॥

ॐ

पूजन क्रमांक २

श्री अरहंत पूजन

स्थापना

छंद रोला

वीतराग अरहंत महा प्रभुओं को वंदन ।
घाति कर्म नाशक सर्वज्ञो का अभिनंदन ॥
छयालीस गुण धारी दोष अठारह विरहित ।
त्रेसठ कर्म प्रकृति के हर्त्ता त्रिभुवन वंदित ॥
विनय भाव पूर्वक पूजन करता हू स्वामी ।
मैं भी चार घातिया नाशूं अतर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री श्री अरहत जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री श्री अरहत जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद चौपई आंचली बद्ध

सम्यक् जल लाऊं अविकार। हरूँ सकल वेदना विकार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊ सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखे नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

सम्यक् चंदन भरी सुगंध। भव ज्वर का हर लेती द्वंद ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
श्री अरहत जिनेश महान। पाऊं सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

अटका रहता है विभाव में सदा स्वभावों से रह दूर ।
चारों गतियों में भ्रमता है कर्म नहीं कर सकता चूर ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय संसारतार विनाशनाय चदनं नि. ।

उज्ज्व अक्षत भाव पवित्र। अक्षय पद दाता सुपवित्र ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊ सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

चिन्मय पुष्प मान शिवकार। कामव्यथा नाशक सुखकार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊं सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखे नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्री श्री अरहंत जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

अनुभव रस मय सुचरु अनूप। क्षुधा वेदनीय हर चिद्रूप।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊं सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

भेदज्ञान का दीप प्रजाल। मोह तिमिर नाशूं तत्काल ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊं सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्री श्री अरहत जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि. ।

ध्यान धूप की अग्नि महान करती कर्मो का अवसान ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊं सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

आश्रव के जालों में फँसकर भव बंधन में बँधता है ।
संवर भाव नहीं जग पाता भव कारा में रहता है ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

शुक्ल ध्यान के फल का स्वाद मोक्ष स्वफल दाता अविवाद ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊ सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

अर्घ्य स्वगुण मय लाऊं नाथ पद अनर्घ्य का पाऊ साथ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
श्री अरहंत जिनेश महान। पाऊ सम्यक् दर्शन ज्ञान ।
देखें नाथ परम सुख हो। पूजे नाथ महा सुख हो ॥

ॐ ह्री श्री अरहत जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

जयमाला

मत्त सवैया

मै वीतराग अरहत ध्यान मुद्रा को करता हू प्रणाम ।
तुम पूर्ण अनत चतुष्टय के स्वामी निज मे करते विराम॥
सर्वज्ञ दशा प्रगटी पावन दर्पण वत झलका सकल ज्ञेय।
हो चुके विभावी भाव नष्ट है सिद्ध स्वपद ही परम श्रेय॥
गुण शक्ति अनतानत पूर्ण प्रकटी है आकर के स्वमेव ।
हे निर्निमेष अष्टादश दोषो से विहीन न सर्वज्ञ देव ॥
जीवत शक्तियॉ आज मुख्य प्रगटी है सैतालीस महान ।
पाया अनत शक्तियॉ युक्त अपना पावन उज्ज्वल विहान॥
अब नहीं विकारी माया है है नहीं कही भी कुछ प्रपंच ।
उज्ज्वल प्रकाश निज पाया है जैसे होता सुप्रभाव मंच ॥
चऊ कर्म उपाधि विनष्ट हुई पाई निर्मल उत्तम समाधि।
अब कहीं शेष अणु भर न रही ससारी बाधा की उपाधि॥

जो सुदृष्टि है वही जीव करता है निज में सदा निवास।
इष्ट अनिष्ट समान जानकर इनसे रहता सदा उदास ॥

परिपूर्ण सौख्य सागर उछला निर्मल स्वभाव हो गया व्याप्त ।
बन गए त्रिलकी नाथ आप हो गए क्षणिक में पूज्य आप्त॥
नन्हा सा ज्ञानांकुर पल में बन गया महातरु मुख्य आज।
आयी है परिणय की वेला सज मुक्ति वधू आयी स्वराज॥
चहुं ओर दिशा चारों में ही आयी आनंदाममृत बहार ।
अब तो अघाति भी क्षय करके पाएंगे प्रभु संसार पार ॥
तरुणायी से उर ओत प्रोत संचार शक्तियां है अनुपम ।
पाया अदभुत सौन्दर्य प्रखर मिट गया सकल जग का विभ्रम॥
रत्नत्रय की ही दशा पूर्ण करती है सौख्य नीर सिचन ।
दैदीप्यमान आलोक प्राप्त प्रभु तुमने जीत लिया त्रिभुवन॥
मैं भी तुव पथ पर आ जाऊ यह निश्चय आज किया मैंने।
आनद अतीन्द्रिय की छाया तुव चरणो में देखी मैंने ॥
अध्यात्म भावना हे स्वामी अब मेरे अतर में भर दो ।
मेरे मन प्रागण की बगिया हो उठे हरी ऐसा कर दो ॥
आत्मोत्पन्न शिव सुख सागर मेरे उर मे भी लहराए ।
अनुभव रस का पावन विशाल सागर मेरे उर मे आए ॥
भव रूप स्वयभूरमण उदधि सम मोह नाश जल्दी जीतू।
हिमगिरि के उच्च शिखर सम प्रभु रागो की ज्वाला से रीतू ॥
इसलिए नाथ की है पूजन मै ज्ञाता दृष्टा हो जाऊ ।
मैं भी प्रभु त्रेसठ प्रकृति नाश अरहत दशा निज प्रगटाऊं॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

आशीर्वाद

सोरठा

श्री अरहत महान भेदज्ञान विज्ञान दो ।
पाऊं सौख्य महान यही विनय है हे प्रभो ॥

इत्याशीर्वाद :

पाप पुण्य की लहरावलियों से तू गया स्वयं को भूल ।
ज्ञान उदधि की सलिल तरंगों में आनंद पूर्वक झूल ॥

ॐ

पूजन क्रमांक ३

श्री कर्म दहन पूजन

स्थापना

ताटंक

श्री सिद्ध प्रभु को मै पूजूॅ घाति अघाति कर्म नाशक ।
श्री अरिहंत देव को पूजूॅ चार घातिया के घातक ॥
सर्व साधुओं के पद पूजूॅ मोक्षमार्ग के जो साधक ।
श्री सर्वज्ञ प्रणीत धर्म को पूजूॅ जो शिव सुखदायक ॥
यही चार मगल हैं जग मे यही चार उत्तम जग मे ।
इन चारो की शरण प्राप्त कर आऊ नाथ मोक्ष मग मे ॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी वेदनीय अरु मोह प्रबल ।
आयु नाम अरु गोत्र और हैं अंतराय वसु कर्म सबल ॥
इनकी सगति कर अनादि से भटक रहा निज रूप बिसार।
कर्म दहन पूजन करके मै दूर करू कर्मो का भार ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टकर्म विध्वसक श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री अष्टकर्म विध्वसक श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अष्टकर्म विध्वसक श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

आत्म ज्ञान रूपी जल पीकर ज्ञानावरणी नाश करू ।
नष्ट करूं सम्पूर्ण मलिनता ज्ञान अनन्त प्रकाश करू ॥
निर्मल भाव जगे मन मेरे इसीलिए जल लाया हूॅ ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण में आया हूॅ ॥

जब वैराग्य विलास धर्मकी महिमा उर में आती है ।
राग द्वेष मोहादि विकारी दशा बदल ही जाती है ॥

ॐ ह्री श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शन आवरणी के कारण भटक रहा हूं मैं संसार ।
निज दर्शन से इसको क्षय कर लूं अनंतदर्शन अविकार॥
जिन वचनों का शीतल चन्दन पाने को मैं आया हूँ ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण मे आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने ससांरताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

वेदनीय के उदय जनित सुखदुख से मैं पीडित हूँ नाथ।
इसे नष्ट कर प्रभु मैं पाऊ अव्यावाधी सुख का साथ ॥
परमोज्ज्वल अक्षय पद पाऊं अत शुभाक्षत लाया हूँ ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण मे आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शन अरु चारित्र मोह ने सदा दिया मुझको धोका ।
स्वय भूल से कामरूप हो शील लक्ष्मी को रोका ॥
मोह कर्म हर सुख अनंत हित भाव पुष्प मैं लाया हूं ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण मे आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामति स्वाहा ।

आयु कर्म के कारण अवगाहन गुण प्रगट न हुआ कभी।
देव मनुज पशु नर्क आदि में क्षुधारोग दुख सहे सभी ॥
आयु कर्म क्षय का निश्चय ले भावों के चरु लाया हूँ ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण में आया हूँ ॥

अरे विलक्षण चेतन अब तो तज दे तू इस जग की रीत।
सुखाभास की मृग मरीचिका समझ न कर भव दुख से प्रीत ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम कर्म से शरीर रचना हुई सदा चारों गति में ।
सूक्ष्मत्व गुण पाने का अब भाव जगा मेरी मति में ॥
नाम कर्म युत तन विनष्ट करने को दीपक लाया हूं ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण में आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

गोत्र कर्म का उदय सदा ही ऊंच नीच कुल देता है ।
अगुरुलघुत्व स्वगुण पाने की बुद्धि सतत हर लेता है ॥
गोत्र कर्म के नाश हेतु मैं भाव धूप प्रभु लाया हूं ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण में आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्तराय के बधभाव से शक्ति अनन्त न प्रगट हुई ।
फलस्वरूप निज मोक्ष भवन की बाधा कभी न विघट हुई॥
अंतराय के सर्वनाश हित भावों के फल लाया हूं ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण मे आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त ज्ञान गुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा ।

ये आठों ही कर्म शत्रु निश्चित अनर्घ पद बाधक हैं ।
क्षय हित सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रवीर्यतप साधक हैं ॥
शुभ उपयोग रूप परिणति तो मेरी हुई अनन्तो बार ।
अब शुद्धोपयोग परिणति पाने का आया मुझे विचार ॥

लौकिक और अलौकिक सुख में केवल इतना अंतर है।
एक अनंत दुखों का घर है दूजा शिवसुख सागर है ॥

वसु कर्मो के नाश हेतु मैं अर्घ संजोकर लाया हूं ।
कर्म दहन करने को स्वामी चरण शरण में आया हूं ॥

ॐ ह्री श्री निश्चयवेण अनन्तगुण व्यवहारनयेण अष्टगुण सम्पन्न श्री सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्यावलि

तीन शतक छत्तीस भेदयुत मतिज्ञानावरणी नाशू ।
भाव द्रव्य युत ज्ञानावरणी प्रकृति पूर्णत. मैं नाशू ॥
. देशावधि सर्वावधि परमावधि त्रंय अवधि विनाश करू ।
ऋजुमति विपुल मन पर्यय ज्ञानावरणी का त्रास हरूँ ॥
केवल ज्ञानावरण नाश कर पांचों प्रकृति विनाश करू ।
ज्ञानावरणी कर्म पूर्ण हर ज्ञानअनन्त प्रकाश करूं ॥

ॐ ह्री पचप्रकार ज्ञानावरणी कर्म दहनाय अनत ज्ञान गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वहा ।

चक्षु अचक्षु अवधि केवल दर्शन आवरणी क्षय कर लूं ।
निद्रा निद्रा निद्रा प्रचला प्रचला प्रचला को हर लू ॥
अरु स्त्यानगृद्धि सह दुखमय ये नौ प्रकृति नाश आऊँ ।
दर्शन आवरणी विनाश कर गुण अनंत दर्शन पाऊं ॥

ॐ ह्री नव प्रकार दर्शनावरण कर्म दहनाय अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

वेदनीय दो साता और असाता प्रकृति अभाव करू ।
गुण अव्याबाधत्व प्राप्त कर निज सिद्धत्व स्वभाव वरू ॥

ॐ ह्री विकार वेदनीय कर्म दहनाय अव्याबाधत्व गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमम्ठने अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहनीय की अट्ठाईस प्रकृतियो को कर डालू क्षार ।
क्रोध मान माया व लोभ की चार कषाय महादुखकार ॥

विविध कर्म या पर स्वरूप से सदाभिन्न है तेरा रूप ।
आत्म ब्रह्म अविकारी अविकल तीन लोक में श्रेष्ठ अनूप॥

अनन्तानुबंधी की चतु: अप्रत्यख्यानावरणी चार ।
हास्यअरतिरति शोक जुगुप्साभय स्त्री पुरुष नपुंसक वेद॥
सोलह नौ पच्चीस बिनाशूं दूँ चारित्र मोह को छेद ।
मैं मिथ्यात्व प्रकृति को नाशूं करूं अभाव मिश्र मिथ्यात्व॥
सम्यक् मोह सहित तीनों ही प्रकृति नष्ट कर लू सम्यक्त्व॥
मोह कर्म सम्राट जीतने दर्श मोह जीतूं तत्काल ।
सुख अनत सम्यक्त्व स्वगुण पा लूं अरहंत दशा सुवशिल ॥

ॐ ह्री अष्टविंशति प्रकार मोहनीह कर्म दहनाय क्षायिक सम्यक्त्व अनन्त सुख गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् नि ।

आयु कर्म की चार प्रकृतिया देव मनुष्य नरक त्रियँच ।
चारों हर अवगाहन गुण प्रगटाऊँ भव रज रहे न रच ॥

ॐ ह्री चतु प्रकार आयु कर्म दहनाय अवगाहनत्व गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।

नाम कर्म की तिरानवे हैं प्रकृति सभी का करूं विनाश ।
सूक्ष्मत्व गुण को प्रगटाऊ पाऊं सिद्धपुरी का वास ॥
नरक, त्रियँच मनुज सुर गतिहर चौगत्यानुपूर्वीहर ।
औदारिक वैक्रियक अहारक तैजसकार्माणतनहर ॥
ये पांचों बधन प्रभु नाशू ये पांचो सघात हरूं ।
एकेन्द्रिय द्वय त्रय चतु पचेन्द्रिय कुजाति का घात करू॥
औदारिक वैक्रियक अहारक अगोपांग तीन को नाश ।
शुभ अरु अशुभ विहायोगति का भी मैं स्वामी करूं विनाश॥
वज्र वृषभनाराच संहनन करू वज्रनाराच विचूर्ण ।
अरु नाराच अर्धनाराच रु सृपाटिका कीलक छह चूर्ण ॥
सम चतुरस्त्र स्वातिवामन, कुब्जक न्यग्रोध परिमंडल।
हुडक संस्थान छह नाशूं निज स्वभाव का ले सबल ॥

तृष्णारूपी नदी पार करने को अब हो जा तैयार ।
लोभजयी संतोषामृत रस पीकर हो जा इसके पार ॥

शीत ऊष्ण,मृदु,कठोर,लघु,गुरु,रूक्ष,स्निग्धस्पर्श की अष्ट ।
आम्ल मिष्ट कटु तिक्त कषायी पांचों रसकीप्रकृतिविनष्ट॥
अरुण श्वेत अरुपीत हरित अरु कृष्णवर्ण की पांच प्रकृति।
प्रकृति गध की द्वय दुर्गंध सुगंध हरूं प्रभु दो सन्मति ॥
पैसठ पिंड प्रकृतिये नाशूं पहुचूँ तीन लोक के शीष ।
अट्ठाईस अपिड विनाशूँ मैं विदेह बन जाऊं ईश ॥
अगुरु लघु उपघात स्वास परघात और आतप उद्योत ।
अरु निर्माण, प्रकृति तीर्थङ्कर नाशूं लूँ सिद्धों की ज्योत॥
प्रभु पर्याप्ति अर्प्याप्त प्रत्येक और साधारण त्रस ।
थावर बादर सूक्ष्म सुस्वर दु.स्वर शुभनाम प्रकृति हर बस॥
अशुभ नाम स्थिर अस्थिर आदेय अनादेय को भेद ।
दुर्भग सुभग अयशकीर्ति अरुयश. कीर्ति तीर्थंकर छेद ॥
ये तिरानवे प्रकृति विनाशू सिद्ध बनूं सिद्धालय में ।
नाम कर्म के सभी सुभट हरने आऊ निज आलय मे ॥

ॐ ह्री त्रयधिकनवति नामकर्म दहनाय सूक्ष्मत्वगुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् नि स्वाहा ।

गोत्र कर्म की ऊंच नीच दो प्रकृति अभाव करूं स्वामी ।
अगुरु लघुत्व स्वगुण प्रगटाऊ यह बल दो अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्री द्विप्रकार गोत्र कर्म दहनाय अगुरुलघुत्व गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् नि स्वाहा ।

दान लाभ भोगोपभोग वीर्यान्तराय का द्वंद हरूं ।
अतराय की पाच प्रकृति हर वीर्य अनत सुप्रगट करूं ॥

ॐ ह्रीं पचप्रकार अतराय कर्मदहनाय अनन्तवीर्य गुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् नि स्वाहा ।

मोह जनित सारी उपाधियाँ निज समाधि में बाधक हैं ।
आत्म ज्ञान बिन क्रियाकान्ड सब लेश न सुख में साधक हैं ॥

महाअर्घ्य

वसु कर्मों की एक शतक अरु अडतालीस प्रकृति हर लूँ।
अष्ट स्वगुण मैं पाऊं स्वामी गुण अनंत प्रगटित कर लूं॥
कर्म दहन करने को स्वामी बन जाऊँ मुनि निर्ग्रंथेश।
सिद्ध स्वपद पाऊं मैं अपना एकमात्र है यह उद्देश ॥

ॐ ह्री अनत गुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने महाअर्घ्य नि ।

जयमाला

ताटंक

ले जिन धर्म शरण मुनि बन सम्यक् पथ तुमने अपनाया।
सत्तावन प्रकार आश्रव का भाव नहीं उर मे आया ॥
सत्तावन प्रकार सवर पूर्वक निज गुण गाया तुमने ।
गुण श्रेणी निर्जरा प्राप्त कर निज स्वरूप पाया तुमने ॥
घात पाच ज्ञानावरणी दर्शनआवरणी की नौ नाश ।
मोहनीय की अट्ठाइस हर, अन्तराय की पाच विनाश ॥
घाति कर्म की ये सैंतालिस अघातिया की सोलह हर ।
श्री अरिहंत दशा प्रगटाई त्रेसठ कर्म प्रकृति क्षयकर ॥
नरक, त्रियच देव आयु हर गति तिर्यंच नरक को नाश।
नरक त्रियंच गत्यानुपूर्वी एकेन्द्रिय थावर सुविनाश ॥
द्वय त्रय चौइन्द्रिय विकलत्रय साधारण सूक्ष्म कर नष्ट।
आतप अरु उद्योग सहित सोलह अघाति की प्रकृति विनष्ट॥
फिर तेरहवे गुणस्थान मे निजानद रसलीन हुए ।
चौदहवे में आते ही प्रभु जिन अयोग केवली हुए ॥
प्रथम समय मे नाश बहात्तर अतिम मे तेरहनाशी ।
ये अघाति पिच्चासी क्षयकर हुए सिद्ध शिव अविनाशी ॥

साधु तथा श्रावक के दोनो बाह्य वेश शिव मार्ग नहीं ।
निश्चय रत्नत्रय पाए बिन मोक्षमार्ग है नही कही ॥

जा पहुंचे लोकाग्र शिखर पर सादि अनंत मोक्ष पाया ।
मै भी सिद्धस्वपद पाने को चरण शरण में प्रभु आया ॥
मै भी तुवपथ पर चलकर प्रभु वीतरागता को पाऊ ।
ध्यान अग्नि मे कर्मदग्धकर पूर्ण सिद्ध प्रभु बन जाऊ ॥
जीव विपाकी प्रकृति अठत्तर पुद्गल की बासठ सहार ।
भव विपाकी चार नाशकर क्षेत्र विपाकी नाशू चार ॥
पुण्य प्रकृतिया अडसठ है अरु एक शतक है पाप स्वरूप।
इनमे वर्णादिक की बीस प्रकृतिया होती दोनो रूप ॥
प्रकृति प्रदेश स्थिति बध अनुभाग बध का करू अभाव।
द्रव्य भाव नो कर्म रहित हो पाऊ शाश्वत शुद्ध स्वभाव॥
गुणस्थान मिथ्यात्व प्रथम मे एक शतक सत्रह का बध ।
दूजे सासादन मे होता एक शतक व एक का बध ॥
मिश्र तीसरे गुणस्थान मे प्रकृति चौहत्तर का हो बध ।
चौथे अविरत गुणस्थान मे प्रकृति सतत्तर का हो बध ॥
पचम देशविरत मे होता सडसठ कर्म प्रकृति का बध ।
गुणस्थान षष्ठम प्रमत्त मे त्रेसठ कर्म प्रकृति का बध ॥
सप्तम अप्रमत्त मे होता अडसठ कर्म प्रकृति का बध ।
अष्टम अपूर्वकरण मे हो अट्ठावन कर्म प्रकृति का बध ॥
नौ अनिवृत्तिकरण मे होता है बाईस प्रकृति का बध ।
दसवे सूक्ष्म सापराय मे सतरह कर्म प्रकृति का बध ॥
ग्यारहवे उपशात मोह मे एक प्रकृति साता का बध ।
क्षीण मोह बारहवे मे है एक प्रकृति साता का बंध ॥
है सयोग केवली त्रयोदश एक प्रकृति साता का बध ।
है अयोग केवली चतुर्दश किसी प्रकृति का कोई न बध॥

पर भावों का प्रेत भयंकर करता आया तुझको भ्रष्ट ।
मूलभूल के कारण ही तू पाता आया है भव कष्ट ॥

आत्म प्रदेशों मे जल पय सम कर्म व्याप्त हो जाते हैं ।
आबाधा स्वकाल के पीछे वही उदय में आते हैं ॥
अष्टम गुण स्थान में उपशम क्षपक श्रेणि होती प्रारंभ ।
उपशम नौ दश ग्यारह तक है नव दश बारह क्षायकरम्य॥
अविरत गुण स्थान चौथे में होता सात प्रकृति का क्षय ।
पचम षष्टम सप्तम में होता है तीन प्रकृति का क्षय ॥
नवमे गुण स्थान मे होता है छत्तीस प्रकृति का क्षय ।
दसवे गुण स्थान मे होता केवल एक प्रकृति का क्षय ॥
क्षीण मोह बारहवें मे हो सोलह कर्म प्रकृति का क्षय ।
चौदहवे मे शेष प्रकृति पिच्चासी का होता है क्षय ॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी वेदनीय अतराय उत्कृष्ट ।
बध तीस कोडाकोडी सागर का एक समय मे दृष्ट ॥
मोहनीय की तो यह सत्तर कोडा कोड़ी सागर की है ।
आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तो तैसीस सागर की है ॥
नाम कर्म की कोडाकोडी सागर बीस स्थिति अत्कृष्ट ।
गोत्र कर्म अरु अन्तराय की भी इतनी स्थिति उत्कृष्ट ॥
एक समय के भावो से इतनी स्थिति बध सकती है ।
थिति जघन्य अन्तमुहूर्त्त या कुछ मुहूर्त्त बध सकती है ॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी वेदनीय आयु अतराय।
मोहनीय की जघन्य स्थिति अन्तमुहूर्त्त की दुखदाय ॥
नाम कर्म अरु गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त्त।
वेदनीय की जघन्य स्थिति है केवल बारह मुहूर्त्त ॥
ऐसा स्थिति बंध विनाशूँ निज स्वभाव साधन द्वारा ।
बधे हुए जो कर्म शेष हैं हरू निर्जरा के द्वारा ॥

मुक्ति गगन पाना है तो तू ज्ञानगगन से नाता जोड़ ।
भेद ज्ञान की शक्ति प्राप्त कर परभावों से तू मुख मोड़॥

अंत:कोडाकोडी की स्थिति हो तो समकित होता ।
स्थिति अगर अधिक हो तो फिर कभी नहीं समकित होता॥
कर्म प्रकृतिया असख्यात हैं मुख्य एक सौ अडतालीस ।
इन सबकी सत्ता विनाश कर तुम सम बन जाऊं जगदीश॥
आत्म दृष्टि बनकर हे जिनवर कर्म सृष्टि कर दू सहार।
मोक्ष सृष्टि के लिए करूं मैं अनुभव रस की वृष्टि अपार॥

ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशत प्रकृति रूप अष्टकर्म दहनाय अनन्तगुण प्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यम् नि स्वाहा ।

आशीर्वाद

दोहा

कर्म दहन पूजन करू मन वच काय सवार ।
अष्ट कर्म सब दग्धकर हो जाऊ भवपार ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं अष्टकर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः

भजन

मैने शुद्ध आत्मा की देखी आज नगरी ।
मैने अपने निकट पायी शिव डगरी ॥
ज्ञान गु मयी ज्ञान ज्योति से भीर,
शक्तिया अनतनत इसमे खरी,
भव पथ पर रुके मेरे पगरी ॥ मैंने ॥
शुद्ध भावना की बेल हो गई हरी,
टूटी तरणी भी भवदधि से तरी,
हुआ ज्ञान का प्रकाश जगमग री ॥ मैने ॥

बाह्य आचरणमयी महाव्रत या अणुव्रत हम किसे कहें ।
बिन समकित के सभी शून्य हैं कब तक भव के कष्ट सहें॥

ॐ

पूजन क्रमांक ४

श्री कर्म दहन विधान

समुच्चय पूजन

कर्माष्टक को नष्ट कर जीव हुए जो सिद्ध ।
उन सबको वन्दन प्रथम करू विधान प्रसिद्ध ॥

छंद रोला

कर्म दहन करने का भाव ह्रदय मे जागा ।
भव तन भोगो के प्रतिराग भाव अब भागा ॥
केवल आवश्यक है मुझको ध्यान अग्नि की ।
अब न् सही जाती है पीडा कर्म अग्नि की ॥
धर्म ध्यान या शुक्ल ध्यान की ज्योति जगाऊ ।
ईधन वत ध्यानाग्नि बीच वसु कर्म जलाऊ ॥
इसीलिए तुव चरणो मे आया हू स्वामी ।
कर्म दहन पावन विधान करता हू नामी ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री अष्ट कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री अष्ट कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद विजया

त्रिविध रोग क्षय का सुअवसर मिला है ।
मनुज भव जिनागम जिनेश्वर का वन्दन ॥

पर द्रव्यों की चिन्ता ही है कर्मबंध करने वाली ।
आत्म द्रव्य की चिन्ता ही है कर्म बध हरने वाली ॥

मिला नीर सम्यक् स्वभावी निराला ।
हरूंगा सुनिश्चित मैं कर्मो के बंधन ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरतर ।
दहन कर्म आठों करूं ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

भवाताप नाशक स्वचदन अनूठा ।
मेरी आत्मा के ही भीतर भरा है ॥
मै हू ज्ञान दर्शन स्वभावी शिवम् मय ।
मेरा आत्मा तो अरूपी खरा है ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरतर ।
दहन कर्म आठों करू ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

मिले है स्वअक्षत अखडित समुज्ज्वल ।
मुझे शुद्ध भावो के अक्षत मनोहर ॥
यही तो प्रदायक हैं अक्षय स्वपद के ।
यही तो हैं सर्वोच्च मेरी धरोहर ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरंतर ।
दहन कर्म आठों करूं ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

दु:खित क्लेशित परिणामों से होते पाप कर्म के बंध ।
अरु विशुद्ध परिणामों से होते हैं पुण्य कर्म के बंध ॥

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

मिले काम नाशक कुसुम ज्ञानशाली ।
महाशील गुण से ये भूषित हैं सारे ॥
इन्हीं की प्रचुर गध जागी हृदय में ।
न अब शेष परिणाम दूषित हैं कारे ॥
करूॅ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरंतर ।
दहन कर्म आठो करू ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधा ज्वाल से मैं झुलसता रहा हूॅ ।
क्षुधा व्याधि नाशक सुचरु अब मिले है ॥
परम तृप्ति दायक स्वभावी सुगुण अब ।
जिनेश्वर कृपा से हृदय मे झिले हैं ॥
करूॅ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरतर ।
दहन कर्म आठो करू ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

मिला ज्ञान दीपक महामोहतम हर ।
मिटा सर्व सशय नि शकित हुआ हू ॥
मिलेगी मुझे ज्ञान कैवल्य निधि अब ।
सदा को ही निश्चित्त अब मै हुआ हूॅ ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरंतर ।
दहन कर्म आठों करू ऐसा बल दो ॥

प्रामाणिक बनकर विशुद्ध भावों से करो जगत का काम।
किन्तु न पल भर कभी भूलना अपना शाश्वत निज ध्रुवधाम ॥

परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

मिला है सुअवसर परम ध्यान का अब ।
जलाऊंगा कर्मो का मैं काष्ठ सारा ॥
नहीं कोई रह पाएगा कर्म शुभ भी ।
यही शुद्ध निश्चय हृदय में है धारा ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरंतर ।
दहन कर्म आठों करूं ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

परम शुद्ध भावों का फल पाऊंगा मैं ।
महामोक्ष तरु फल मिलेगा स्वयं ही ॥
मुझे मुक्ति रमणी वरण झट करेगी ।
मिलेगा स्वपद शाश्वत ध्रुव स्वयं ही ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरतर ।
दहन कर्म आठों करू ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्य मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

बनाऊ गुणों के सहज अर्घ्य उत्तम ।
नही कोई बाधक बनेगा कभी भी ॥
मिलेगी स्वपदवी अनर्घ्य निराली ।
न लौटूंगा संसार मैं अब कभी भी ॥

इस युग में तो स्वाध्याय ही श्रेष्ठ परम तप कहलाता ।
क्रियाकान्ड का भार व्यर्थ जो परभावो में बहलाता ॥

प्रभो घातिया क्षीण पहिले करूंगा ।
स्व पुरुषार्थ से मोह का नाश करके ॥
करूंगा अघाति को निष्प्राण पल में ।
निजानंद पाऊंगा निज ध्यान धर के ॥
करूँ ध्यान अपना ही हे प्रभु निरंतर ।
दहन कर्म आठो करूं ऐसा बल दो ॥
परम शुद्ध दो ध्यान शुद्धात्मा का ।
प्रभो शुद्ध समरस स्वभावी विमल दो ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

महाअर्घ्य

वीरछंद

ज्ञानावरण कर्म के क्षय से होता ज्ञान अनत महान ।
कर्म दर्शनावरण नाश हो तो अनंत दर्शन गतिवान ॥
वेदनीय के अभाव से अव्याबाधी सुख मिले प्रधान ।
मोहनीय के अभाव से होता सम्यक्त्व स्वमहिमावान ॥
आयु कर्म के अभाव से हो अवगाहन गुण श्रेष्ठ महान ।
नाम कर्म के अभाव से हो सूक्ष्मत्व गुण श्रेष्ठ प्रधान ॥
गोत्र कर्म के अभाव से हो अगुरुलघुत्व स्वगुण गतिमान।
अतराय के अभाव से हो वीर्य अनंत महाबलवान ॥
अष्टकर्म के अभाव से ही मिलती सिद्ध स्वपद की शान।
नित्य निरजन निज पद मिलता मिल जाता शाश्वत निर्वाण ॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू पाऊ सम्यक् ज्ञान ।
निज चारित्र प्रकाश कर पाऊ पद निर्वाण ॥

दृश्य जगत में जो पदार्थ हैं सारे ही संयोगाधीन ।
उनका भी वियोग होता है जो रहते तेरे आधीन ॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यों महाअर्घ्यं नि '।

जयमाला

छंद मानव

भव सागर जल खारा है अब तक न कभी भी जाना ।
अनुभव रस जल मीठा है पीकर मैंने पहचाना ॥
भव सागर पूर्ण सुखाऊं ऐसा ही कुछ करना है ।
चारों गतियों के कष्टो को हे प्रभु अब हरना है ॥
समता ही परम सहेली मेरे वैराग्य भाव की ।
महिमा मुझको भायी अब अपने ही निज स्वभाव की ॥
शिवपथ पर अब आने में मुझको सकोच नहीं है ।
मैंने शिवपथ पाया है भीतर कुछ मोच नही है ॥
मै ज्ञानशरीरी चेतन दर्शन स्वरूप अपना है ।
अब तो ससार पुराना हो चला पूर्ण सपना है ॥
अब अष्टकर्म जय करने का ही उपाय करना है ।
भव भाव घोर दुख कारण अपने बल से हरना है ॥

ॐ ह्री अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यों जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

आशीर्वाद

दोहा

अष्टकर्म प्रभु क्षय करूँ पाऊ पद निर्वाण ।
अपने ही बल से करूं मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वाद :

अब अनादि मिथ्यात्व भाव को निर्मम होकर नष्ट करो।
कर्मो की श्रृंखला तोड़कर भव सागर के कष्ट हरो ॥

ॐ

पूजन क्रमांक ५

ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत देव पूजन

स्थापना

दोहा

ज्ञानावरणी कर्म के नाशक श्री अरहत ।
केवलज्ञान महान के धारक श्री भगवत ॥
ज्ञानावरण विनाश कर पाऊं केवल ज्ञान ।
विनय सहित पूजन करूं करूं आत्म कल्याण ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषद् ।
ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।
ॐ ह्री ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद सार (जोहीरास)

जन्म जरा मृत्यु क्षय करने को नाथ शरण में आया ।
ज्ञान अनतानंत प्राप्ति का दृढ निश्चय उर भाया ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतो को वन्दन ।
पाच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी जिनेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

भवाताप ज्वर की पीडा से कष्ट अनत उठाया ।
भवज्वरनाशक शीतल चदन भावमयी मैं लाया ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पांच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

अनुभव रस की निर्मल गंगा की धारा आई है पास ।
तज विभाव के दुख समुद्र को जिसपर है झूठा विश्वास॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन नि. ।

अक्षत जीवन क्षत है मेरा अक्षय पद कब पाऊ ।
भव सागर से तर जाने को अक्षत शालि चढ़ाऊं ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पांच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी जिनेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

कामबाण की पीडा नाशूं पुष्प मनोज्ञ चढ़ाऊँ ।
अविकारी भावों को पाकर महाशील गुण पाऊ ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पांच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी जिनेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधारोग विध्वस हेतु मैं शुभ नैवेद्य चढाऊ ।
मै तो नाथ अनाहारी हूँ अनुपम पद प्रगटाऊ ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पांच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

महामोहतम ध्वस करूँ मैं दीप ज्ञान के लाऊ ।
युगपत लोकालोक सुझलके केवल ज्ञान उपाऊ ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पांच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

मोक्ष पंथ को करो ग्रहण फिर पाप पंक में मत आना ।
पुण्य पंथ में भी न अटकना आगे ही बढते जाना ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी जिनेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

अष्टकर्म विध्वसक पावन धूप ध्यान मय लाऊं ।
गुण अनंत प्रगटाने को पद नित्य निरंजन पाऊं ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहतों को वन्दन ।
पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी जिनेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

महामोक्ष फल पाने का ही निश्चय उर में लाऊ ।
यह संसार अभाव करू मै महामोक्ष फल पाऊ ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी जिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

नाथ अनर्घ्य स्वपद प्रगटाऊ यही भाव उर लाऊं ।
भव अटवी को ध्वस करूँ मै अर्घ्य अपूर्व बनाऊ ॥
ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अरहंतों को वन्दन ।
पांच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ज्ञान सूर्य अभिनन्दन ॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी जिनेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

अर्घ्यावलि

चन्द्रायण

(१)

१ ॐ ह्री मतिज्ञानावरणकर्मरहितानंतज्ञानस्वरूपाय नम ।

ज्ञानानंदोऽहम् ।

इच्छारूपी अग्नि दाह से मूर्छित मन को त्वरित सभाल।
आत्म ज्ञान रूपी परमामृत जल से सिंचित कर तत्काल॥

छंद चन्द्रायण

मति ज्ञानावरणी बाधक मतिज्ञान में ।
मति ज्ञानावरणी नाशूंगा ध्यान मे ॥
ज्ञानावरणी पांच प्रकृतिया क्षय करू ।
ज्ञानावरणी कर्म आज मै जय करूं ॥१॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(२)

२ ॐ ह्री श्रुतज्ञानावरणकर्मरहितानतज्ञानस्वरूपाय नम ।

अवबोधसौधस्वरूपोऽहम् ।

श्रुत ज्ञानावरणी बाधक श्रुत ज्ञान मे ।
श्रुत ज्ञानावरणी नाशूंगा ध्यान मे ॥
ज्ञानावरणी पाच प्रकृतिया क्षय करू ।
ज्ञानावरणी कर्म आज मै जय करू ॥२॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(३)

३ ॐ ह्री अवधिज्ञानावरणकर्मरहितानतज्ञानस्वरूपाय नम ।

ज्ञानमंदिरोऽहम् ।

अवधि ज्ञान आवरण जुबाधक ज्ञान मे ।
अवधि ज्ञान आवरण विनाशू ध्यान मे ॥
ज्ञानावरणी पांच प्रकृतियां क्षय करू ।
ज्ञानावरणी कर्म आज मै जय करू ॥३॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(४)

४ ॐ ह्री मन पर्ययज्ञानावरणकर्मरहितानतज्ञानस्वरूपाय नम ।

ज्ञानार्णवोऽहम् ।

ध्यान अग्नि में अष्ट कर्म रूपी कलंक को कर दे नष्ट।
सहज सिद्ध सुख का भोक्ता बन होगा फिर न कभी भव कष्ट॥

मन पर्यय आवरण प्रकृति बाधक सदा ।
इसका क्षय कर पाऊं ज्ञान महा सदा ॥
ज्ञानावरणी पांच प्रकृतियां क्षय करूं ।
ज्ञानावरणी कर्म आज मैं जय करूं ॥४॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(५)

५ ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरणकर्मरहितानंतज्ञानस्वरूपाय नम ।

विज्ञानघनस्वरूपोऽहम् ।

केवल ज्ञानावरण ज्ञान बाधक महा ।
इसे नाश दूं पाऊं केवल रवि महा ॥
ज्ञानावरणी पांच प्रकृतियां क्षय करू ।
ज्ञानावरणी कर्म आज मैं जय करूं ॥५॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि ।

दोहा

पाचो प्रकृति विनाश कर पाऊ केवल ज्ञान ।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान पा पाऊ स्वपद महान ॥

पुष्पांजलि

महाअर्घ्य

छंद ताटंक

ज्ञान समुच्चय महिमा हो तो ज्ञान ह्रदय मे लहराता ।
ज्ञान भावना पूर्वक चेतन स्याद्वाद ध्वज फहराता ॥
ज्ञान भाव बिन भव दुख तरु की छाया मे पलता आया।
कभी न सम्यक् दर्शन पाया अत न निज को सुलझाता॥
जिसने सम्यक् ज्ञान शक्ति का किया अवतरण अतर मे।
वही आत्मा निज पुरुषार्थ शक्ति से सिद्ध स्वपद पाता ॥

तू अनादि से करता आया है परिणमन सदैव अशुद्ध ।
द्रव्य दृष्टि से तो तेरा स्वभाव है पूर्ण बुद्ध ध्रुव शुद्ध ॥

पाखंडों के भवन गिराने का उपाय करता है ज्ञान ।
रूढिवाद के पर्वत ढाने का उपाय भी यह पाता ॥
क्रिया कान्ड के आडबर से दूर त्वरित हो जाता है ।
मुक्ति प्राप्ति का सतत यत्न भी यह निज अतंर में लाता॥
मोक्ष मार्ग पर चलने का उद्यम पवित्र करता है ज्ञान ।
अष्टकर्म को जय करता है पूर्णानद सौख्य पाता ॥
ज्ञानावरणी कर्म नाश करने में है पूरा सक्षम ।
यही ज्ञान कैवल्य ज्ञान युत मोक्ष सौख्य उर में लाता ॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू करूं आत्म कल्याण ।
ज्ञानावरणी नाश कर पाऊं केवल ज्ञान ॥

ॐ ह्री ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठि जिनेभ्यो महाअर्घ्यँ नि ।

जयमाला

छंद गीतिका

ज्ञान की जब भावना हो मनुज मिथ्या भाव हर ।
त्वरित ही सन्मार्ग पाता रुचि जगाता मनोहर ॥
असयम की भावना भी कुचल देता ज्ञान से ।
प्रमादो को नष्ट करता सावधान स्वध्यान से ॥
फिर कषाये नष्ट करता प्राप्त करता यथाख्यात ।
प्रगट कर सर्वज्ञ निज पद ज्ञान का पाता प्रभात ॥
योग क्षय का सतत उद्यम स्वत होता है अपूर्व ।
योग क्षय कर सिद्ध होता स्वपद होता ध्रुव अपूर्व ॥
सादि नतानत कालों स्वय में करता निवास ।
बिलसता है मोक्ष सुख को स्वय की पाता सुवास ॥

हे आत्मन् तू पर में भूला अपना शुद्ध स्वभाव प्रशस्त ।
परभावों का मोह गरल पी बना स्वयं ही पूर्ण अशक्त ॥

अभी जिनपथ को सुसम्यक् प्राप्त करना चाहिए ।
ज्ञान भावी भावना उर व्याप्त करना चाहिए ॥
आत्म सुख की भावना से ओतप्रोत हृदय हुआ ।
भावना भवनाशिनी का प्राप्त आज समय हुआ ॥
मोह भ्रम से रहित होकर शुद्ध जीवन जियूगा ।
शुद्ध अनुभव रस सहित निज ज्ञान रस ही पियूगा ॥
ज्ञान गुण सम्पन्न होकर रहूंगा आलोक में ।
शुद्ध बुद्ध प्रबुद्ध होकर बहूगा निज लोक में ॥
ज्ञान का आवरण क्षय कर पाऊगा कैवल्य ज्ञान ।
कर्म दहन विधान करके बनूगा सबसे महान ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

आशीर्वाद

दोहा

ज्ञानावरण विनाश से मिले स्वपद निर्वाण ।
अपने ही बल से करूँ मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वाद :

भजन

राजा मेरे ज्ञान का प्रकाश तो करो ।
भवपीर प्रभु मेरी नाश तो करो ॥
शुद्ध आत्मा से जरा बात तो करो ।
मोह रात नाश कर प्रभात तो करो ॥
सारे परभाव का विनाश तो करो ॥ राज ॥
पर्याय दृष्टि छोडो देखो निज ओर।
द्रव्यदृष्टि बन पाओ समकित भोर ॥
अपने स्वरूप का विकास तो करो ॥ राजा ॥

परम अतीन्द्रिय सुख पाने की बेला बीत रही क्षण क्षण।
इस बेला का हाथ पकड़ ले कर प्रसन्न मन का कण कण॥

ॐ

पूजन क्रमांक ६

दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत पूजन

स्थापना

रोला

श्री अरहंत देव को सादर सविनय वन्दूं ।
दर्शना आवरणी के नाशक को अभिनन्दू ॥
ज्ञान भावना भाऊं अपना ज्ञान जगाऊं ।
केवल दर्शन के बाधक भव भाव भगाऊं ॥

दोहा

भाव सहित पूजन करू करू आत्म कल्याण ।
केवल दर्शन प्राप्त कर दृष्टा बनू महान ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनं।
ॐ ह्री दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद राधिका

जन्मादि रोग त्रय नष्ट करू हे स्वामी ।
क्षीरोदधि जल लाया हूँ अन्तर्यामी ॥
अरहत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्री दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

एकबार तो शीष झुकाकर निज स्वरूप देखो अनमोल ।
साक्षात संपूर्ण परम परमात्म तत्त्व ध्रुवरूप अडोल ॥

संसार ताप क्षय करने को मैं आया ।
उत्तम मलयागिर चंदन शीतल लाया ॥
अरहंत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

अक्षय पद पाने का विवेक उर भाया ।
मैं शालि अखंडित उज्ज्वल चिन्मय लाया ॥
अरहंत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

मैं कामबाण नाशक गुण पुष्प सजाऊँ ।
मै महाशील गुण ज्ञान स्वभावी लाऊ ॥
अरहंत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि. ।

चिर क्षुधा रोग विध्वंस करूं चरु लाऊ ।
पद शीघ्र अनाहारी अपना प्रगटाऊं ॥
अरहंत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

एक अकेला है निजात्मा जन्म मरणसे रहित पदार्थ ।
शान्त स्वरूप सर्व रागादिक भावों से विरहित सत्यार्थ ॥

ध्रुव ज्ञान दीप केवल प्रकाश मयलाऊं ।
मोहान्धकार क्षय करके निज पद पाऊं ॥
अरहंत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्री दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

मै शुक्ल ध्यान की धूप चढ़ाऊं स्वामी ।
वसु कर्म नाशकर शिव पद पाऊँ नामी ॥
अरहत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

निज आत्म ध्यान कर महामोक्ष फल पाऊँ ।
फल शुक्ल ध्यान का उर अविलंब सजाऊं ॥
अरहंत देव दर्शन अनंत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्री दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

पदवी अनर्घ्य पाने प्रभु निज को ध्याऊ ।
निज गुण के अर्घ्य बनाऊ शिव सुख पाऊ ॥
अरहत देव दर्शन अनत गुणधारी ।
नौ प्रकृति दर्शनावरणी के क्षय कारी ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

पुद्‌गल का कर्त्ता पुद्‌गल है चेतन का कर्त्ता चेतन ।
अकर्तृत्व की शक्ति अनूठी हरती कर्मो के बंधन ॥

अर्घ्यावलि

दोहा

दर्शन आवरणी प्रकृति नौ को लूं पहचान ।
दर्शन गुण की प्राप्ति हित करूं शीघ्र अवसान ॥

(१)

१. ॐ ह्री चक्षुदर्शनावरणकर्मरहितानंतदर्शनस्वरूपाय नम ।

चिन्नयनस्वरूपोऽहम् ।

चक्षु दर्शनावरणी विनाशूं सम्यक् दृष्टा हो जाऊ ।
भेद दर्शनावरणी के नौ पूर्णतया प्रभु विघटाऊ ॥१॥

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि ।

(२)

२ ॐ ह्री अचक्षुदर्शनावरणकर्मरहितानतदर्शनस्वरूपाय नम ।

बोधचक्षुस्वरूपोऽहम् ।

अचक्षु दर्शनावरण विनाशू सम्यक् दृष्टा हो जाऊ ।
भेद दर्शनावरणी के नौ पूर्णतया प्रभु विघटाऊ ॥२॥

ॐ ह्री अचक्षु दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(३)

३ ॐ ह्री अवधिदर्शनावरणकर्मरहितानतदर्शनस्वरूपाय नम ।

आनंदनेत्रज्ञोऽहम् ।

अवधि दर्शनावरण विनाशू सम्यक् दृष्टा हो जाऊ ।
भेद दर्शनावरणी के नौ पूर्णतया प्रभु विघटाऊ ॥३॥

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(४)

४ ॐ ह्री केवलदर्शनावरणकर्मरहितानतदर्शनस्वरूपाय नम ।

आनंदघनस्वरूपोऽहम् ।

अनुभव गोचर मात्र आत्मा सुख स्वभाव का स्वामी है।
सर्वज्ञों सम स्वपर प्रकाशक गुण अनंत का धामी है ॥

केवल दर्शन का आवरण मिटा निज दृष्टा हो जाऊं ।
भेद दर्शनावरणी के नौ पूर्णतया प्रभु विघटाऊं ॥४॥

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि. ।

(५)

५. ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहितानतदर्शनस्वरूपाय नम ।

ब्रह्मनेत्रोऽहम् ।

दर्शन आवरणी की निद्रा प्रकृति विनाशूं सुख पाऊं ।
भेद दर्शनावरणी के नौ पूर्णतया प्रभु विघटाऊं ॥५॥

ॐ ह्रीं निद्रा प्रकृति विनाशक श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि ।

(६)

६ ॐ ह्रीं निद्रानिद्रादर्शनावरणकर्मरहितानंतदर्शनस्वरूपाय नम ।

सहजावबोधस्वरूपोऽहम् ।

निद्रानिद्रा प्रकृति विनाशूँ जाग्रत दृष्टा हो जाऊं ।
भेद दर्शनावरणी के नौ पूर्णतया प्रभु विघटाऊ ॥६॥

ॐ ह्री निद्रा निद्रा प्रकृति विनाशक श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(७)

७ ॐ ह्री प्रचलाकर्मरहितानंतदर्शनस्वरूपाय नम ।

शिवनेत्रोऽहम् ।

दर्शन आवरणी की प्रचला प्रकृति विनाशूँ निज बल से॥
भेद दर्शनावरणी के नौ नाशूँ शुद्ध आत्म बल से ॥७॥

ॐ ह्रीं प्रचला प्रकृति विनाशक श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि ।

(८)

८. ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलादर्शनावरणकर्मरहितानंतदर्शनस्वरूपाय नम ।

ज्ञाननेत्रोऽहम् ।

नय के जगल में मत भटको नयातीत हो चले चलो ।
एक आत्मा के आश्रित हो परभावों को दले चलो ॥

प्रचला प्रचला प्रकृति विनाशू पूर्ण जाग्रत रहूं सदा ।
भेद दर्शनावरणी के नौ नाशूं बनूं आत्म दृष्टा ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रचला प्रचला प्रवृत्ति विनाशक श्री अरहत देवया अर्घ्यं नि ।

(९)

९. ॐ ह्री स्त्यानगृद्धिदर्शनावरणकर्मरहितानतदर्शनस्वरूपाय नम. ।

सहजचित्स्वरूपोऽहम् ।

दर्शन आवरणी की प्रकृति स्त्यानगृद्धि पूरी नाशूं ।
भेद दर्शनावरणी के नौ नाशू निज बल प्रकाशूं ॥९॥

ॐ ह्री स्त्यानगृद्धि प्रकृति विनाशक श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि ।

वीरछंद

छद्मस्थो को पहिले दर्शन होता फिर होता है ज्ञान ।
किन्तु केवली प्रभु को होता युगपत ही दर्शन अरु ज्ञान॥
ज्ञानावरणी सदा ज्ञान गुण का बाधक है पहचानो ।
दर्शन आवरणी दर्शन गुण का बाधक है यह जानो ॥
ज्ञानावरणी दर्शन आवरणी का क्षय एक संग होता ।
अत. केवली को दर्शन अरु ज्ञान सदा युगपत होता ॥
क्योकि मन पर्यय सुज्ञान मति ज्ञान पूर्वक ही होता ।
अत मन पर्यय दर्शन आवरण कर्म भी ना होता ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

महाअर्घ्य

छंद मानव

अपना पुरुषार्थ जगाकर विधि पूर्वक शिव पथ पाऊ ।
रत्नत्रय की निधिया पा हे प्रभु पडित हो जाऊ ॥
रागादि विकारी भावो का नाम न रहने दू अब ।
अनुभव रस वर्षा रिमझिम हे प्रभु सदैव ही पाऊ ॥

सर्व विशुद्ध ज्ञान के भीतर जब प्रवेश हो जाता है ।
इसी युक्ति से साक्षात्त निज मुक्ति स्वपद मिल जाता है ॥

गुण नक्षत्रों तारों सम अन्तर्नभ चमके मेरा ।
कैवल्य ज्ञान रवि पाकर महिमामय ध्रुव द्युति पाऊं ॥
सिद्धत्व स्वगुण की आभा मेरे मस्तक पर दमके ।
त्रैलोक्य शिखर के ऊपर शाश्वत निज वैभव पाऊं ॥
दर्शन आवरणी क्षय कर दर्शन गुण निज प्रगटाऊं ।
संसार भाव सारा ही हे प्रभु अब तो विघटाऊं ॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करूं पाऊं स्वगुणमहान ।
क्षय दर्शन आवरण कर करूं आत्म कल्याण ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी विनाशनाय श्री अरहंत देवाय महाअर्घ्य नि. ।

जयमाला

गीतिका

आत्म दर्शन के बिना गुण दर्शनीय न मिलेगा ।
विमल ज्ञाता विमल दृष्टा स्वगुण पुष्प न खिलेगा ॥
आत्म शक्ति अचिन्त्य महिमावत को मेरा प्रणाम ।
प्रगट जो कर चुके उन भगवत को मेरा प्रणाम ॥
चिदानंद चिदेश का साम्राज्य है अचलित अटल ।
है अगोचर ज्ञान गोचर स्वय में रहता अचल ॥
आत्मा ही तीर्थ है शुद्धात्मा जयवत है ।
यही तो परमात्मा है यही तो भगवत है ॥
सुख स्वरूपी आत्म सागर मे उतरना चाहिए ।
आत्म भुजबल से भवोदधि शीघ्र तरना चाहिए ॥
ज्ञान पाने की कला जिनशास्त्र से मिल जाएगी ।
शान्ति पाने की कला जिन शास्त्र से झिल जाएगा ॥

निःशकित हो निर्णय कर ले तू ही शुद्ध बुद्ध ध्रुव है ।
व्यय उत्पाद रहित स्वद्रव्य है त्रैकालिक निज अनुभव है॥

आत्म की अनुभूति विधि जिन शास्त्र में मिल जाएगी ।
अनुभूति निज की शान्ति प्रद इनमें न मिलने पाएगी ॥
स्वानुभव से प्राप्त होती है सहज अनुभूति निज ।
दृष्ट होतीस्वगुण दर्शन से सहज अनुभूति निज ॥
दर्शनावरणी बिना क्षय के न होता आत्म सुख ।
रहेगा भव जाल मे ही पाएगा ससार दुख ॥
अत अपनी आत्मा का विनय से दर्शन करें ।
प्राप्त कर सम्यक्त्व वैभव सदा ही वन्दन करें ॥

ॐ ह्री दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री अरहत देवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

आशीर्वाद :

दोहा

क्षय दर्शन आवरण कर पाऊ पद निर्माण ।
अपने ही बल से करू मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वादः

गीत

शुद्ध आत्मा से जरा बात करा दो ।
मिथ्या भ्रम भूतके पिशाच हरा दो ॥
शुद्ध आत्मा के तेवरो को लू सभाल
बहिरात्मा को दू मै घर से निकाल,
अंतरात्मा को मेरी जरा जगा दो ॥ शुद्ध ॥
परमात्मा बनूगा कुछ क्षण मे
बध सारे नाशूगा मै कुछ दिन में ।
जितने विभाव हैं उन्हें तो भगा दो ॥ शुद्ध ॥

कोई कभी नहीं मरता है नही किसी का होता नाश ।
निज अस्तित्व स्वगुण के बल से तू है अजर अमर अविनाश॥

ॐ

पूजन क्रमांक ७

वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध पूजन

स्थापना

दोहा

वेदनीय का नाशकर हुए सिद्ध भगवान ।
बार बार वन्दन करूँ पाऊं पद निर्वाण ॥
भाव सहित पूजन करूं वन्दूं बारंबार ।
वेदयनीय दुख नष्ट कर पहुचूं भव के पार ॥

ॐ ह्री वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

ताटंक

जन्म जरादिक रोग विनाशक सम्यक् जल प्रभु लाया हूँ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणों मे आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्याबाधी सुख गुण पाऊ नाश करू भव का फेरा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

भवाताप नाशक समकित चदन हे प्रभु मै लाया हूं ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणो में आया हू ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्याबाधी सुख गुण पाऊं नाश करूं भव का फेरा ॥

तू चलते फिरते मुरदे के संग व्यर्थ में भटक रहा ।
इसमें ही मूर्छित होकर तू जिय अनादि से अटक रहा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

अक्षय पद पाने को हे प्रभु सम्यक् अक्षत लाया हूँ ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणो में आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊ नाश करू भव का फेरा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि. ।

कामबाण की पीड़ा क्षय हित पुष्प शील मय लाया हूँ ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणो में आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊं नाश करूं भव का फेरा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधारोग विध्वसक हे प्रभु सम्यक् चरु मैं लाया हूँ ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणों मे आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊं नाश करूं भव का फेरा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

मोह तिमिर क्षय करने को प्रभु ज्ञान दीप निज लाया हूँ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणो में आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धो को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊ नाश करूं भव का फेरा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि.।

अष्ट कर्म क्षय हेतु महा प्रभु ध्यान धूप निज लाया हूँ ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणों में आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊं नाश करूं भव का फेरा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

पर्यायें प्रति समय बदलतीं द्रव्य शाश्वत रहता है ।
क्यों पर्यायों में मोहित हो भवभावों में बहता है ॥

महामोक्ष फल पाने को प्रभु शुक्ल ध्यान फल लाया हूं ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणों में आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊं नाश करूं भव का फेरा ॥

ॐ ह्री वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो महामोक्ष फल प्राप्ताय फल नि.।

पद अनर्घ्य पाने को स्वामी अर्घ्य ज्ञान मय लाया हूँ ।
वेदनीय दो प्रकृति नाश हित प्रभु चरणों में आया हूं ॥
वेदनीय के नाशक सिद्धों को सादर वन्दन मेरा ।
अव्यावाधी सुख गुण पाऊ नाश करूं भव का फेरा ॥

ॐ ह्री वेदनीय कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभयो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि. ।

अर्घ्यावलि

दोहा

वेदनीय दो प्रकृतियां करूं शीघ्र अवसान ।
अव्यावाधी सौख्य पा पाऊं स्वपद महान ॥

ताटंक

(१)

१ ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्मरहितानंद स्वरूपाय नम. ।

शाश्वतानंदोऽहम् ।

वेदनीय की साता प्रकृति शुभास्रव से बंध जाती है ।
कुछ दिन तक साता देती है फिर विलीन हो जाती है ॥
वेदनीय की प्रकृति विनाशू अव्यावाधी सुख पाऊ ।
सिद्ध दशा परिपूर्ण प्रगट कर परम शान्ति सुख प्रभु पाऊं॥१॥

ॐ ह्रीं साता प्रकृति विनाशक श्री सिद्ध भगवंताय अर्घ्य नि ।

(२)

२. ॐ ह्रीं असाता वेदनीयकर्मरहितरहितानंदस्वरूपाय नम ।

आनंदधामोऽहम् ।

अनुकंपा संवेग प्रशम आस्तिक्य सुगुण का धारी बन ।
अपनी आत्मा की प्रतीति कर शिवपद पा अविकारी बन॥

प्रकृति असाता वेदनीय की अशुभास्रवसे बंध जाती ।
भव अटवी में अटकाती है घोर वेदना उपजाती ॥
वेदनीय की प्रकृति विनाशूं अव्यावाधी सुख पाऊ ।
सिद्ध दशा परिपूर्ण प्रगट कर परम शान्ति सुख प्रभु पाऊं॥२॥

ॐ ह्नी साता प्रकृति विनाशक श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

महाअर्घ्य

छंद मत्त सवैया

आए हो चेतन शिव पथ पर जानो स्वद्रव्य ध्रुव निजमन से ।
तुमको अब भेद विज्ञान हुआ मिथ्यात्व तजा है इस क्षण से ॥
हे ज्ञान तरंगो तुम बोलो कब तक तुम संग दोगी मेरा ।
यह जड पुद्‌गल तन दुखमय है बदबू आती है कण कण से ॥
अब तक दुख की लहरें पायी सुख पाया नहीं एक पल भी ।
अब सुख का अवसर आया है तुमको जाना अन्तर्मन से॥
भवदधि में सुख दुख की लहरें आस्रव को जाग्रत रखती हैं ।
तुमने पायी अब संवर निधि अब बहक न जाना जीवन से ॥
श्रद्धा न स्वयं का दृढ करना तुम बहक न जाना अब पर में।
तुम दर्शन ज्ञान स्वरूपी हो निर्णय करना निश्चय मन से॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करूं करू विभाव अभाव ।
वेदनीय को क्षय करूं वेदन करूं स्वभाव ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत देवाय महाअर्घ्यं नि ।

जयमाला

छंद चौपायी

वेदनीय की सही वेदना, यह अनादि की भव विडबना ।
भाऊ प्रतिपल आत्म भावना, क्षय मे हो प्रभु अब विलंबना॥

निश्चय है सामन्य द्रव्य अरु है पर्याय भेद व्यवहार ।
द्रव्याश्रय ही शिव सुख दाता पर्यायाश्रित है संसार ॥

मैं अपना ही ज्ञान सजाऊं, भेदज्ञान की बीन बजाऊं ।
ज्ञान भावना नित प्रति भाऊं, मिथ्यादर्शन को विघटाऊ॥
स्वपर विवेक ह्रदय में लाऊं, सम्यक् दर्शन उर प्रगटाऊं।
परम शान्ति का सागर पाऊं, महिमाशाली निज को ध्याऊं॥
करूँ आत्मा का अवलोकन, जो सम्पूर्णतया आनदघन ।
पर्यायों से दृष्टि हटाऊँ, द्रव्य दृष्टि हे प्रभु बन जाऊ ॥
आत्मोन्नति के मूल मंत्र को, मोक्ष प्राप्ति के महामंत्र को।
नाथ कभी मैं भूल न जाऊँ, निज स्वभाव स्वामी बन जाऊं॥
सयम की फुलवारी महके, अन्तरात्मा निज मे चहके ।
अनुभव रस की महिमा गाऊं, निज ज्ञायक का ध्यान लगाऊं॥
सकल ज्ञेय ज्ञायक हो जाऊ, सिद्ध स्वपद अपना विकसाऊं ॥
राग रग से दूर रहूँ मै, निज स्वभाव रस चूर रहू मैं ।
ज्ञान गीत निज के ही गाऊ, शुद्ध ज्ञान के वाद्य बजाऊं॥
गुण अनत मणि माला लाऊ, निज ज्ञायक को ही पहनाऊ।
यथाख्यात श्रृगार करूं मैं, मोह क्षीण कर घाति हरूँ मैं।
भव बाधाएँ सब विघटाऊं, प्रभु अरहंत दशा प्रगटाऊ ॥
गुण सिद्धत्व प्रगट कर अपना, भव दुख सारा कर दू सपना।
वेदनीय का नाश करू मैं, अव्यावाधी सौख्य वरूं मैं ॥

ॐ ह्री वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहत देवाय जयमाला पूर्णार्घ्य नि. ।

आशीर्वाद :

दोहा

वेदनीय को क्षय करू पाऊं पद निर्वाण ।
अपने ही बल से करूं मुक्ति भवन निर्वाण ॥

इत्याशीर्वाद :

नय के वन में कभी आत्मा का होता है वास नहीं ।
नयातीत इन्द्रियातीत तू पर में कभी निवास नहीं ॥

ॐ

पूजन क्रमांक ८

मोहनीय कर्म विनाशक श्री अरहंत पूजन

स्थापना

छंद कुन्डलिया

मोहनीय की प्रकृतियाँ अट्ठाईस विनाश ।
हुए श्री अरहंत प्रभु पाया ज्ञान प्रकाश ॥
पाया ज्ञान प्रकाश घातिया चारों क्षय कर ।
निमिष मात्र मे त्रेसठ कर्म प्रकृतियाँ जयकर ॥
मैं अब पूजन करता हूं निज वन्दनीय की ।
अट्ठाईस प्रकृति नाशूं इस मोहनीय की ॥

ॐ ह्री मोहनीय कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ· ठ स्थापन ।
ॐ ह्री मोहनीय कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद अवतार

जन्मादि रोग त्रय नाश, हित निज गुण गाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मैं जय पाऊ ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊ ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करू निज सुख पाऊ ॥

ॐ ह्री मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठीभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

भव तप हर चदन शुद्ध, भावमयी लाऊ ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मै जय पाऊ ॥

बंध मोक्ष की रचना का सामर्थ्य सभी के भीतर है।
बाह्य आचरण में संयम की खोज निरर्थक दुखकर है ॥

कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करूं निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठीभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन नि. ।

अक्षय पद दाता शुद्ध, निज अक्षत लाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मैं जय पाऊं ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करूं निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठीभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

मै काम विनाशक पुष्प, चिन्मय के लाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मैं जय पाऊं ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करूं निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठीभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि. ।

मैं क्षुधारोग क्षय हेतु, शुद्ध सुचरु लाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मैं जय पाऊं ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करू निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठीभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

मैं मोह तिमिर हर दीप, ज्ञान का ही लाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मैं जय पाऊं ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करू निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठीभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

जो चेतयिता सिद्ध भक्ति से युक्त सतत करता पुरुषार्थ।
आत्म शक्ति की वृद्धि प्राप्त कर पाता है निश्चय भूतार्थ॥

मैं अष्ट कर्म क्षय को, ध्यान अपना ध्याऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव,. पर मैं जयं पाऊं ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करूं निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहत परमेष्ठीभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

फल मोक्ष प्राप्ति के हेतु, उत्तम फल लाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मैं जय पाऊं ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊं ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करू निज सुख पाऊं ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठीभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

पदवी अनर्घ्य हित अर्घ्य, भावमयी लाऊं ।
शुभ अशुभ विकारी भाव, पर मै जय पाऊ ॥
कर मोहनीय का नाश, समकित गुण पाऊ ।
क्षय अट्ठाईस प्रकृति, करूं निज सुख पाऊ ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत परमेष्ठीभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

अर्घ्यावलि

दोहा

मोहनीय की प्रकृति हैं अट्ठाईस सुजान ।
इनको नाशे बिन नही होता केवलज्ञान ॥
इनमें दर्शन मोह की तीन प्रकृति दुख मूल ।
चरित मोह पच्चीस है मुक्ति मार्ग में शूल ॥

(१)

१. ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मरहितश्रद्धागुणसपन्नाय नम ।

शुद्धोऽहम् ।

शुद्ध आत्मा की सुगंध जब दशों दिशाओं से आती ।
मन के अंगना में रजनी गंधा की गंध न तब भाती ॥

मोहनीय की है मिथ्यात्व प्रकृति भव सागर दुख का मूल।
जो सम्यक् दर्शन पाते हैं वे करते इसको निर्मूल ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१॥

ॐ ह्रीं मोहनीय मिथ्यात्व प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि. ।

(२)

२ ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृतिकर्मरहितश्रद्धागुणसंपन्नाय नम ।

अचलोऽहम् ।

मोहनीय की सम्यक्त्व प्रकृति यह भी है मिथ्यात्व महान।
सम्यक् दर्शन धारण करके कर दूंगा इसको अवसान ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२॥

ॐ ह्रीं मोहनीय सम्यक्त्व प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि ।

(३)

३ ॐ ह्रीं सम्यङ्मिथ्यात्वकर्मरहितश्रद्धागुणसंपन्नाय नमः ।

निश्चलोऽहम् ।

अब सम्यक् मिथ्यात्व प्रकृति नाशूंगा नाथ सदा को ही ।
इसके झांसे मे न आऊंगा मेरे नाथ कदा को ही ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥३॥

ॐ ह्रीं मोहनीय सम्यक् मिथ्यात्व विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

(४)

४. ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहितचैतन्यस्वरूपाय नम. ।

सदानंदोऽहम् ।

पौरुष कर नर भव पाया है तो फिर आत्म ज्ञान कर ले।
निज पुरुषार्थ सिद्धि के द्वारा कर्मों के बंधन हरले॥

मोहनीय की हास्य प्रकृति संपूर्ण विनाशूं हे स्वामी।
हास्य भाव उपजे न कभी प्रभु यत्न करूं अन्तर्यामी॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥३॥

ॐ ह्रीं मोहनीय हास्य प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि ।

(५)

५. ॐ ह्रीं रतिकर्मरहितचैतन्यस्वरूपाय नम· ।

चिदानंदोऽहम् ।

मोहनीय की प्रकृति विनाशूं रति नामक अब तो स्वामी।
पर में रति उपजे न कभी प्रभु करूं यत्न अतर्यामी॥
मोहनीय का नाश करूगा निज स्वभाव बल से स्वामी।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूगा अब अन्तर्यामी ॥४॥

ॐ ह्रीं मोहनीय रति प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(६)

६. ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहितनिर्मोहस्वरूपाय नम· ।

निर्द्वंद्वस्वरूपोऽहम् ।

मोहनीय की अरति प्रकृति को क्षय कर दूं पूरी स्वामी।
अरति भाव उपजे न कभी भी करूं यत्न अंतर्यामी॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥५॥

ॐ ह्रीं मोहनीय अरति प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(७)

७ ॐ ह्रीं स्त्रीवेदकर्मरहितनिर्वेदस्वरूपाय नम. ।

अकामस्वरूपोऽहम् ।

सोते सोते अनगिन कल्प बिताए भव परिवर्त्तन कर ।
पंच परावर्त्तन अभाव का श्रम सुबुद्धि से अब तो कर ॥

प्रकृति विनाशूं मोहनीय की स्त्री वेद अभी स्वामी ।
वेद भाव संम्पूर्ण मिटाऊं करूं यत्न अंतर्यामी ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥७॥

ॐ ह्रीं मोहनीय स्त्री प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(८)

८. ॐ ह्रीं पुंवेदकर्मरहितनिर्वेदस्वरूपाय नमः ।

ब्रह्मस्वरूपोऽहम् ।

मोहनीय की प्रकृति विनाशूं पुरुष वेद नामक स्वामी ।
वेद भाव संम्पूर्ण मिटाऊं करूं यत्न अंतर्यामी ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चारित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥८॥

ॐ ह्रीं मोहनीय पुरुष वेद प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(९)

९. ॐ ह्रीं नपुंसकवेदकर्मरहितनिर्वेदस्वरूपाय नमः ।

निष्कामस्वरूपोऽहम् ।

प्रकृति नपुंसक वेद घोर दुखदायी नष्ट करूं स्वामी ।
वेद भाव संम्पूर्ण मिटाऊं करूं यत्न अंतर्यामी ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥
ये कषाय के ही नव भेद विनाश करूं अब तो भगवन ।
जीतूं प्रभु संपूर्ण मोह को प्राप्त करूं अपना चिद्धन ॥९॥

ॐ ह्रीं मोहनीय नपुंसक वेद प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

सिद्ध लोक से सिद्ध बधू का मिला निमत्रण अबकी बार।
यदि चूका तो पछताएगा पाएगा भव कष्ट अपार ॥

(१०)

१०. ॐ ह्रीं शोककर्मरहितनिर्मोहस्वरूपाय नमः ।

अशोकोऽहम् ।

मोहनीय की शोक प्रकृति सम्पूर्णतया नाशूं स्वामी ।
आर्त्त ध्यानमय शोक न हो प्रभु यत्न करूं अन्तर्यामी ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१०॥

ॐ ह्रीं मोहनीय शोक प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

(११)

११. ॐ ह्रीं भयकर्मरहितनिर्मोहस्वरूपाय नमः ।

निर्भयोऽहम् ।

मोहनीय भय प्रकृति विनाशूं निर्भय होकर हे स्वामी ।
सप्त भयों से रहित बनूं अब करूं यत्न अंतर्यामी ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥११॥

ॐ ह्रीं मोहनीय भय प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

(१२)

१२. ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहितनिर्मोहस्वरूपाय नमः ।

निर्विचिकित्सास्वरूपोऽहम् ।

प्रकृति जुगुप्सा सर्व विनाशूं अब मैं बन निर्मल स्वामी ।
कभी ग्लानि का भाव ह्रदय में उपजे ना अन्तर्यामी ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१२॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि ।

छह द्रव्यों में सबसे उत्तम द्रव्य आत्मा निज जानो ।
पुद्गल धर्म अधर्म काल नभ से निज द्रव्य प्रथक मानो॥

(१३)

१३. ॐ ह्रीं अनंतानुबंधीक्रोधकर्मरहितनिष्क्रोधस्वरूपाय नमः ।

शांतोऽहम् ।

मोहनीय की अनंतानुबंधी युत क्रोध प्रकृति कर नाश ।
अकषायी स्वभाव है मेरा उसका ही अब करूं प्रकाश ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१३॥

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी क्रोध प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

(१४)

१४. ॐ ह्रीं अनंतानुबन्धिमानकर्मरहितनिर्मानस्वरूपाय नमः ।

निर्मदोऽहम् ।

मोहनीय की अनंतानुबंधी युत मान प्रकृति कर नाश ।
अकषायी स्वभाव है मेरा उसका ही अब करूं प्रकाश ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१४॥

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी मान प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

(१५)

१५. ॐ ह्रीं अनंतानुबन्धिमायाकर्मरहितनिर्मायास्वरूपाय नमः ।

सरलोऽहम् ।

मोहनीय की अनंतानुबंधी क्षय करूं प्रकृति माया ।
निज स्वरूप ऋजुता का सागर आज दृष्टि में दरशाया॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१५॥

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधी माया प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

नव तत्त्वों से सर्वोत्तम है आत्म तत्त्व ही श्रेष्ठ प्रधान ।
इसकी चर्चा करने वाले भी हैं निकट भव्य अमलान ॥

(१६)

१६. ॐ ह्रीं अनंतानुबन्धिलोभकर्मरहितनिर्लोभस्वरूपाय नमः ।

निर्ममोऽहम् ।

मोहनीय की अनंतानुबंधी मय लोभ प्रकृति कर नाश ।
अकषायी स्वभाव है मेरा उसका ही अब करूं प्रकाश ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१६॥

ॐ ह्रीं अनतानुबंधी लोभ प्रकृति विनशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(१७)

१७ ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहितनिष्क्रोधस्वरूपाय नम ।

प्रशांतोऽहम् ।

मोहनीय की अप्रत्याख्याना वरणी की क्रोध प्रकृति ।
इसे समूल नष्ट करने को जाग उठी है मरी मति ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूगा अब अन्तर्यामी ॥१७॥

ॐ ह्री अप्रत्याख्याना वरणी क्रोध प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्य नि ।

(१८)

१८ ॐ ह्री अप्रत्याख्यानावरणमानकर्मरहितनिर्मानस्वरूपाय नम. ।

निरहंकारोऽहम् ।

मोहनीय की अप्रत्याख्यानावरणी की मान प्रकृति ।
इसे समूल नष्ट करने को जाग उठी है मेरी मति ॥
मोहनीय का नाश करूगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१८॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणी मान प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्य नि. ।

सागारों अनगारो द्वारा ग्रहण लिंग भी है बेकार ।
दर्शन ज्ञान चरित्र आत्मा का परिणाम यही शिवकार ॥

(१९)

१९. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाकर्मरहितनिर्मायास्वरूपाय नमः ।

निर्मलोऽहम् ।

मोहनीय अप्रत्याख्यानावरणी माया प्रकृति विनाश ।
निज स्वरूप उज्ज्वल ऋजुतामय का प्रभु पाऊं दिव्य प्रकाश ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥१९॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणी माया प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(२०)

२०. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभकर्मरहितनिर्लोभस्वरूपाय नमः ।

समतास्वरूपोऽहम् ।

मोहनीय की अप्रत्याख्यानवरणी की लोभ प्रकृति ।
इसे समूल नष्ट करने को जाग उठी है मेरी मति ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२०॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणी लोभ प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(२१)

२१. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहितनिष्क्रोधस्वरूपाय नमः ।

नीरागस्वरूपोऽहम् ।

मोहनीय की प्रत्याख्यानावरणी की यह क्रोध प्रकृति ।
ज्ञान भाव से नष्ट कर दूंगा सावधान है मेरी मति ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२१॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणी क्रोध प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि ।

बुद्धि चित्त मति अध्यवसान कहे विज्ञानभाव परिणाम ।
यदि पर से एकत्व सकल व्यवसाय सहित बंधों के धाम॥

(२२)

२२. ॐ ह्रीं प्रत्यांख्यानावरणमानकर्मरहितनिर्मानस्वरूपाय नमः ।

अनुत्सेकोऽहम् ।

मोहनीय की प्रत्याख्यानावरणी की यह मान प्रकृति ।
परम विनय से नष्ट करूंगा सावधान हे मेरी मति ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२२॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणी मान प्रकृति विनाशनाय. श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि ।

(२३)

२३ ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायाकर्मरहितनिर्मायास्वरूपाय नम ।

अमलोऽहम् ।

मोहनीय प्रत्याख्यानावरणी की माया प्रकृति विनाश ।
ऋजुता पूर्वक नष्ट करूंगा पाऊंगा उर विमल प्रकाश ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२३॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणी माया प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(२४)

२४. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभकर्मरहितनिर्लोभस्वरूपाय नम ।

एकोऽहम् ।

मोहनीय की प्रत्याख्यानावरणी की यह लोभ प्रकृति ।
शौच भाव से नष्ट करूंगा सावधान है मेरी मति ॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२४॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणी लोभ प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि ।

शरीराश्रित द्रव्यलिंग है भावलिंग आत्माश्रित है ।
तीन चौकड़ी का अभाव हो तो रत्नत्रय निश्चित है ॥

(२५)

२५. ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधकर्मरहितनिष्क्रोधस्वरूपाय नमः ।

शीतलोऽहम् ।

मोहनीय की प्रकृति संज्ज्वलन क्रोध पूर्ण कर डालूं नाश।
मुनि निर्ग्रंथ स्वपद धारण कर क्षमा धर्म का करूं प्रकाश॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२५॥

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।

(२६)

२६. ॐ ह्रीं संज्वलनमानकर्मरहितनिर्मानस्वरूपाय नमः ।

निरपेक्षोऽहम् ।

मोहनीय की प्रकृति संज्वलन मान पूर्ण कर डालूं नाश ।
मुनि निर्ग्रंथ स्वपद धारण कर क्षमा धर्म का करूं प्रकाश॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२७॥

ॐ ह्रीं संज्वलन मान प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि ।

(२७)

२७ ॐ ह्रीं संज्वलनमायाकर्मरहितनिर्मायास्वरूपाय नम. ।

विमलोऽहम् ।

मोहनीय की प्रकृति संज्वलन माया का कर डालूं नाश।
मुनि निर्ग्रंथ स्वपद धारण कर क्षमा धर्म का करूं प्रकाश॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं संज्वलन माया प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत देवाय अर्घ्यं नि. ।२८॥

अट्ठाईस मूलगुण हों तो द्रव्यलिंग कहलाता है ।
एक मूलगुण भी कम हो तो मुनि विकृत हो जाता है ॥

(२८)

२८ ॐ ह्रीं संज्वलनलोभकर्मरहितनिर्लोभस्वरूपाय नम. ।

साम्यस्वरूपोऽहम् ।

मोहनीय की प्रकृति संज्वलन लोभ सदा को कर दूं नाश।
मुनि निर्ग्रंथ स्वपद धारण कर क्षमा धर्म का करूं प्रकाश॥
मोहनीय का नाश करूंगा निज स्वभाव बल से स्वामी ।
दर्शन मोह चरित्र मोह जीतूंगा अब अन्तर्यामी ॥२९॥

ॐ ह्रीं सज्वलन लोभ प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत देवाय अर्घ्यं नि ।

वीरछंद

भेद कषाय वेदनीय के ये हैं सोलह भव दुखरूप ।
इस सब भेदो से विरहित है शुद्ध आत्मा निज चिद्रूप ॥
तीन मोह के अरु पच्चीस कषायों की मिल अट्ठाईस ।
नाश करू ये सकल प्रकृतियॉ हो जाऊं मै त्रिभुवन ईश॥
पहले दर्शन मोह विनाशू फिर चारित्र मोह कर नाश ।
मोह क्षीण फल पाकर स्वामी पाऊ केवल ज्ञान प्रकाश ॥

पुष्पांजलि

महाअर्घ्य

छंद विजात

मिला है समकित तो याद रखना स्वय की श्रद्धा न जाने देना।
विभावी भावो की रात काली किसी गली से न आने देना॥
स्वभाव कचन के सम खरा है इसे मिलावट से दूर रखना।
सुमेरु जैसे अचल ही रहना न एक पल को भी डिगने देना ॥
बने बनाए महल गिरा दो ये राग वाले सदा सदा को ।
स्वरूप का ही सतत हो चिन्तन विकार उर में न आने देना ॥

लिंग ग्रहस्थों का हो या मुनिलिंग मोक्ष का मार्ग नहीं।
निश्चय सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र बिना शिवमार्ग नहीं॥

ये कलमुंही है विभावी परिणति इसे कभी भी न संग रखना।
स्वभाव परिणति है मात्र अपनी स्वगीत इसको तुम गाने देना॥
ये मोह का घर अभी जला दो मिटा दो इसको स्वबल से अपने।
स्वभाव अपना ही तुम सम्हालो जरा भी भय को न आने देना॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करूं नष्ट करूं मिथ्यात्व ।
मुक्ति मार्ग पर चल पड़ूँ पाक्षायिक सम्यक्त्व ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत देवाय महाअर्घ्य नि ।

जयमाला

छंद विजया

महामोह के जाल में तुम न फंसना ।
महादुष्ट तुमको भ्रमित कर रहेगा ॥
तुम्हे स्वर्ग का लोभ देगा बहुत यह ।
चलो संग मेरे ये तुम से कहेगा ॥
तुम्हें आज मुश्किल से समकित मिला है ।
बहकना नहीं आत्म श्रद्धा से चेतन ॥
अगर तुमने अपनी स्वश्रद्धा को छोड़ा ।
तो भव कष्ट चेतन सदा ही रहेगा ॥
अगर देव गुरु धर्म पर आस्था है ।
तो उपदेश उनका नहीं भूलना अब ॥
अगर भूल जाओगे तो सत्य मानो ।
तुम्हारा ही निज आत्मा दुख सहेगा ॥
सरल शान्ति धारा में अभिषेक कर लो ।
सहज आत्मा का करो नित्य चिन्तन ॥
विभावों के बादल घनेरे हटेंगे ।
महल आस्रव का निमिष में ढहेगा ॥

निज परिणामों की संभाल कर यथाशक्ति व्रत अपनाओ।
पंच समिति त्रय गुप्ति अष्ट प्रवचन मातृका हृदय लाओ॥

जो हैं पूर्व कर्मों के बंधन उन्हें अब ।
हनन निर्जरा शीघ्र आकर करेगी ॥
दशा शुद्ध निर्बंध होगी तुम्हारी ।
सकल कर्म ईंधन स्वयं ही दहेगा ॥
महामोक्ष तरु फल मिलेगा शिवम् मय ।
निजानंद आनंद होगा सदा को ॥
महामोह मर जाएगा एक पल में ।
नहीं तुमसे फिर यह कभी कुछ कहेगा ॥
अनंतों गुणों से हो मंडित सदा तुम ।
महाशक्ति धारी अनाकुल स्वभावी ॥
सतत अपनी शुद्धात्मा को ही नरखो ।
यही आत्मा तुमको उर में गहेगा ॥
मिलेगा तुम्हें चक्र सिद्धों का अनुपम ।
तुम्हें अपने भीतर सजाएगा तत्क्षण ॥
त्रिलोकाग्र पर वास होगा तुम्हारा ।
सदा पूर्ण सुख सिन्धु उर में बहेगा ॥

दोहा

दर्शन मोह विनाशकर पाऊं दृढ़ सम्यक्त्व ।
चरित मोह फिर नष्ट कर प्राप्त करूं सिद्धत्व ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत देवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

आशीर्वाद

दोहा

मोहनीय को क्षय करूं पाऊं पद निर्वाण ।
अपने ही बल से करूं मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वाद :

आत्मा के परिणाम मयी है सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र ।
यही मोक्ष का मार्ग शाश्वत यही आचरण परम पवित्र ॥

ॐ

पूजन क्रमांक ९

आयुकर्म दहन कर्त्ता श्री सिद्ध पूजन

स्थापना

छंद कुण्डलिया

आयुकर्म का नाश कर हुए सिद्ध भगवान ।
बारबार पूजन करूं पाऊं पद निर्वाण ॥
पाऊं पद निर्वाण करूं आत्मा का चिन्तन ।
चार प्रकृतियां नष्ट करूं काटूं भव बंधन ॥
ज्ञान पूर्वक आश्रय लूं मैं आत्म धर्म का ।
अब तो क्षय करना है स्वामी आयु कर्म का ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनं ।
ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद चौपायी

जन्म जरादिक रोग मिटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं.।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

भवाताप ज्वर शीघ्र मिटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

शाश्वत अक्षय पद प्रगटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

अंजुलि भर भर अनुभव रस पीने का सहज मिला अवसर ।
संवर की सरिता पाते ही दूर हुआ आश्रव का डर ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

कामबाण की पीर मिटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि. ।

क्षुधारोग का कष्ट मिटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

मोह तिमिर अज्ञान हटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

अष्ट कर्म सम्पूर्ण जलाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

पूर्ण मोक्ष फल हे प्रभु पाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

शाश्वत पद अनर्घ्य प्रगटाऊं। श्री सिद्ध प्रभु को नित ध्याऊं ।
आयु कर्म चौप्रकृति विनाशूं। सूक्ष्मत्व गुण शीघ्र प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि. ।

अर्घ्यावलि

दोहा

आयु कर्म की प्रकृतियां दुखमय घोर प्रसिद्ध ।
इनके क्षय बिन तो नहीं होता कोई सिद्ध ॥

पुष्पांजलि

मिली निर्जरा तरणी पावन पूर्व बंध हो रहे विनष्ट ।
सिद्ध लोक में बजते मंगलवाद्य मिटा सारा भव कष्ट ॥

(१)

१ ॐ ह्रीं नरकायुकर्मरहितावगाहनत्वस्वरूपाय नमः ।

शिवधामस्वरूपोऽहम् ।

वीरछंद

"नरक आयु अति दुखदायी है सातों नरक महा दुखरूप।
नरक आयु क्षय करने का ही यत्न करूंगा निज अनुरूप॥
आयु कर्म की सर्व प्रकृतियां मुझको ही क्षय करना है ।
सूक्ष्मत्व गुण पाने को प्रभु इन्हें शीघ्र ही हरना है ॥१॥

ॐ ह्रीं नरक आयु प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२)

२ ॐ ह्रीं तिर्यंचायुकर्मरहितावगाहनत्वस्वरूपाय नमः ।

निर्दण्डोऽहम् ।

आयु त्रियंच घोर दुखदायी है निगोद तक की दाता ।
इसको क्षय करने का निश्चय जिनआगम में विख्याता ॥
आयु कर्म की सर्व प्रकृतियां मुझको ही क्षय करना है ।
सूक्ष्मत्व गुण पाने को प्रभु इन्हें शीघ्र ही हरना है ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रिर्यच आयु प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि. ।

(३)

३. ॐ ह्रीं मनुष्यायुकर्मरहितावगाहनत्वस्वरूपाय नमः ।

सदाशिवनिवासोऽहम् ।

मनुज आयु भी भव दुखमय है बोध अबोध दशा होती ।
इसके क्षय बिन कभी नहीं चेतन की सिद्ध दशा होती ॥
आयु कर्म की सर्व प्रकृतियां मुझको ही क्षय करना है ।
सूक्ष्मत्व गुण पाने को प्रभु इन्हें शीघ्र ही हरना है ॥३॥

ॐ ह्रीं मनुज आयु प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

अब तो सिद्धों का सिंहासन कभी नहीं सूना होगा ।
निजानंद अनुभव रस का आनंद नित्य दूना होगा ॥

(४)

४. ॐ ह्रीं देवायुकर्मरहितावगाहंनत्वस्वरूपा नम. ।

विरागधामस्वरूपोऽहम् ।

देव आयु भी क्षण भंगुर सुख देती आयी विविध प्रकार।
इसके क्षय बिन कभी नहीं पा सकता प्राणी सौख्य अपार॥
आयु कर्म की सर्व प्रकृतियां मुझको ही क्षय करना है ।
सूक्ष्मत्व गुण पाने को प्रभु इन्हें शीघ्र ही हरना है ॥४॥

ॐ ह्रीं देव आयु प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्यं नि ।

महाअर्घ्य

छंद समान सवैया

जड तन पांचो इन्द्रिय द्वारा इस चेतन को पा न सकोगे।
वर्ण गध रस पर्श शब्द से भी चेतन को ध्या न सकोगे॥
जड काया से पूर्ण प्रथक है दर्शन ज्ञानमयी अशरीरी ।
निज स्वभाव की महिमा से है इसकी रंच न पल भर दूरी॥
यदि चेतन को पाना है तो फिर चेतन से परिचय करना।
आयु कर्म क्षय करना है तो पहिले निज का निर्णय करना॥
भव पथ से यदि ऊबे हो तो शिव पथ पर जल्दी आ जाओ।
अनुभव सागर मे अब डुबकी लगा रत्न अपने ले आओ॥
बिन पुरुषार्थ सफल होता है नहीं अरे पुरुषार्थ कभी भी।
अभूतार्थ को तजे बिना मिलता न अरे भूतार्थ कभी भी॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू आयु कर्म कर नाश ।
सूक्ष्मत्व गुण प्रगट कर पाऊ आत्म निवास ॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो महाअर्घ्य नि ।

नयी नयी निर्मल पर्याये तेरे चरण पखारेगी ।
मुक्ति वधू की पायल ध्वनिया पल पल तुझे निहारेगी ॥

जयमाला

छद मानव

मिथ्यात्व हवा का झोका प्रतिपल चलता रहत है ।
बहु भव बंधन कर प्राणी चारों गति में बहता है ॥
कोई न बचाने पाता ऐसा है यह मिथ्याभ्रम ।
वह ही बच पाता है जो करता है ज्ञान परिश्रम ॥
इस श्रम के द्वारा प्राणी सम्यक् दर्शन पाता है ।
निधि भेद ज्ञान की अपने अन्तर्मन मे लाता है ॥
है सग दुष्ट अविरति का पर सयम की अभिलाषा ।
कर प्राप्त सयमासंयम पूरी करता है आशा ॥
फिर सयम पूर्ण धारता सप्तम षष्टम मे जाता ।
झूले पर झूला करता फिर श्रेणी पर चढ जाता ॥
उपशम श्रेणी पाता तो ग्यारहवे से गिर जाता ।
क्षायिक श्रेणी पाता तो बारहवॉ ही प्रगटाता ॥
कर मोह क्षीण सारा ही तेरहवॉ पा लेता है ।
अरहत दशा प्रगटाकर जगती का सुख देता है ॥
फिर चौदहवॉ पा लेता पश्चात् सिद्ध होता है ।
सिद्धत्व स्वगुण झट पाकर ससार सर्व खोता है ॥
यो आयु कर्म को क्षय कर निज शिव पद पा लेता है ।
आठो कर्मो से विरहित हो शाश्वत सुख लेता है ॥

ॐ ह्री आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य नि ।

आशीर्वाद

दोहा

आयु कर्म को क्षय करू चहुगति कर अवसान ।
अपने ही बल से करूँ मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वाद

सादि अनतानंत काल तक नित नूतन मगल होगा ।
शक्ति अनंतानत प्रगट होगी निज का ही बल होगा ॥

ॐ

पूजन क्रमांक १०

नाम कर्म दहन कर्त्ता श्री सिद्ध भगवंत पूजन

स्थापना

कुन्डलिया

नाम कर्म का नाश कर हुए सिद्ध भगवान ।
नाशी प्रकृति तिरानवे जय जय जय भगवान ॥
जय जय जय भगवान आत्मा को ही ध्याऊ ।
आप कृपा शिव सुख पाने को निज गुण गाऊ ॥
निज गुण गाऊ आश्रय लू मै आत्म धर्म का ।
निश्चित नाश करूगा अब मै नाम कर्म का ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री नाम कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री नाम कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

दोहा

जन्म मरण दुख क्षय करू दो प्रभु यह आशीश ।
ज्ञान नीर अर्पित करू जय जय सिद्ध महीश ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

भवआतप का नाश कर नष्ट करू भव रोग ।
शीतल चदन भेटकर पाऊ धर्म सुयोग ॥

यह शरीर ही जिन मदिर है मन सिहासन शान्त सचित्र।
यहाँ विराजित निज जिनेन्द्र प्रभु गुण अनन्तमय परम पवित्र ॥

आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

अक्षय पद की प्राप्ति हित करू स्वय का ध्यान ।
उत्तम अक्षत भेटकर पाऊ पद अमलान ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

कामबाण के नाश हित स्वगुण पुष्प बलवान ।
महाशील गुण प्राप्त कर हो जाऊ भगवान ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधारोग प्रभु क्षय करू तज दू कर्माहार ।
सुचरु प्राप्त कर ज्ञानमय हो जाऊ अविकार ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

दीप चढाऊ ज्ञान के मिथ्या तिमिर निवार ।
केवल ज्ञान महान पा नाश करू ससार ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

शुक्ल ध्यान की धूप से करू कर्म अवसान ।
उत्तम सुख की प्राप्ति हित पाऊ पद निर्वाण ॥

ध्रुव चैतन्य चिदबर चिन्मय मुनि शुद्धोपयोग सम्पन्न ।
भाव द्रव्य वदन करता हू विनय बद्ध हो भावोत्पन्न ॥

आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

पूर्ण मोक्षफल प्राप्ति हित पाऊ सम्यक् ज्ञान ।
बाधक कारण मोक्ष के शीघ्र करू आवसान ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

पद अनघ्र्य की प्राप्ति हित लू निश्चय भूतार्थ ।
निज गुण अर्घ्य सजा प्रभो पाऊ निज परमार्थ ॥
आयु कर्म की तिरानवे प्रकृति विनाशक सिद्ध ।
अवगाहन गुण के धनी सिद्ध महान प्रसिद्ध ॥

ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

अर्घ्यावलि

दोहा

नाम कर्म की प्रकृतिया तेरानवे प्रसिद्ध ।
कोई भी होता नही इनके क्षय बिन सिद्ध ॥

पुष्पाजलि

(१)

१ ॐ ह्री नरकगतिकर्मरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

आनंदधामस्वरूपोऽहम् ।

ताटक

नाम कर्म की चार प्रकृतिया गति नामक भव दुख दायक।
पहिली प्रकृति नरक गति नाशू निज पद पाऊ सुखदायक॥

पर द्रव्यो मे अनासक्त रह आश्रव का निरोध कर ले ।
निश्चय सयम के अनुकूल चलाचल भव विरोध कर ले॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाश समूल॥१॥

ॐ ह्री नरक गति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२)

२ ॐ ह्री तिर्यचगतिकर्मरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

ब्रह्मधामस्वरूपोऽहम् ।

वीरछंद

द्वितीय प्रकृति त्रिर्यच विनाशू जो है भव दुखदायी शूल ।
बध बधन छेदन भेदन की बहु पीडा का दुखमय मूल ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२॥

ॐ ह्री त्रिर्यच गति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३)

३ ॐ ह्री मनुष्यगतिनामकर्मरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

अचिन्त्योऽहम् ।

तृतिय प्रकृति गति मनुष्य नाशू जो निजात्मा के प्रतिकूल।
बिन सयम के पूर्ण व्यर्थ है भव दुखदायी है यह शूल ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३॥

ॐ ह्री मनुष्य गति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४)

४ ॐ ह्री देवगतिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

परमदेवोऽहम् ।

चौथी प्रकृति देव गति नाशू लोभ कषायमयी प्रतिकूल।
माला कब मुरझाएगी यह रहता सदा हृदय मे शूल ॥

भाव मरण प्रति समयै कर रहा मोहाधीन बना सविकार।
द्रव्य मरण करके पर्याय बदलता रहता है हरबार ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४॥

ॐ ह्री देव गति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५)

५ ॐ ह्री औदारिकशरीरनामकर्मरहितनिर्देहस्वरूपाय नम ।

निष्कायस्वरूपोऽहम् ।

पच शरीर प्राप्त कर मैने दुख पाए है अपरम्पार ।
औदारिक तन प्रकृति विनाशूँ फिर न भ्रमूगा प्रभु ससार॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मे नाथ समूल॥५॥

ॐ ह्री औदारिक तन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६)

६ ॐ ह्री वैक्रियिकशरीरनामकर्मरहितनिर्देहस्वरूपाय नम ।

अकायस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु वैक्रियक शरीर प्राप्त कर भी दुख पाए घोर अनत।
प्रकृति वेक्रियक नाश करूगा हो जाऊ मै भगवत ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६॥

ॐ ह्री वैक्रियक शरीर प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७)

७ ॐ ह्री आहारकशरीरनामकर्मरहितनिर्देहस्वरूपाय नम ।

ज्ञानशरीरस्वरूपोऽहम् ।

आहारक तन भी न लाभ प्रद मुनि बन करके जो पाया।
इसका भी मै नाश करूगा यह विचार उर को भाया ॥

बार बार मुनि पद भी धारा पाया ग्रैवेयक दरबार ।
एक बार भी मोह शत्रु का किया नही तूने सहार ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७॥

ॐ ह्री आहारक शरीर प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८)

८ ॐ ह्री तैजसशरीरनामकर्मरहितनिर्देहस्वरूपाय नम ।

चिन्मयवपुरोऽहम् ।

तैजस प्रकृति सतत बाधक है नही छोडती मेरा साथ ।
इसको क्षय करने का निश्चय मुझे सुहाया है हे नाथ ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८॥

ॐ ह्री तजस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(९)

९ ॐ ह्री कार्मणशरीरनामकर्मरहितनिर्देहस्वरूपाय नम ।

बोधदेहस्वरूपोऽहम् ।

कार्माण तन पाकर मैने प्रभु अनादि से दुख पाया ।
कार्माण तन क्षय करने का अब अलभ्य अवसर पाया ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥९॥

ॐ ह्री कार्माण प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१०)

१० ॐ ह्री एकेन्द्रियजातिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अतीन्द्रियसुखस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु एकेन्द्रिय जाति प्रकृति का नाश करू ऐसा दो ज्ञान।
पाच भेद है जाति नाम के इनका कर डालू अवसान ॥

क्षणभर मात्र प्रमाद न कर तू सयत भाव हृदय में धार।
अतरग बहिरग शुद्धता पूर्वक निज का रूप सवार ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१०॥

ॐ ह्री एकेन्द्रिय जाति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(११)

११ ॐ ह्री द्वीन्द्रियजातिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अतीन्द्रियज्ञानस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु दो इन्द्रिय जाति प्रकृति का नाश करू ऐसा दो ज्ञान।
पाच भेद है जाति नाम के इनका कर डालू अवसान ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥११॥

ॐ ह्री दो इन्द्रिय जाति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१२)

१२ ॐ ह्री त्रीन्द्रियजातिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अतीन्द्रियानदस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु त्रय इन्द्रिय जाति प्रकृति का नाश करू ऐसा दो ज्ञान।
पाच भेद है जाति नाम के इनका कर डालू अवसान ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१२॥

ॐ ह्री त्रय इन्द्रिय जाति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१३)

१३ ॐ ह्री चतुरिन्द्रियजातिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अतीन्द्रियबोधस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु चौ इन्द्रिय जाति प्रकृति का नाश करू ऐसा दो ज्ञान।
पाच भेद है जाति नाम के इनका कर डालू अवसान ॥

उत्तम तप का अनुष्ठान कर सर्व विभाव भवा निर्वार ।
अप्रशस्त तो नष्ट हो चुके अब प्रशस्त का कर परिहार॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१३॥

ॐ ह्री चौ इन्द्रिय जाति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१४)

१४ ॐ ह्री पचेन्द्रियजातिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

चैतन्यजातिस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु पचेन्द्रिय जाति प्रकृति का नाश करू ऐसा दो ज्ञान।
पाच भेद हैं जाति नाम के इनका कर डालू अवसान ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१४॥

ॐ ह्री पचेन्द्रिय जाति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१५)

१५ ॐ ह्री औदारिकागोपागनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अखण्डचित्स्वरूपोऽहम् ।

अगोपाग जु भेद तीन हैं नाम कर्म के बहु विख्यात् ।
अशरीरी चेतन स्वरूप को करते रहते है ये घात ॥
औदारिक शरीरागोपाग प्रकृति मुझे क्षय करना है ।
अगोपाग भेद त्रय दुखमय हे प्रभु मुझको हरना है ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१५॥

ॐ ह्री औदारिक शरीर आगोपाग प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१६)

१६ ॐ ह्री वैक्रियिकागोपागनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अभेदबोधस्वरूपोऽहम् ।

एक बार ज्ञाता दृष्टा बन पाले अपना मुक्ति सदन ।
ज्ञान समुद्र अपार सुशोभित निज अतर मे ज्ञान गगन ॥

वैक्रिय शरीरागोपाग प्रकृति मुझे क्षय करना है ।
अगोपाग भेद त्रय दुखमय हे प्रभु मुझको हरना है ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१६॥

ॐ ह्री वैक्रियक शरीर आगोपाग प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१७)

१७ ॐ ह्री आहारकागोपागनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निराकारोऽहम् ।

आहारक शरीरागोपाग प्रकृति मुझे क्षय करना है ।
अगोपाग भेद त्रय दुखमय हे प्रभु मुझको हरना है ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१७॥

ॐ ह्री आहारक शरीर आगोपाग प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(१८)

१८ ॐ ह्री निर्माणनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अनंतगुणसमृद्धोऽहम् ।

बधन नाम जु कर्म उदय से होता बधन नाम जु कर्म।
पुदगल स्कधो का मिलना पच भेद है प्रकृति जुकर्म ॥
अग हाथ दो भाव पीठ वक्ष स्थल नितम्ब अरु मस्तक।
उगली कान नाक आदि ये उपाग कहलाते तन तक ॥
कर्मोदय से अगोपागो का होता रहता निर्माण ।
इस निर्माण प्रकृति का स्वामी मुझको करना है अवसान॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हैं तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१८॥

ॐ ह्री अग निर्माण शरीर आगोपाग प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

तेरा गौरव तेरे भीतर पर का गौरव पर मे है ।
तेरी महिमा तेरे भीतर पर की महिमा पर में है ॥

(१९)

१९ ॐ ह्री औदारिकबधननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

स्वतंत्रोऽहम् ।

औदारिक बधन की प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ।
पाचो बधन क्षय कर दू प्रभु ऐसा बल दो हे स्वामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥१९॥

ॐ ह्री औदारिक बधन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२०)

२० ॐ ह्री वैक्रियिकबधननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

स्वाधीनस्वरूपोऽहम् ।

वैक्रियक बधन की प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ।
पाचो बधन क्षय कर दू प्रभु ऐसा बल दो हे स्वामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२०॥

ॐ ह्री वैक्रियक बधन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२१)

२१ ॐ ह्री आहारकबधननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निरालंबोऽहम् ।

आहारक बधन की प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ।
पाचो बधन क्षय कर दू प्रभु ऐसा बल दो हे स्वामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२१॥

ॐ ह्री आहारक बधन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

तू अपना गौरव सँभालकर अपनी महिमा को ही देख ।
मात्र एक ज्ञायक स्वभाव से मिट जाती कर्मो की रेख ॥

(२२)

२२ ॐ ह्री तैजसबधननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निजायत्तोऽहम् ।

अब तैजस बधन की प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ।
पाचो बधन क्षय कर दू प्रभु ऐसा बल दो हे स्वामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२२॥

ॐ ह्री तैजस बधन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२३)

२३ ॐ ह्री कार्मणबधननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

परायत्तरहितोऽहम् ।

कार्माण बधन की प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ।
पाचो बधन क्षय कर दू प्रभु ऐसा बल दो हे स्वामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२३॥

ॐ ह्री कार्माण बधन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२४)

२४ ॐ ह्री औदारिकसघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अनतगुणस्वरूपोऽहम् ।

औदारिक सघात प्रकृति को क्षय कर आत्म प्रकाश करू।
अब सघात नाम कर्म की पाच प्रकृतिया नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२४॥

ॐ ह्री औदारिक सघात प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

वीतराग की दिव्यध्वनि का समयसार ही उत्तम सार ।
ये ही कारण समय सार है ये ही कार्य समय का सार ॥

(२५)

२५ ॐ ह्री वैक्रियिकसघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ज्ञानपुजस्वरूपोऽहम् ।

वैक्रियक सघात प्रकृति को क्षय कर आत्मा प्रकाश करू।
अब सघात नाम कर्म की पाच प्रकृतिया नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२५॥

ॐ ह्री वैक्रियक सघात प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२६)

२६ ॐ ह्री आहारकसघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निजगुणकदबकोऽहम् ।

आहारक सघात कर्म की प्रकृति नाथ मै नाश करू ।
अब सघात नाम कर्म की पाच प्रकृतिया नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मे नाथ समूल॥२६॥

ॐ ह्री आहारक सघात प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२७)

२७ ॐ ह्री तजससघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

बोधतेजधामस्वरूपोऽहम् ।

अब तैजस सघात कर्म की प्रकृति प्रसिद्ध विनाश करू।
अब सघात नाम कर्म की पाच प्रकृतिया नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२७॥

ॐ ह्री तजस सघात प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

पाप पुण्य का फल बधन है शुद्ध भाव से होता मुक्त ।
शुद्ध भाव से जो सुदूर है वही जीव भव दुख सयुक्त ॥

(२८)

२८ ॐ ह्री कार्मणसघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ज्ञानौघस्वरूपोऽहम् ।

कार्माण सघात कर्म की प्रकृति प्रसिद्ध विनाशक ।
अब सघात नाम कर्म की पाच प्रकृतिया नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२८॥

ॐ ह्री कार्माण सघात प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२९)

२९ ॐ ह्री समचतुरस्रसस्थाननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

चिदाकारस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु सस्थान नाम कर्म के छह भेदो को नाश करूँ ।
सम चतुरस्र सस्थान की प्रकृति तुरत विनाश करूँ ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥२९॥

ॐ ह्री सम चतुरस्र सस्थान प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३०)

३० ॐ ह्री न्यग्रोधपरिमण्डलसस्थाननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ब्रह्मकारोऽहम् ।

न्यग्रोध परिमडल सस्थान प्रकृति का अब प्रभु नाश करू।
प्रभु सस्थान नाम कर्म के छह भेदो को नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३०॥

ॐ ह्री न्यग्रोध परिमडल सस्थान प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

चारो गति के बधन से मै बॅधा हुआ था आज तक ।
भव की चकाचौंध से व्याकुल फिरता था आज तक ॥

(३१)

३१ ॐ ह्री स्वातिसस्थाननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

शंकराकारोऽहम् ।

प्रकृति स्वाति सस्थान स्वबल से हे स्वामी मै नाश करू।
प्रभु सस्थान नाम कर्म के छह भेदो को नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३१॥

ॐ ह्री स्वाति सस्थान प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३२)

३२ ॐ ह्री कुब्जकसस्थाननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

बोधकारोऽहम् ।

कुब्जक सस्थान की हे प्रभु प्रकृति आज मै नाश करू ।
प्रभु सस्थान नाम कर्म के छह भेदो को नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३२॥

ॐ ह्री कुब्जक सस्थान प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३३)

३३ ॐ ह्री वामनसस्थाननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

उत्तुंगज्ञानस्वरूपोऽहम् ।

वामन सस्थान की हे प्रभु प्रकृति आज मैं नाश करू ।
प्रभु सस्थान नाम कर्म के छह भेदो को नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३३॥

ॐ ह्री वामन सस्थान प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

मिला सुअवसर इसने पाया निज निश्चय भूतार्थ है ।
सम्यक् दर्शन पूर्वक पाया परम शुद्ध परमार्थ है ॥

(३४)

३४ ॐ ह्री हुडकसस्थाननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

चित्सौंदर्यस्वरूपोऽहम् ।

हुण्डक सस्थान की हे प्रभु प्रकृति आज मै नाश करू ।
प्रभु सस्थान नाम कर्म के छह भेदो को नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३४॥

ॐ ह्री हुन्डक सस्थान प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३५)

३५ ॐ ह्री वज्रवृषभनाराचसहनननामकर्मरहितनिर्नाणस्वरूपाय नम ।

अनन्तशक्तिसंपन्नोऽहम् ।

सहनन नाम कर्म के छह भेदो की सत्ता नाश करू ।
वज्र वृषभ नाराच सहनन का भी पूर्ण विनाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३५॥

ॐ ह्री वज्र वृषभ नाराच सहनन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३६)

३६ ॐ ह्री वज्रनाराचसहनननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

चितिशक्तिसंपन्नोऽहम् ।

तथा वज्र नाराच सहनन की मै प्रकृति नाश करू ।
सहनन नाम कर्म छह भेदो की सत्ता मै नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३६॥

ॐ ह्री वज्र नाराच सहनन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

अब यह भवघट एक समय मे फोडेगा निज शक्ति से ।
भव समुद्र के पार जायगा रत्नत्रय की भक्ति से ॥

(३७)

३७ ॐ ह्री नाराचसहनननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

जीवत्वशक्तिसंपन्नोऽहम् ।

प्रभु नाराच सहनन की भी प्रकृति प्रसिद्ध विनाश करू ।
सहनन नाम कर्म छह भेदो की सत्ता मै नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३७॥

ॐ ह्री नाराच सहनन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३८)

३८ ॐ ह्री अर्द्धनाराचसहनननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ज्ञानशक्तिसंपन्नोऽहम् ।

प्रकृति अर्ध नाराचसहनन का भी पूर्ण विनाश करू ।
सहनन नाम कर्म छह भेदो की सत्ता मै नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥३८॥

ॐ ह्री अर्ध नाराच सहनन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(३९)

३९ ॐ ह्री कीलितसहनननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

प्रभुत्वशक्तिसंपन्नोऽहम् ।

अब कीलित सहनन प्रकृति का हे स्वामी मै नाश करू।
सहनन नाम कर्म छह भेदो की सत्ता मै नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मैं नाथ समूल॥३९॥

ॐ ह्री कीलित सहनन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

ज्ञान भावना कभी न होती मुक्ति किसी भी प्राणी की ।
ज्ञान भावना बिना तीर्थ व्रत बुद्धि भ्रमित अज्ञानी की ॥

(४०)

४०. ॐ ह्री असप्राप्तसृपाटिकासहननामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

विभुत्वशक्तिस्वरूपोऽहम् ।

असप्राप्ता सृपाटिका सहनन प्रकृति का नाश करू ।
सहनन नाम कर्म छह भेदो की सत्ता मै नाश करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतियां है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥
प्रथम द्वितिय तृतिय काल मे प्रथम सहन होता ।
काल चतुर्थम छह प्रकार का सहनन सदा ही तो होता॥
पचम काल तीन सहनन छठे एक सहनन प्रसिद्ध ।
विकल त्रय चौ इन्द्रिय इक इक एकेन्द्रिय सहनन सुसिद्ध॥

ॐ ह्री असप्राप्ता सृपाटिका सहनन प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४१)

४१ ॐ ह्री नरकगत्यानुपूर्वीकर्मरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

ज्ञानाकारस्वरूपोऽहम् ।

आनुपूर्व्य की चार प्रकृतियॉ हे प्रभु नाश करूगा मै ।
नरक गत्यानुपूर्व प्रकृति को निश्चित नाश हरूँगा मै ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४१॥

ॐ ह्री नरक गत्यानुपूर्वक प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४२)

४२ ॐ ह्री तिर्यचगत्यानुपूर्वीकर्मरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

चैतन्याकारस्वरूपोऽहम् ।

आनुपूर्व्य की चार प्रकृतियॉ हे प्रभु नाश करूगा मै ।
तिर्यग्गत्यानुपूर्व प्रकृति को निश्चित नाथ हरूगा मै ॥

निज के लिए शरण निज ही है अन्य न कोई शरण कही।
निज को छोड नही पडते है निज ज्ञानी के चरण कही॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४२॥

ॐ ह्री तिर्यग्गत्यानुपूर्व प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४३)

४३ ॐ ह्री मनुष्यगत्यानुपूर्वीकर्मरहितनिर्नाणस्वरूपाय नम ।

अखंडाकारोऽहम् ।

आनुपूर्व्य की चार प्रकृतियॅा हे प्रभु नाश करूगा मै ।
मनुष्यगत्यानुपूर्व प्रकृति को निश्चित नाथ हरूगा मै ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४३॥

ॐ ह्री मनुष्यगत्यानुपूर्व प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४४)

४४ ॐ ह्री देवगत्यानुपूर्वीकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

एकाकारोऽहम् ।

आनुपूर्व्य की चार प्रकृतियॅा हे प्रभु नाश करूगा मै ।
देवगत्यानुपूर्व की प्रकृति को निश्चित नाथ हरूगा मै ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४४॥

ॐ ह्री देवगत्यानुपूर्व प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४५)

४५ ॐ ह्री मृदुस्पर्शनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निर्मदज्ञानस्वरूपोऽहम् ।

अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब करूँ विनाश ।
कोमल प्रकृति विनाश करू मै ज्ञान भाव का करू प्रकाश॥

एक त्याग में ही शिवसुख है एक ग्रहण में ही है दुख ।
सर्व द्रव्य के पर भावो का त्यागी ही पाता है सुख ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४५॥

ॐ ह्री कोमल स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४६)

४६ ॐ ह्री कर्कशस्पर्शनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निरुत्सेकस्वरूपोऽहम् ।

प्रकृति कठोर विनाश करू मै ज्ञान भाव का करू प्रकाश।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब कर दू नाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४६॥

ॐ ह्री कठोर स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४७)

४७ ॐ ह्री गुरुस्पर्शनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

शाश्वतशिवोऽहम् ।

भारी या गुरु प्रकृति नाश कर ज्ञान भाव का करू प्रकाश।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब कर दू नाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४७॥

ॐ ह्री गुरु स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४८)

४८ ॐ ह्री लघुस्पर्शनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

मंगलोऽहम् ।

लघु या हलकी प्रकृति नाश कर ज्ञान भाव का करू प्रकाश ।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब कर दू नाश ॥

जहाँ न आशा तथा प्रतीक्षा तृष्णा से कुछ हो संबंध ।
सर्वेच्छा से रहित आत्मा ही होता है सदा अबध ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४८॥

ॐ ह्री लघु स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(४९)

४९ ॐ ह्री शीतस्पर्शनामकर्मरहितास्पृष्टस्वरूपाय नम ।

शांतस्पर्शोऽहम् ।

शीत प्रकृति स्पर्श कर्म की निज बल से मैं करू विनाश।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब करदू नाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥४९॥

ॐ ह्री शीत स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५०)

५० ॐ ह्री उष्णस्पर्शनामकर्मरहितस्पृष्टस्वरूपाय नम ।

ज्ञानस्पर्शोऽहम् ।

उष्ण प्रकृति स्पर्श कर्म की निज बल से मै करू विनाश।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब कर दू नाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५०॥

ॐ ह्री उष्ण स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५१)

५१ ॐ ह्री स्निग्धस्पर्शनामकर्णरहितास्पृष्टस्वरूपाय नम ।

निस्स्नेहस्वरूपोऽहम् ।

प्रभु स्निग्ध स्पर्श कर्म की निज बल से मै करू विनाश।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब करदू नाश ॥

भोग योग मे शान्ति नही है है शुद्धोपयोग में शान्ति ।
मैं ही शाश्वत शान्ति सिधु हू पर मे खोजूँ तो है भ्रान्ति॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५१॥

ॐ ह्री स्निग्ध स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५२)

५२ ॐ ह्री रूक्षस्पर्शनामरहितास्पृष्टस्वरूपाय नम ।

अबद्धोऽहम् ।

रूक्ष प्रकृति स्पर्श कर्म की निज बल से मै करू विनाश।
अब स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद सब करदू नाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५२॥

ॐ ह्री रूक्ष स्पर्श प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५३)

५३ ॐ ह्री कषायरसनामकर्मरहितारसस्वरूपाय नम ।

चैतन्यामृतरसोऽहम् ।

कषाय प्रकृति है नाम कर्म की इसका भी अब करू विनाश।
अब रस नाम कर्म की पाचो प्रकृति नाथ सब करदू नाश॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५३॥

ॐ ह्री कषाय रस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५४)

५४ ॐ ह्री आम्लरसनामकर्मरहितारसस्वरूपाय नम ।

शिवामृतरसोऽहम् ।

आम्ल प्रकृति है नाम कर्म की इसका भी अब करू विनाश।
अब रस नाम कर्म की पाचो प्रकृति नाथ सब करदू नाश॥

निष्परिग्रही साधु बन कर ही बन सकता हूँ मुनि निर्ग्रंथ।
मुक्ति प्राप्ति का यह उपाय ही एक मात्र है शिवसुख पथ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हैं तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५४॥

ॐ ह्री आम्ल रस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५५)

५५ ॐ ह्री मधुररसनामकर्मरहितारसस्वरूपाय नम ।

बोधसुधारसोऽहम् ।

मधुर प्रकृति है नाम कर्म की इसका भी अब करू विनाश।
अब रस नाम कर्म की पाचो प्रकृति नाथ सब कर दू नाश॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५५॥

ॐ ह्री मधुर रस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५६)

५६ ॐ ह्री तिक्तरसनामकर्मरहितारसस्वरूपाय नम ।

चैतन्यरसरसायनस्वरूपोऽहम् ।

तिक्त प्रकृति रस नाम कर्म की इसका भी मै करू विनाश।
अब रस नाम कर्म की पॉचो प्रकृति नाथ सब कर दू नाश॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हैं तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५६॥

ॐ ह्री तिक्त रस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५७)

५७ ॐ ह्री कटुरसनामकर्मरहितारसस्वरूपाय नम ।

ज्ञानरसोऽहम् ।

कटुक प्रकृति रस नाम कर्म की इसकी भी मै करू विनाश।
अब रस नाम कर्म की पाचो प्रकृति नाथ सब कर दू नाश॥

मूर्छा भाव नही है मुझमे सर्व शल्य से हू निशल्य ।
आत्म भावना के अतिरिक्त नही है मुझमें कोई शल्य ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५७॥

ॐ ह्री कटुक रस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५८)

५८ ॐ ह्री दुर्गन्धनामकर्मरहितागन्धस्वरूपाय नम ।

चिद्गन्धोऽहम् ।

गध प्रकृति दोनो ही नाशू पाऊ निर्मल आत्म प्रकाश ।
इस दुर्गध प्रकृति को नाशू पाऊ मै निर्ग्रंथ निवास ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हे तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥५८॥

ॐ ह्री दुर्गंध प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(५९)

५९ ॐ ह्री सुगन्धनामकर्मरहितागन्धस्वरूपाय नम ।

ज्ञानगन्धोऽहम् ।

नाथ सुगध प्रकृति को नाशू पाऊ निर्मल आत्म प्रकाश ।
गध प्रकृति दोनो ही नाशू पाऊ मै निर्ग्रंथ निवास ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हे तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल।५९॥

ॐ ह्री सुगध प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६०)

६० ॐ ह्री नीलवर्णनामकर्मरहितावर्णस्वरूपाय नम ।

चिद्वर्णोऽहम् ।

नील वर्ण की प्रकृति विनाशू पाऊ उज्ज्वल ज्ञान पकाश।
वर्ण प्रकृति है नाम कर्म की पाचो का मै करू विनाश ॥

जिसके मन मे अभिलाषा होती है उसको शुद्धि नहीं ।
अबिलाषा वालो को होती शुद्ध भाव की वृद्धि नहीं ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६०॥

ॐ ह्री नील वर्ण प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६१)

६१ ॐ ह्री शुक्लवर्णनामकर्मरहितावर्णस्वरूपाय नम ।

अरूपचित्स्वरूपोऽहम् ।

शुक्ल वर्ण की प्रकृति विनाशू पाऊ उज्ज्वल ज्ञान प्रकाश।
वर्ण प्रकृति है नाम कर्म की पाचो का मै करू विनाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६१॥

ॐ ह्री शुक्ल वर्ण प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६२)

६२ ॐ ह्री कृष्णवर्णनामकर्मरहितावर्णस्वरूपाय नम ।

ज्ञानवर्णोऽहम् ।

कृष्ण वर्ण की प्रकृति विनाशू पाऊ उज्जवल ज्ञान प्रकाश।
वर्ण प्रकृति है नाम कर्म की पाचो का मै करू विनाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६२॥

ॐ ह्री कृष्ण वर्ण प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६३)

६३ ॐ ह्री रुधिरवर्णनामकर्णरहितावर्णस्वरूपाय नम ।

ब्रह्मवर्णोऽहम् ।

रक्त वर्ण की पकृति विनाशू पाऊ उज्जवल ज्ञान प्रकाश।
वर्ण प्रकृति है नाम कर्म की पाचो का मै करू विनाश ॥

भोग तृप्ति तृष्णा आशा अज्ञान विपत्ति नही है लेश ।
बधन से मै सदा रहित हूँ मुक्त स्वरूपी मेरा वेश ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६३॥

ॐ ह्री रक्त वर्ण प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६४)

६४ ॐ ह्री पीतवर्णनामकर्मरहितावर्णस्वरूपाय नम ।

शिववर्णोऽहम् ।

पीत वर्ण की प्रकृति विनाशू पाऊ उज्जवल ज्ञान प्रकाश।
वर्ण प्रकृति है नाम कर्म की पाचो क्रम मै करू विनाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६४॥

ॐ ह्री पीत वर्ण प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६५)

६५ ॐ ह्री अगुरुलघुनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

साम्यचित्स्वरूपोऽहम् ।

अगुरु लघु नाम कर्म की प्रकृति विनाशू हे भगवान ।
भारी अथवा हलका नही कभी भी होऊ रहू समान ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६५॥

ॐ ह्री अगुरु लघु नाम प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६६)

६६ ॐ ह्री उपघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अक्षरचित्स्वरूपोऽहम् ।

घातक अगोपाग न पाऊ मै उपघात प्रकृति नाशू ।
कर्मोदय मे जाग्रत रहकर आत्म तत्त्व निज प्रकाशू ॥

शुद्ध आत्मा की उपासना ही है शिव कल्याणमयीी ।
यहीं मुक्ति का मार्ग शाश्वत यह शाश्वत निर्वाण मयी ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६६॥

ॐ ह्री उपघात अगोपाग प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६७)

ॐ ह्री परघातनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अवध्यस्वरूपोऽहम् ।

पर की घातक अगोपांग प्रकृति परघात विनाश करूँ ।
कर्मोदय मे जाग्रत रहकर आत्म तत्त्व मे वास करू ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६७॥

ॐ ह्री परघात अगोपाग प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६८)

६८ ॐ ह्री आतपनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ज्ञानाभास्करोऽहम् ।

आतप प्रकृति उदय से होती है शरीर मे आतप प्राप्ति ।
इसका नाश करू मै स्वामी परम शान्ति की हो उर व्याप्ति॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६८॥

ॐ ह्री आतप नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(६९)

६९ ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ज्ञानोद्योतस्वरूपोऽहम् ।

तन उद्योत प्रभा दाता है यह उद्योत नाम का कर्म ।
इसे विनाशू आत्म ध्यान से हो जाऊंगा मै निष्कर्म ॥

स्वपर विवेक सिद्धि द्वारा उपलब्ध हुआ शुद्धात्म स्वरूप।
समकित होते ही जड तन का लखा अचेतन नश्वर रूप॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥६९॥

ॐ ह्री उद्योत नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७०)

६८ ॐ ह्री उच्छ्वासनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपनाय नम ।

चैतन्यप्राणस्वरूपोऽहम् ।

कर्म उदय से इस शरीर मे होता है सदेव उच्छवास ।
यह उच्छवास प्रकृति मे नाशू पाऊ अपना ज्ञान प्रकाश ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मे नाथ समूल॥७०॥

ॐ ह्री उच्छवास नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७१)

७१ ॐ ह्री प्रशस्तविहायोगतिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अचलबोधोऽहम् ।

कर्मोदय से होता है आकाश गमन प्रशस्त प्रभो ।
प्रकृति विहायोगति प्रशस्त का अव तो नाशू महा विभो ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू म नाथ समूल॥७१॥

ॐ ह्री प्रशस्त विहायोगति पकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७२)

७२ ॐ ह्री अप्रशस्तविहायोगतिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निजाक्षयधामोऽहम् ।

कर्मोदय मे अप्रशस्त आकाश गमन होता स्वामी ।
अप्रशस्त प्रकृति विहायोगति को नाशू हे स्वामी ॥

स्वत सिद्ध चैतन्य त्रिकाली ध्रुव चैतन्यात्मक निज द्रव्य।
मोहाकुर विनष्ट होते ही प्रगट हुआ मगलमय भव्य ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७२॥
ॐ ह्री अप्रशस्त विहायोगति प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७३)

७३ ॐ ह्री प्रत्येकनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निजभगवानोऽहम् ।

कर्मोदय से इक शरीर का स्वामी एक जीव होता ।
यह प्रत्येक प्रकृति क्षय करके प्राणी पूर्ण सुखी होता ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७३॥
ॐ ह्री प्रत्येक नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७४)

७४ ॐ ह्री साधारणनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

शाश्वतचित्स्वरूपोऽहम् ।

कर्मोदय मे इस शरीर के स्वामी बहुत जीव होते ।
साधारण शरीर प्रकृति यह क्षय कर जीव सुखी होते ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७४॥
ॐ ह्री साधारण शरीर नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७५)

७५ ॐ ह्री त्रसनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ज्ञानस्वरूपोऽहम् ।

कर्मोदय से द्वय त्रय चऊ पचेन्द्रिय मे होता है जन्म ।
यह त्रस प्रकृति विनाश करू मै फिर न कभी लू हे प्रभु जन्म॥

उपादेय है वीतराग चारित्र मुक्ति सुख दाता है ।
यह सराग चारित्र हेय है भवदधि बीच डुबाता है ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७५॥

ॐ ह्री त्रस प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७६)

७६ ॐ ह्री स्थावरनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अक्षयबोधस्वरूपोऽहम् ।

कर्मोदय से स्थावर तन धारी हो जाता प्राणी ।
यह स्थावर प्रकृति विनाशू हो जाऊ मै भी ज्ञानी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७६॥

ॐ ह्री स्थावर नाम प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७७)

७७ ॐ ह्री सुभगनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ब्रह्मसुभगोऽहम् ।

कर्म उदय से जीव दूसरों को होता अपने प्रति राग ।
सुभग प्रकृति यह क्षयकर डालू करू आत्मा से अनुराग॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७७॥

ॐ ह्री सुभग नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७८)

७८ ॐ ह्री दुर्भगनामकर्मरहितशिवस्वरूपाय नम ।

ज्ञानसुभगोऽहम् ।

कर्म उदय से अन्य जीव अपने प्रति करते रहते द्वेष ।
नाम कर्म की दुर्भग प्रकृति विनाशू करू बन निर्ग्रंथेश ॥

मात्र आत्मा के अनुभव से ही मिलता है सिद्ध स्वरूप ।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली का ही खिलता है आनद अनूप ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७८॥

ॐ ह्री दुर्भग नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(७९)

७९ ॐ ह्री सुस्वरनामकर्मरहितनर्नामस्वरूपाय नम ।

भाषावर्गणारहितोऽहम् ।

कर्म उदय से मधुर सुरी मृदु स्वर हो जाता है स्वामी ।
नाम कर्म की सुस्वर प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥७९॥

ॐ ह्री सुस्वर नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८०)

८१ ॐ ह्री दु स्वरनामकर्मरहितचैतन्यस्वरूपाय नम ।

अशब्दोऽहम् ।

कर्म उदय से कटु कठोर स्वर हो ही जाता है स्वामी ।
नाम कर्म की दुस्वर प्रकृति विनाश करू अन्तर्यामी ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८०॥

ॐ ह्री दुस्वर नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८१)

८१ ॐ ह्री शुभनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

शुद्धचित्स्वरूपोऽहम् ।

कर्म उदय से तन के अबयव सुन्दर होते है स्वामी ।
नाम कर्म की यही शुभ प्रकृति क्षय करना है हे स्वामी ॥

एक शुद्ध जीवास्तिकाय ध्रुव निज शुद्धात्म द्रव्य शिवरूप।
निज शुद्धात्म तत्त्व अति पावन निज शुद्धात्म पदार्थ अनूप॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८१॥

ॐ ह्री शुभ नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८२)

८२ ॐ ह्री अशुभनामकर्मरहितानदस्वरूपाय नम ।

सहजानंदोऽहम् ।

कर्म उदय से तन के अवयव होते कभी नहीं मनहर ।
नाम कर्म की अशुभ प्रकृति मुझको क्षय करना है सत्वर॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८२॥

ॐ ह्री अशुभ नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८३)

८३ ॐ ह्री सूक्ष्मनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

अविनाशस्वरूपोऽहम् ।

कर्म उदय से कही न रुकने वाला तन होता है प्राप्त ।
सूक्ष्म शरीर नाम कर्म की प्रकृति विनाशू हे प्रभु आप्त ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८३॥

ॐ ह्री सूक्ष्म नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८४)

८४ ॐ ह्री बादरनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

चित्कलास्वरूपोऽहम् ।

कर्म उदय से बादर या स्थूल देह हो जाती प्राप्त ।
बादर शरीर नाम कर्म की प्रकृति विनाशू हे जिन आप्त॥

यही विश्व मे उपादेय है अन्य सभी कुछ तो है हेय ।
उपादेय निज का आश्रय ले यही ज्ञान ज्ञाता है ज्ञेय ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतियां है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मैं नाथ समूल॥८४॥

ॐ ह्रीं बादर शरीर नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवंताय अर्घ्य नि ।

(८५)

८५ ॐ ह्री पर्याप्तिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

भरितावस्थोऽहम् ।

कर्म उदय से अपने योग्य सदा पर्याप्ति पूर्ण होती ।
यह पर्याप्ति नाम कर्म की प्रकृति ज्ञान से क्षय होती ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८५

ॐ ह्री पर्याप्ति नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८६)

८६ ॐ ह्री अपर्याप्तिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

परिपूर्णोऽहम् ।

कर्म उदय से अपर्याप्ति परिपूर्ण नही होने पाती ।
नाम कर्म की अपर्याप्ति प्रकृति ज्ञान से क्षय पाती ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८६॥

ॐ ह्री अपर्यापिर्त नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(८७)

८७ ॐ ह्री स्थिरनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निष्कंपोऽहम् ।

कर्म उदय से सभी धातु उपधातु देह मे थिर रहती ।
स्थिर नाम कर्म की प्रकृति क्षीण आत्म बल से होती ॥

निज परमात्म द्रव्य का लक्षण शुद्ध पारिणामिक निज भाव ।
अजर अमर अविकल अविनश्वर एक मात्र निज शुद्ध स्वभाव॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हैं तिरानवें भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मैं नाथ समूल॥८७॥

ॐ ह्रीं स्थिर नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्यं नि ।

(८८)

८८ ॐ ह्री अस्थिरनामकर्मरहितानदस्वरूपाय नम ।

अकंपोऽहम् ।

कर्म उदय से सभी धातु उपधातु न तन मे थिर रहती।
अस्थिर नाम कर्म की प्रकृति नाश आत्म बल से होती ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८८॥

ॐ ह्रीं अस्थिर नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्यं नि ।

(८९)

८९ ॐ ह्रीं आदेयनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

ब्रह्मतेजोऽहम् ।

कर्म उदय से इस शरीर मे सुन्दर प्रभा प्रकट होती ।
नाम कर्म आदेय प्रकृति यह क्षीण आत्म बल से होती ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥८९॥

ॐ ह्री आदेय नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(९०)

९० ॐ ह्री अनादेयनामकर्मरहितज्ञानतेजाय नम ।

चितेजोऽहम् ।

कर्म उदय से इस शरीर में प्रभा नहीं होने पाती ।
नाम कर्म की अनादेय प्रकृति स्वबल से क्षय पाती ॥

पूर्ण शक्ति सम्पन्न आत्मा पूर्ण ज्ञान सुखमय अनुरूप ।
एकमात्र परमात्म तत्त्व ही मगल सुखदाता शिवभूप ॥

नाम कर्म की सर्व प्रकृतियां हैं तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मैं नाथ समूल॥९०॥
ॐ ह्रीं अनादेय नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(९१)

९१ ॐ ह्री यश कीर्तिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

सदैकज्ञानरूपोऽहम् ।

कर्म उदय से जग मे बहुत प्रशसा होती प्राणी की ।
यश कीर्ति यह प्रकृति विनाशू शरण प्राप्त हो ज्ञानी की॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया हैं तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥९१॥
ॐ ह्री यश कीर्ति नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(९२)

९२ अयश कीर्तिनामकर्मरहितनिर्नाणस्वरूपाय नम ।

नित्यशिवोऽहम् ।

कर्म उदय से जग मे निन्दा होती है इस प्राणी की ।
अयश कीर्ति यह प्रकृति विनाशू शरण प्राप्त कर ज्ञानी की॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥९२॥
ॐ ह्री अय कीर्ति नाम कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(९३)

९३ ॐ ह्रीं तीर्थंकरप्रकृतिनामकर्मरहितनिर्नामस्वरूपाय नम ।

निरुपाधिब्रह्मोऽहम् ।

प्रभु तीर्थंकर नाम कर्म से तीर्थंकर पद होता प्राप्त ।
वह तीर्थंकर प्रकृति विनाशू सिद्ध स्वपद हो मुझको प्राप्त॥

एक आत्मा का अनुभव ही करते हैं सिद्धात्मा ।
निरावरण निर्दोष निराकुल ज्ञान मूर्ति शुद्धात्मा ॥

जब तक तीर्थंकर पद रहता सिद्ध दशा न प्राप्त होती ।
चौ अघातिया शेष अत सिद्धत्व प्रभा न व्याप्त होती ॥
नाम कर्म की सर्व प्रकृतिया है तिरानवे भव दुख मूल ।
निज पुरुषार्थ शक्ति से सबको नाश करू मै नाथ समूल॥९३॥

ॐ ह्री तीर्थकर नाम प्रकृति विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

महाअर्घ्य

छद ताटक

भव अटवी क अधियारे मे तुम दीपक मेरे स्वामी ।
मुझे अधोगतियो से आप बचाते हो अन्तर्यामी ॥
मन के अंधियारे को क्षय कर पूर्ण प्रकाश आप देते ।
खोटे कृत्यो के करने से सदा रोकते प्रभु नामी ॥
मेरी नैया भव सागर मे डूब रही है त्रिभुवन पति ।
मुझे उबारो आप कृपा से बन जाऊँ मै निष्कामी ॥
अजर अमर अविकल पद पाऊ नाथ मुझे ऐसा वर दो।
प्रभो आप को जपूॅ निरतर बन जाऊ मै ध्रुवधामी ॥
नाम कर्म का नाश करू मै नाथ मुझे अपना बल दो ।
मोक्षमार्ग पर चलू निरतर हो जाऊ शिवपथ गामी ॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू आत्म कल्याण ।
नाम कर्म का नाश कर पाऊ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो महाअर्घ्य नि ।

जयमाला

वीरछंद

रूप गध रस पर्श सहित पुदगल परमाणु विचित्र स्वरूप।
इससे भिन्न आत्मा अपना एक मात्र चेतन चिद्रूप ॥

स्वपर भेद विज्ञान पूर्वक हो जाते प्रशमात्मा ।
एक आत्मा का आश्रय ले बन जाते परमात्मा ॥

पूर्णानंद नाथ तू ही है ज्ञानानंद स्वरूप महान ।
गुण अनत पति शक्ति अनंतों सहित स्वयभू निज भगवान॥
सर्वज्ञो की बात मान ले उर अनत पुरुषार्थ जगा ।
मोह राग द्वेषादि विकारी भावों को अब त्वरित भगा ॥
निज आनदनाथ परमात्मा की तू बात ध्यान से सुन ।
यदि आसन्न भव्य है तो तू बन ले अभी मोक्ष भाजन ॥
अमृत स्वरूपी निज ज्ञायक की प्रतीति ही शिव सुखदायी।
पर ज्ञेयो की जो प्रतीति है वह सदैव भव दुखदायी ॥
पर ज्ञेयो के जगल मे मत फसना मेरे चेतन लाल ।
अपना ज्ञायक रूप निरखना जो है पावन परम विशाल॥
दृष्टि अखड बना ले अपनी मूल मार्ग पर चलता जा ।
श्री जिनवाणी हृदयगम कर मोह राग को दलता जा ॥
है अनादि से ही पर में एकत्व बुद्धि इस प्राणी की ।
अहंकार ममकार मयी है मिथ्यामति अज्ञानी की ॥
श्रद्धा गुण का पता नहीं है हृदय दुराग्रह से है पूर्ण ।
निज स्वरूप का ज्ञान नहीं है सदा कदा ग्रह से आपूर्ण॥
नाम कर्म का त्वरित नाश कर शीघ्र आत्म सुख पाना है।
अवगाहन गुण अभी प्रगटकर अगर न भव दुख पानाहै॥

ॐ ह्री नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य नि ।

आशीर्वाद :

दोहा

नाम कर्म को क्षय करू पाऊ पद निर्वाण ।
अपने ही बल से करू मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वाद :

पर पदार्थ से पूर्ण भिन्न है अपना सदा निजात्मा ।
ज्ञान शरीरी ज्ञान सिंधु है ज्ञान मूर्त्ति ज्ञानात्मा ॥

ॐ

पूजन क्रमांक ११

गोत्र कर्म दहन कर्त्ता श्री सिद्ध भगवंत पूजन

स्थापना

छंद कुन्डलिया

गोत्र कर्म को नाश कर हुए सिद्धभगवंत ।
अगुरुलघु गुण प्राप्त कर हुए मुक्ति के कत ॥
हुए मुक्ति के कत अनतो गुण प्रगटाए ।
जितने दुर्गुण थे स्वामी सब ही विघटाए ॥
शुद्ध आत्म बल से प्रगटाया आत्म धर्म को ।
मैं भी नाश करू निज बल से गोत्र कर्म को ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद विधाता

नीर सम्यक् हृदय लाकर भावना शुद्ध निज भाऊ ।
जन्म मरणादि रोगो को नाशकर शान्ति सुख पाऊ ॥
गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरु लघु गुण सदा ध्याऊ ।
परावर्त्तन पच क्षय हित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

भवातप नाश करने को आपकी शरण आया हूँ ।
सहज चदन भावना मय हृदय मे आज लाया हूँ ॥

पूर्ण ज्ञानघन परम औन्द्रिय है सबका ही आत्मा ।
दर्शन भूत त्रिकाली शाश्वत निर्मलात्मा आत्मा ॥

गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊं ।
परावर्त्तन पंच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥

ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय ससारताप विनाशनाय चदन नि. ।

स्वपद अक्षय प्रगट कर लू करू हे नाथ ऐसा श्रम ।
भेट अक्षत करू उज्ज्वल भावना मय परम उत्तम ॥
गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊ ।
परावर्त्तन पच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥

ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

शील गुण पुष्प की पावन सुरभि है पूर्ण गुणकारी ।
काम की व्याधि नाशू मै बनूं हे नाथ अविकारी ॥
गोत्र दोनो प्रकृति नाशूं अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊं ।
परावर्त्तन पंच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊं ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधा की वेदना क्षय कर अनाहारी स्वपद पाऊं ।
भेट नैवेद्य भावो के करू निज आत्मा ध्याऊं ॥
गोत्र दोनों प्रकृति नाशूं अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊ ।
परावर्त्तन पंच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥

ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

ज्ञानमय दीप की ध्रुव ज्योति पाने को शरण आया ।
घोर मिथ्यात्वतम नाशू यही दृढ ध्येय उर भाया ॥
गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊ ।
परावर्त्तन पच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

ध्यानमय धूप लाया निज परम महिमामयी पावन ।
कर्म वसु नाश करने का मिला अवसर सुमन भावन ॥

वीतराग वाणी सुनते ही मिट जाती अनादि की भूल ।
देवादिक मे आत्म बुद्धि रूपी विभ्रम ही दुख का मूल ॥

गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊं ।
परावर्त्तन पच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥
ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

साम्यभावी स्वफल पाने करू शुद्धात्म का चिन्तन ।
मोक्ष फल नाथ पाऊ मै हरूँ ससार के बधन ॥
गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊ ।
परावर्त्तन पच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥
ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

अर्घ्य उत्तम सजाऊ मै ज्ञान के गीत गाऊ मै ।
स्वपद पाऊ अनर्घ्य अपना लौट भव मे न आऊँ मै ॥
गोत्र दोनो प्रकृति नाशू अगुरुलघु गुण सदा ध्याऊ ।
परावर्त्तन पच क्षय सहित सिद्ध प्रभु को सदा ध्याऊ ॥
ॐ ह्री गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

अर्घ्यावलि

दोहा

गोत्र कर्म की प्रकृतिया ऊँचनीच दो भेद ।
शुद्ध आत्मा तो सदा गोत्र विहीन अभेद ॥

पुष्पाजलि

(१)

१ ॐ ह्री उच्चगोत्रकर्मरहितचित्स्वरूपाय नम ।

चित्कूलोऽहम् ।

वीरछंद

गोत्र कर्म की उच्च प्रकृति से होती है सुर नर पर्याय ।
दोनो ही पर्याय दुखमयी शिवसुख बाधक बहु दुखदाय ॥

आत्म ज्ञान करने का तो तू यत्न नहीं करता लवलेश ।
जप तप व्रत का ही उद्यम करके पाता है भव भव क्लेश॥

गोत्र कर्म संपूर्ण नाश कर दोनों प्रकृति विनाशूंगा ।
अगुरुलघुत्व स्वगुण पाऊंगा निज शुद्धात्म प्रकाशूंगा ॥१॥

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म प्रकृति विनाशाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

(२)

२ ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मरहितज्ञानस्वरूपाय नम ।

ज्ञानकूलोऽहम् ।

गोत्र कर्म की नीच प्रकृति से तिर्यंच नरक दुख की दाता।
इसे नष्ट करना है मुझको यह पचम गति की घाता ॥
गोत्र कर्म सपूर्ण नाश कर दोनो प्रकृति विनाशूगा ।
अगुरुलघुत्व स्वगुण पाऊगा निज शुद्धात्म प्रकाशूंगा ॥२॥

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म प्रकृति विनाशाय श्री सिद्ध भगवताय अर्घ्य नि ।

महाअर्घ्य

छंद ताटंक

निज् स्वाभिवक दशा प्राप्त करने का ही उद्यम करना ।
दृष्टि द्रव्य निज पर ही रखना सकल विभाव भाव हरना॥
तुम चैतन्य ऋद्धि के स्वामी निरावरण निर्दोष त्रिकाल ।
निर्विकल्प सुख के सागर हो पर से निस्पृह श्रेष्ठ विशाल॥
अब निर्मल चैतन्य भावना हुई फलवती सौख्यापूर्ण ।
काललब्धि चरणो मेरे आयी लेकर शाश्वत गुण आपूर्ण॥
ज्ञान स्वभाव दृष्टि में लेकर केवलज्ञान प्रगट कर लो ।
समयसार का सार प्राप्त कर भव सागर को क्षय कर लो॥
है चेतन चिच्चमत्कार की महिमा ही जग में उत्तम ।
इसको ही पाने का पावनतम पुरुषार्थ श्रेष्ठ उद्यम ॥
गोत्र कर्म क्षय करना है तो सम्यक् पथ पर आ जाओ।
दोनो गोत्र प्रकृतिया क्षय कर देह रहित अब हो जाओ॥

आत्म भावना से सुदूर रह राग द्वेष में रहता लीन ।
विषयातीत अतीन्द्रिय सुख की छाया से भी रहा विहीन॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू गोत्र कर्म हर नाथ ।
निज ज्ञायक का हे प्रभो तजू न पल भर साथ ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय महाअर्घ्य नि ।

जयमाला

छंद मानव

मिथ्यात्व मोह का झोका मुझको उखाड देता है ।
मैं इससे लडता हूँ तो मुझको पछाड देता है ॥
मोहादि विकारी भावो की छाया मुझको भायी ।
चिर विषय कषाय वासना मेरे अतर मे छायी ॥
सद्‌गुरु ने किया जाग्रत तब ज्ञान भाव उर आया ।
मिथ्यात्व मोह को क्षय कर मैने समकित उपजाया ॥
उत्तम स्वभाव का उपवन ही मुझको आज सुहाया ।
फिर स्वपर विवेक पूर्वक मै तो शिवपथ पर आया ॥
गुण मणियॉ सहज अनतो स्वयमेव निकट आयी है ।
विरुदावलियो सिद्धो की मैने सविनय गायीं है ॥
मै सिद्ध बनूगा निश्चित संदेह नही है मन मे ।
विश्वास जगा है भीतर आया हूँ निज उपवन मे ॥
आनद अतीन्द्रय धारा पायी है अन्तर्यामी ।
सुख सादि अनत मिला हो मानो हे मेरे स्वामी ॥
अब तो मेरे अतर में निज ज्ञान चेतना आयी ।
उपयोग हुआ है निर्मल निज परिणति भी हर्षायी ॥
ज्ञायक स्वभाव पाते ही ज्ञानाम्बुज खिला अनूठा ।
मोहादि विकारी भावों का सर्व सैन्य दल रूठा ॥

पाप पुण्य फल भ्रमण चतुर्गति शिवपथ मे विभाव सब शूल।
निज स्वभाव परिणति के संग सग अब तो शुद्ध भाव में झूल॥

गगनांगन नाच रहा है आस्रव पर जय पायी है ।
संवर की पावन बेला हर्षित मैंने पायी है ॥
क्षय पूर्वबद्ध करने को निर्जरा नृत्य करती है ।
अपनी स्वशक्ति के द्वारा चारों कषाय हरती है ॥
अब मोक्ष तत्त्व आया है मुझको ही वन्दन करने ।
सब घाति अघाति नाश कर कर्मो के बधन हरने ॥
अब गोत्र कर्म नाशूगा भव दुख सब नाश करूगा ।
गुण अगुरुलघुत्व प्राप्त कर ससार समस्त हरूगा ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध भगवताय जयमाला पूर्णार्घ्यम् नि. ।

आशीर्वाद

दोहा

गोत्र कर्म का नाश कर पाऊ पद निर्वाण ।
अपने ही बल से करूं मुक्ति भवन निर्माण ॥

इत्याशीर्वाद :

भजन

अब बद करो भव का नगाडा इसने ही मुझे बिगाडा ॥
जब जब तैयार हुआ मैं, इसने ही मुझे पछाडा ॥
जब शुद्ध भाव संग लीना, उसने ही इसे उघाडा ॥
तब ज्ञान नेत्र से देखा, इसकी हरकत को ताडा ॥
यह मुझे भुलाने आया, मैंने तो इसे लताड़ा ॥
भव धूरा जो कि चढी थी मैंने पल्ले से झाडा ॥
मिथ्यात्व मोह दुखदायी इस बार सदा को काढा ॥

पुण्य राग से पंच महाव्रत का पालन भी है निस्सार ।
तत्त्व भावना पूर्वक निज अनुभव से क्षय होता संसार ॥

ॐ

पूजन क्रमांक १२

अंतराय कर्म दहन कर्त्ता श्री अरहंत पूजन

स्थापना

छंद कुन्डलिया

अन्तराय को नाशकर आप हुए अरहंत ।
पॉच प्रकृतियां नष्ट कर आप हुए भगवत ॥
आप हुए भगवत ज्ञान का आश्रय पाकर ।
समवशरण मे आप विराजे निज को ध्याकर ॥
निज को ध्याकर प्रगट किया अपने स्वभाव को ।
मै भी नाश करूगा स्वामी अतराय को ॥

ॐ ह्री अतराय कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठि अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री अतराय कर्म विनाशक श्री अरहंत परमेष्ठि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री अतराय कर्म विनाशक श्री अरहत परमेष्ठि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद रोला

जन्म जरा मरणादि रोग त्रय नाश करूगा ।
सहज भाव जल चरण चढा भव त्रास हरूगा ॥
अतराय की पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहत वीर्य गुणधारी संकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्री अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहंत भगवताय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

भव आताप विनाशक चंदन मैने पाया ।
हुआ सुनिश्चित भव का अत निकट अब आया ॥

ज्ञानामृत जल की धारा मिलते ही जाता सकल विकार।
फिर आनद अतीन्द्रिय रस की वर्षा होती मूसलधार ॥

अतराय की पांच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहंत वीर्य गुणधारी संकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

उज्ज्वल अक्षत धवल ज्ञानमय लाया स्वामी ।
अक्षय पद की प्राप्ति करूगा अन्तर्यामी ॥
अतराय की पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहत वीर्य गुणधारी सकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

पुष्प सुगधित भावमयी चरणो मे अर्पित ।
कामबाण की पीडा नाशूगा प्रभु निश्चित ॥
अतराय की पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहत वीर्य गुणधारी सकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय कामबाण विनाशनाय पुष्प नि ।

क्षुधा व्याधि हर सहज ज्ञान चरु मै लाऊगा ।
परम तृप्ति दायक शाश्वत पद निज पाऊगा ॥
अतराय की पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहत वीर्य गुणधारी सकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

महा मोहतम नाशक ज्योति दीप लाऊगा ।
स्वपर प्रकाशक केवल ज्ञान शीघ्र पाऊगा ॥
अतराय की पाच प्रकृतियो के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहत वीर्य गुणधारी संकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

ध्यान धूप की दिव्य गध प्रभु उर मे पायी ।
वसु कर्मो को क्षय करने की वेला आयी ॥

भव समुद्र पीछे रह जाता उड जाती कर्मो की धूल ।
भव रोगों की यह औषधि है कायर जीवों को प्रतिकूल ॥

अंतराय की पांच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहत वीर्य गुणधारी संकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि. ।

महामोक्ष फल के दाता तुम त्रिभुवन नामी ।
सहज भाव फल भेट करू हे अन्तर्यामी ॥
अंतराय की पाच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहंत वीर्य गुणधारी संकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

पद अनर्घ्य पाने का उत्तम अवसर पाया ।
निज गुण अर्घ्य बना स्वामी चरणो मे लाया ॥
अतराय की पाच प्रकृतियों के क्षय कर्त्ता ।
श्री अरहंत वीर्य गुणधारी सकट हर्त्ता ॥

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

अर्घ्यावलि

दोहा

अतराय की प्रकृतिया पाचो ही बलवान ।
शुक्ल ध्यान की शक्ति से हो जाती अवसान ॥

पुष्पांजलि

(१)

१ ॐ ह्री दाानांतरायकर्मरहितनिर्विघ्नस्वरूपाय नम ।

निरत्ययोऽहम् ।

प्रकृति प्रथम दानातराय करने देती है कभी न दान ।
नाश प्रकृति दानातराय को करू आत्मा का कल्याण ॥
अतराय की पाचों प्रकृति विनाशू करू आत्म कल्याण ।
निज अनत वीर्य गुण प्रगटा पाऊगा निज पद निर्वाण ॥१॥

निज चैतन्य चद्र की महिमा जिसके उर जाग्रत होती ।
केवल ज्ञान लब्धि भी आकर उसके चरणाम्बुज धोती ॥

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री अरहंत भगवताय अर्घ्य नि ।

(२)

२ ॐ ह्री लाभातरायकर्मरहितनिर्विघ्नस्वरूपाय नम ।

निराबाधोऽहम् ।

प्रकृति द्वितिय लाभान्तराय तो लाभ नही होने देती ।
नाश प्रकृति लाभान्तराय कर आत्मा सदा लाभ लेती ॥
अंतराय की पाचो प्रकृति विनाशू करू आत्म कल्याण ।
निज अनत वीर्य गुण प्रगटा पाऊगा निज पद निर्वाण ॥२॥

ॐ ह्री लाभान्तराय कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अर्घ्य नि ।

(३)

३ ॐ ह्री भोगातरायकर्मरहितनिर्विघ्नस्वरूपाय नम ।

अव्याबाधोऽहम् ।

क्रूर प्रकृति भोगान्तराय की भोग भोगने मे बाधक ।
इसको वह ही क्षय करता है जो होता निजात्म साधक ॥
अंतराय की पाचो प्रकृति विनाशू करू आत्म कल्याण ।
निज अनत वीर्य गुण प्रगटा पाऊगा निज पद निर्वाण ॥३॥

ॐ ह्री भोगान्तराय कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अर्घ्य नि ।

(४)

४ ॐ ह्री उपभोगातरायकर्मरहितनिर्विघ्नस्वरूपाय नम ।

नित्यसौख्यार्णवोऽहम् ।

उपभोगान्तराय की प्रकृति सदा बाधक उपभोगो मे ।
इसको क्षय करने का बल है शुद्ध ज्ञान उपयोगो मे ॥
अतराय की पाचो प्रकृति विनाशूं करूं आत्म कल्याण ।
निज अनत वीर्य गुण प्रगटा पाऊगा निज पद निर्वाण ॥४॥

अतरंग बहिरंग परिग्रह तजने का ही कर अभ्यास ।
इसके बिना नहीं तू होगा साधु कभी भी कर विश्वास ॥

ॐ ह्री उपभोगान्तराय कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अर्घ्य नि. ।

(५)

५. ॐ ह्री वीर्यांतरायकर्मरहितनिर्विघ्नस्वरूपाय नम ।

अनंतवीर्यस्वरूपोऽहम् ।

दुष्ट प्रकृति वीर्यान्तराय की सदा आत्म बल में बाधक ।
इसको वह ही क्षय करता है जो होता निजात्म साधक ॥
अंतराय की पाचो प्रकृति विनाशू करू आत्म कल्याण ।
निज अनत वीर्य गुण प्रगटा पाऊगा निज पद निर्वाण ॥५॥

ॐ ह्री वीर्यान्तराय कर्म प्रकृति विनाशनाय श्री अरहत भगवताय अर्घ्य नि ।

महाअर्घ्य

छंद

ज्ञान होता है तो अज्ञान नही होता है ।
ध्यान होता है तो अपध्यान नही होता है ॥
धर्म होता है तो अधर्म नही होता है ।
कर्म होता है तो निष्कर्म नही होता है ॥
सत्य होता है तो असत्य नही होता है ।
शील होता है तो कुशील नही होता है ॥
क्रोध होता है तो क्षमा न कभी होती है ।
मान होता है तो विनय न कभी होती है ॥
माया होती है तो आर्जव न कभी होता है ।
लोभ होता है तो फिर शौच नहीं होता है ॥
पाप होता है तो फिर पुण्य नही होता है ।
पुण्य होता है तो फिर पाप नही होता है ॥
दोनो होते है तो फिर धर्म नही होता है ।
धर्म होता तो पुण्य पाप नही होता है ॥

आगम के अभ्यास पूर्वक श्रद्धा ज्ञान चरित्र सवार ।
निज में ही एकत्व भावना भाकर अपना रूप निखार ॥

कर्म यह अंतराय दुखमयी ही होता है ।
इसके ही नाश से परिपूर्ण सौख्य होता है ॥
आत्म सुख प्राप्ति मे होता है यह सदा बाधक ।
इसका करते विनाश होते है जो दृढ साधक ॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू पाऊ पद निर्वाण ।
अपने ही बल से करू मुक्ति भवन निर्माण ॥

ॐ ह्री अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय महाअर्घ्यं नि ।

जयमाला

छद मानव

सुख हस्तान्तरित न होता अपना अपना होता है ।
सुख को केवल वह पाता जो सुख को ही बोता है ॥
डंके की चोट कहो तुम मै ज्ञायक परमात्मा हूँ ।
निज रस को पीने वाला मै केवल शुद्धात्मा हूँ ॥
जीवन को छंद बना लो बधो मे नही बधो तुम ।
परिभाषित करो स्वय को अमृत के घूट पियो तुम ॥
अभिव्यक्ति आत्मा की कर आत्मानुभूति सुख पाओ ।
अनुभव रस सिन्धु प्राप्ति हित निज अनुभव रस बरसाओ॥
अज्ञात निमत्रण पाकर रुकना मत बढते जाना ।
गुण पुष्पो का चुम्बन कर आनंदामृत उर लाना ॥
निज ज्योति निरख ज्योतिर्मयनिज अतर मे पाओगे ।
समरस में हो विमुग्ध तुम निज आत्मा को ध्याओगे ॥
अस्तित्व तुम्हारा अपना सुरधनु सम रगविरगा ।
भव रंग स्वत क्षय होता भव भावमयी भदरगा ॥

जो व्रत मे सतुष्ट हो गया वही भ्रमण करता ससार ।
जो स्वभाव मे त रहता है हो जाता है भव के पार ॥

जब अपना ध्यान करोगे तो निज मे ही आओगे ।
ज्ञायक स्वभाव पति होकर ध्रुव परमात्मा पाओगे ॥
तुम तो हो मोक्ष स्वरूपी तुमको न मुक्त होना है ।
तुम बनाए ईश्वर तुमको अब क्या होना है ॥
नित्योद्योत उत्सव की वेलाका स्वागत करना ।
निज रस गगोत्री पाकर निज रस ही उर मे रता ॥
जीवत प्राण को पाकर जीवन धारा चलती है ।
फिर जग की माया ममता इसको न कभी छलती है ॥
क्षय अतराय करते ही सुख की धारा मिल जाती ।
मुरझायी कली हृदय की पलभर मे ही खिल जाती ॥
यह अतराय दुखदायी सुख म सदेव बाधक है ।
वह इसको क्षय करता है जो निज का आराधक है ॥

ॐ ह्री अतराय कर्म विनाशनाय श्री अरहत भगवताय जयमाला पूर्णार्घ्य नि ।

आशीर्वाद

दोहा

अतराय को क्षय करू पाऊ सौख्य अपार ।
आत्मेन्द्र की कृपा से हो जाऊ भवपार ॥

इत्याशीर्वाद .

भजन

मुनिसुव्रत जिन मेरे स्वामी ।
पाप ताप सताप विनाशक निष्कल निष्कामी ॥
राजगृही मे हुए चार कल्याणक प्रभु नामी ।
गिरि सम्मेद शिखर से प्रभुवर हुए मोक्षगामी ॥
निज स्वभावसाधन से पाया शिवपद अभिरामी ।
सिद्ध स्वपद मै भी प्रगटाऊँ गुण अनत धामी ॥

तू ही दर्शन ज्ञानवीर्य सुखमय अनंत गुण का भडार ।
अविनाशी है अजर अमर है राग द्वेष विरहित अविकार॥

अंतिम महाअर्घ्य

छंद सरसी

मुझको भव दुख देते आए अष्टकर्म विकराल ।
कभी न इसका अत कर सका फसकर माया जाल ॥
निज की तो अनुभूत न भायी तो कैसे सुख पाता ।
किया न परिचय शुद्धात्मा से तो कैसे दुख जाता ॥
अवसर पाया समय मिला वेला आयी दुख क्षयकी ।
ऋतु सयम की उत्तम पायी अष्टकर्म के जय की ॥
किन्तु न मैने अब तक भी लाभ उठाया स्वामी ।
भव की दल दल मे ही फँस कर समय गवाया नामी ॥
अब पल भर भी पर परिणति के सग नही जाऊगा ।
निज परिणति को ससम्मान निज अतर मे लाऊगा ॥
अष्ट कर्म रज क्षय कर दूगा ज्ञान भाव से स्वामी ।
निज पुरुषार्थ जगा पाऊगा शिव सुख अन्तर्यामी ॥

छद ताटंक

रवि को रवि का दिव्य तेज पा अपना आत्म तेज परखे।
सोम चद्र की विमल ज्योति पा अपना ज्ञान रूप निरखे॥
मगल सर्वोत्तम मगल है अपना आत्म देव मगल ।
बुध को बुद्धि विमल कर अपनी शिव सुख पाए परमोज्ज्वल॥
गुरु को गुरु की शरण प्राप्त कर मुक्ति माग पर हम आए।
सतत शुक्र को धर्म श्रवण कर भव भावो पर जय पाए॥
शनि को उर मे धरे हर्ष से सयम की दृढ नीव महान ।
सातो बार सतत निज चिन्तन करे आत्मा का ही ध्यान॥

अंतिम महाअर्घ्य

ध्यान रूप औषधि पीकर तू ले वैराग्य भाव का मंत्र ।
इन्द्रिय विषय कषाय जीत ले यही मोक्ष पाने का तत्र ॥

उत्सर्पिणी काल में उत्तम धर्म ध्यान ही उर भाए ।
अवसर्पिणी काल हो तो भी मन न हमारा अकुलाए ॥
बीता काल अनंत आज तक जो अनादि कहलाता है ।
धर्म ध्यान का मिला न अवसर चेतन चेत न पाता है ॥
काल नही बाधक स्वध्यान मे मास पक्ष दिन रंच नहीं ।
जब जागे हम तभी सबेरा फिर हो पाप प्रपच नही ॥
वर्षो की साधना व्यर्थ हो जाती यदि न भूल हो दूर ।
भूल दूर होते ही होती सकल साधना शिव सुखपूर ॥
अनगिन तीर्थयात्रा करके भी न सफल हो पाया श्रम ।
आत्म तीर्थ की यात्रा मे हम अब तक हुए नही सक्षम ॥
अब ऐसा कुछ करें कि जिससे सम्यक् दर्शन मिल जाए।
अष्ट कर्म सम्पूर्ण जीत ले ज्ञानाम्बुज उर खिल जाए ॥

गीत

शुद्ध पर्याय प्रगट करने का ही यत्न करो ।
जितने गुणे हैं प्रगट करने का ही प्रयत्न करो ॥
ध्रुव त्रिकाली का लक्ष्य लेके आगे बढ जाओ ।
विभावी भाव राग द्वेष के सयत्न हरो ॥
घातिया घातकी की चाल मे न आना तुम ।
इनको क्षय करके फिर अघातिया चारो ही हरो ॥
मिला है मुक्ति मार्ग बढते चलो हे चेतन ।
मुक्ति पथ पार करके सुख सहज निष्पन्न करो ॥
शुद्ध परिणाम तुम्हे अपने बल से लाना है ।
पूर्ण सिद्धत्व हेतु जो बने वह यत्न करो ॥

जो कषाय भाव के द्वारा सर्व कषाये लेगा जीत ।
मुक्ति वधू उसको वर लेंगी धर उर निश्चय सुदृढ प्रतीत॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करू पाऊं सम्यक् ज्ञान ।
अष्ट कर्म सब नाश कर पाऊं पद नर्वाण ॥

ॐ ह्री सर्व कर्म प्रकृति सत्त्व रहितानत ज्ञान दर्शन वीर्यसुखान्या बाधत्वा वगाहनत्व सूक्ष्मत्वागुरु लघुत्वाद्यनत गुण वैभव समृद्धास महाअर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

महाजयमाला

छंद गीत

रग लाओ तो ज्ञान काही रग लाओ तुम ।
दर्शनी आत्म बना आनद बहुत पाओ तुम ॥
अपनी परिणति का ही श्रृगार तुम करते रहना ।
शुद्ध अनुभव के रस से नित्य ही नहाओ तुम ॥
मैल घुल जाएगा कषायो का धीरे धीरे ।
पूर्ण सिद्धत्व गुण से निज को ही सजाओ तुम ॥
घातिया या अघातिया की रज न रह पाए ।
बीन आनद प्रदाता ही नित बजाओ तुम ॥
मार्ग मे यदि मिले कटक तो तुम दुचल देना ।
बिना रुके ही अपने मुक्ति भवन जाओ तुम ॥

छंद ताटंक

दिव्य ध्वनि अमृत वाणी का लाभ सर्व दुख नाशक है ।
स्वपर प्रकाशक परम ध्यानमय प्रतिक्षण मगलदायक है॥
जो भयभीत कर्म से होते वे ही कर्म नाशते हैं ।
जो न कर्म से भय खाते हैं वे न कर्म नाशते हैं ॥
इच्छाओ के भवर जाल में फँसा हुआ प्राणी दुखिया ।
पग पग पर पीडा पाता है कभी नहीं होता सुखिया ॥

चिदानद भगवान आत्मा एक अखड स्वरूप महान ।
इसके आश्रय बिन न कभी भी होता है शिवपथ निर्माण॥

बहिर्मुखी बनकर जो रहता कभी नही सुख पाता है ।
अन्तर्मुखी जीव जो होता वही आत्म सुख पाता है ॥
जिसे न कोई इच्छा होती इच्छा विजयी वह सम्राट ।
जिनको इच्छाएं होती है उनको होता कष्ट विराट ॥
इच्छाओ का अन्त नही है वे आकाश समान अनत ।
जो इच्छाए जय करते है वे ही पाते सौख्य अनत ॥
इच्छाएँ अनत होती है इच्छा रहित सुमुनि अनगर ।
सागारो को धर्म मार्ग पर लाकर हो जाते भव पार ॥
गो गज अश्व रत्न राज्य भू धन सब जानो दुख के स्रोत।
एक मात्र सतोष महाधन परम शान्ति से ओत प्रोत ॥
इच्छाओ पर करो नियत्रण रागादिक से लो मुख मोड ।
पावन समकित उर मे लाओ निज सुख सर से नाता जोड॥
भव तन भोगेच्छा जयकरने वाले पाते पद निर्वाण ।
नही समस्या होती फिर कुछ होते कर्म न फिर बलवान॥
नित्यानदमयी मगलता कठिनाई से प्राप्त हुई ।
भाव नग्नता जागी उर मे द्रव्यनग्नता व्याप्त हुई ॥
दर्श विशुद्धि भावना भाना करना अपना दृढ श्रद्धान ।
सतत विनय सम्पन्न भाव हो तब होगा सम्यक् ज्ञान॥
निरतिचार हो शुद्ध शील व्रत तुम कषाय वश मत होना।
निज ज्ञानोपयोग मे रहना ज्ञानाभ्यास लीन होना ॥
भव तन से वैराग्य भाव हो उर सवेग भाव पावन ।
शक्ति पूर्वक त्याग भावना मगल वर्धक मन भावन ॥
शक्ति पूर्वक ही तप करना शुद्ध स्वरूप रूप सयम ।
साधु समाधि हृदय मे हो बनना मुनि सेवा मे सक्षम ॥

जो व्रत मे सतुष्ट हो गया वही भ्रमा करता संसार ।
दया दान पूजा रागादिक आश्रव भाव सभी बेकार ॥

रोगी बाल वृद्ध मुनियो की सेवा ही है वैय्यावृत्य ।
हो अरहत भक्ति निज उर मे नही कषायो का हो नृत्य ॥
हो आचार्य भक्ति अतर मे रत्नत्रय की हो उर शक्ति ।
उपाध्याय मुनि की सेवा हो यह है उत्तम बहुश्रुत भक्ति ॥
प्रवचन भक्ति जिनागम श्रद्धा जिन प्रवचन का हो बहुमान।
षड्आवश्यक भाव द्रव्यमय अपरिहाणि आवश्यक जान॥
इच्छाओ का निरोध करके जिनपथ की प्रभावना हो ।
साधर्मी से प्रीत सहज हो अब वात्सल्य भावना हो ॥
तीर्थंकर पद दायक सोलहकारण यही भावना है ।
दर्श विशुद्धि भावना के बिन शून्य समस्तभावना है ॥
समकित पूर्वक एक भावना भी हो तो होता कल्याण ।
अष्टकर्म सब हो जाते है दहन प्राप्त होता निर्वाण ॥

छंद मानव

अन्तर्मन मे हलचल हो तो [illegible] पुथल होती है ।
यदि ज्ञाननीर मिल जाए तो अन्तर्मल धोती है ॥
फिर ज्ञान विराजित करता दानो हाथो से भीतर ।
निज हित की बात सोचता निज चदन लगता सुन्दर ॥
मन्तव्य आत्म अक्षत का इसको पुलकित करता है ।
ज्ञातव्य विभाव भाव सब यह हर्षित हो हरता है ॥
उर भेद ज्ञान लाता है सारा मिथ्यात्व भगाकर ।
लाता है शुद्ध पुष्पयह अपना पुरुषार्थ जगाकर ॥
मोहाग्नि बुझाऊँ दुखमय अनुभव रस चरु के द्वारा ।
अज्ञान अग्नि नाशूंगा मै ज्ञान दीप के द्वारा ॥

यदि समता परिणाम नही है तो स्वभाव की प्राप्ति नहीं ।
यदि स्वभाव की प्राप्ति नहीं तो फिर शिव सुख की व्याप्ति नहीं॥

कर्माग्नि बुझाऊगा मै ध्रुव ध्यान धूप के बल से ।
कामाग्नि बुझाऊगा मै प्रभु महाशील उज्ज्वल से ॥
भव अग्नि बुझाऊगा मै प्रभु महामोक्ष फल द्वारा ।
भव ज्वाला शान्त करूगा अपनी स्वशक्ति के द्वारा ॥
इस भाति प्रभो पूजन कर पूजन का फल पाऊंगा ।
सम्यक् दर्शन को पाकर शिव पथ पर मै आऊँगा ॥
जब पूजन हो जाएगी तो निज का ध्यान करूगा ।
सामायिक उत्तम करके समता रस पान करूगा ॥
बस इतना ही करना है कृत कृत्य बनूगा स्वामी ।
ससार मार्ग को क्षय कर शिवसुख पाऊगा नामी ॥
भव हलचल चचलता तज पाना है मुझे अचलता ।
शिव पथ के आगे भाती है कभी न भव चचलता ॥
माया की छाया पाकर काया पायी दुखदायी ।
जड काया को क्षय करके पाऊगा पद सुखदायी ॥
वेज्ञानिक भेदज्ञान के मुझको भी भेद ज्ञान दो ।
अपने दोनो हाथो से प्रभु मुझको आत्म ज्ञान दो ॥
स्वाधीन सुखो की आशा मेरे उर मे जागी है ।
भव सुख की अभिलाषा अब पूरी पूरी भागी है ॥
सम्यक् दर्शन की शोभा सयम से ही होती है ।
सयम की शोभा सम्यक् दर्शन से ही होती है ॥
वसु कर्मो को क्षय करने का निश्चय अटल सुहाया ।
इसलिए प्रभो हर्षित हो मै शरण आपकी आया ॥

ज्ञान त्याग वैराग्य भावना ही तो है शिवसुख का मूल ।
पर का ग्रहण त्याग तो सारा निज स्वभाव के है प्रतिकूल॥

छंद मावन

बारह मासो मे हे प्रभु है सभी मास अति उत्तम ।
तत्त्वाभ्यास इनमे हो तो होते ये परमोत्तम ॥
आश्विन मे भेदज्ञान कर पूर्णिमा ज्ञान की पाऊ ।
कार्तिक मे ज्ञान प्रभा पा क्षायिक समकित प्रगटाऊ ॥
वैराग्य सहित मगसिर मे अविरति को जय कर डालू ।
फिर पौष मास मे पावन निश्चय सयम दृढ पालू ॥
इस माघ मास मे अब तो सम्पूर्ण प्रमाद गला दू ।
बन पच महाव्रत धारी दुखमय ससार हिला दू ॥
फागुन मे होली खेलू ले रग ध्यान के पावन ।
खेलू मैं आख मिचौली निज परिणति से मन भावन ॥
निज चैत्र वसती चिन्मय श्रेणी चढने का मौसम ।
पा शुक्ल ध्यान की वेला अविकल्प ध्यान लू उत्तम ॥
वैशाख शिखर पर चढकर उर यथाख्यात प्रगटाऊ ।
चारो कषाय क्षय करके कैवल्य ज्ञान निधि पाऊ ॥
अब ज्येष्ठ मास मे त्रिभुवन का ज्येष्ठ चिदेश बनू मै ।
घातिया चार का हर्त्ता अर्हत् परमेश बनू मै ॥
आषाढ निजानदी हो बन सकल ज्ञेय का ज्ञायक ।
आनद अतीन्द्रिय सागर पाऊ बन त्रिभुवन नायक ॥
श्रावण की हरियाली मे रिमझिम अनुभव रस बरसे ।
त्रैलोक्य सकल दर्शन कर प्रतिपल प्रतिक्षण बहु हरषे ॥
पा श्रेष्ठ भाद्र पद .अनुपम परिपूर्ण धर्म प्रगटाऊ ।
सिद्धत्व स्वगुण को पाकर त्रैलोक्य शिखर पर जाऊ ॥

राग भाव को हेय जानकर उपादेय निज को ही जान ।
सकल ज्ञेय ज्ञाता तू ही है निज ज्ञायक को ही पहचान॥

त्रय योग अभाव करू मैं सिद्धो की नगरी पाऊ ।
निज मुक्ति कामिनी से अब परिणय कर शिव सुख पाऊ॥
फिर बारह मास सदा ही आनद सहित बीतेगे ।
सिद्धो को वन्दन कर हम अब दोषो से रीतेगे ॥
बस एक ध्येय हो अपना निर्मल स्वरूप गुण शाली ।
निज ज्ञान प्राप्ति के हित हम पाए समकित हरियाली ॥
इस हरियाली को अपने जीवन मे लाना होगा ।
षड ऋतुओ के मौसम को इस बार जगाना होगा ॥
विज्ञान ज्ञान घन अपना उज्ज्वल स्वभाव हम पाए ।
ध्यानाग्नि मध्य कर्मो को ईधन वत त्वरित जलाए ॥

ॐ ह्री ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीय आयु नाम गोत्र अतराय सर्व कर्म विनाशनाय श्री श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो महाजयमाला पूर्णार्घ्य नि ।

आशीर्वाद

दोहा

हो जाऊ निष्कर्म प्रभु करू आत्म कल्याण ।
अष्ट कर्म सब दहन कर पाऊ पद निर्वाण ॥

इत्याशर्वाद :

शान्ति पाठ

दोहा

मुक्ति मार्ग पाऊ प्रभो करूँ आत्म कल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति पा करू कर्म अवसान ॥
नही कहीं कोई दुखी हे प्रभु हो लव लेश ।
द्रव्य दृष्टि से सभी का है सिद्धो समवेश ॥
सकल जगत मे शान्ति हो हो सुख का हो साम्राज्य ।
सब जीवो को प्राप्त हो उनका शिव सुख राज्य ॥

भूत भविष्यत् वर्त्तमान युगपत प्रतिसमय झलकता है ।
मुक्ति कामिनी का वैभव उसकी ही ओर ललकता है ॥

परम शान्ति इच्छुक प्रभो करता तुम्हे प्रणाम ।
महा शान्ति दो हे प्रभो पाए सब ध्रुवधाम ॥

पुष्पाजलि क्षिपामि

शान्ति धारा

यहाँ नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें

क्षमापना

सोरठा

आप क्षमा भडार क्षमा करो अपराध सब ।
यह विधान सम्पूर्ण आप कृपा से हो गया ॥
मै अज्ञानी नाथ भूलचूक कर दो क्षमा ।
मुझको करो सनाथ मै अनाथ हूँ हे प्रभो ॥
आप कृपा से नाथ कर्म दहन कर दू सभी ।
हो जाऊ निष्कर्म निज पुरुषार्थ स्वशक्ति से ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्य मंत्र ॐ ह्रीं अष्ट कर्म दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नम :

भजन

अजित प्रभु की महिमा न्यारी ।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा भव भव सुखकारी ॥
क्रोध मान माया लोभादिक सब कषाय हारी।
पच पाप तज निज स्वभाव से हुए निर्विकारी ॥
सत्य अहिसा ब्रह्मचर्य अपरिग्रह के धारी ।
स्याद्वाद सदेश सुनाया तुमने भवतारी ॥
वीतराग निर्ग्रंथ दिगबर मुद्रा भव हारी ।
भेदज्ञान की ज्योति जला दो प्रभु मगलकारी ॥

भजन

भाव पराश्रित के कुचक्र से जो भी जीव प्रथक रहता ।
स्वाश्रित भावो की गंगा में ही निर्बाध सहज बहता ॥

भजन

विभावी परिणति सुलाती थपकिया देकर मुझे ।
लूट लेती ज्ञान दर्शन दुखी करती है मुझे ॥
स्वभावी परिणत जगाती प्रभाती गाकर मुझे ।
ज्ञान दर्शन कोष पूरा सौप देती है मुझे ॥
अतहीन प्रकाश पाकर सजग हो जाता प्रभो ।
राग के अगार सारे बुझा देता हू विभो ॥
इन्द्र धनुषी सप्त नय से परखता हू स्वय को ।
मार्ग पाकर शान्त होता प्राप्त कर इत्यलम् को ॥
परदेशिनी परिणति हुई लज्जित सदा को हे प्रभो ।
ज्ञान रूप सुकेशिनी परिणति मिली है अब विबो ॥

राग को जीतेगे तो पूर्ण सौख्य पाएगे ।
राग जीता नही तो बहुत दुख उठाएगे ॥
राग द्वेषो की आग हम को जलाती आई ।
अब तो इस राग आग को त्वरित बुझाएगे ॥
राग द्वेषो की वासना ने जलाया हमको ।
अब तो हम वासना को पूर्णत मिटाएगे ॥
मोह का पुत्र राग है ये है बडा बलशाली ।
इसको निवर्बल बना के दूर यह हटाएंगे ॥
राग क्षय होगा तो आनद अतीन्द्रिय होगा ।
मोक्ष का पूर्ण सौख्य सर्वदा को पाएगे ॥

सशय मोह निवारण करके निज स्वभाव आश्रय करता।
पूर्णानद स्वरूप सहज ही प्रवहित हो शिव रस झरता ॥

भजन

राग दरबारी मुझे अब नही भाता चेतन ।
राग दीपक ही मुझे आज सुहाता चेतन ॥
राग दीपक जला के ज्वाल मैं जलाऊगा ।
कर्म का चक्र आज पूरा ही मिटाऊगा ॥
मेघमलहार का फिर राग त्वरित गाऊंगा ।
शान्त भावो को पाके पूर्ण सौख्य पाऊगा ॥
फिर तो ठुमरी की धुन पै नाच करेगा यह मन ।
धुन कहखे की मृदुल थाप सुनोगे चेतन ॥
भोर होते ही मधुर भैरवी मै गाऊगा ।
मुक्ति के गीत गा के जन्म दिन मनाऊगा ॥
राग दरबारी को तो बंद करो अब चेतन ।
तुम तो हो मोक्ष स्वरूपी महान आनदघन ॥
ध्रुव तरगो मे नव्हन करूगा मैं हे आत्मन् ।
सिद्धो से बात करूगा मै प्रेम से प्रतिदिन ॥

करो कल्याण निज का अब तुम्हे यदि सौख्य पाना है ।
तजो तुम पच पापो को अगर भव दुख न पाना है ॥
पुण्य के कार्य ही करना तत्त्व निर्णय भी तुम करना ।
बिना निज तत्त्व निर्णय के नही कोई ठिकाना है ॥
पुण्य जब हो बहुत सचित तो उनको भी त्वरित तजना।
शुद्ध भावो मे ही रहना तुम्हे यदि मोक्ष जाना है ॥
पुण्य का हो उदय जब तुम बनो मुनिपद कही धारी ।
बिना मुनि पद लिए चेतन समय यो ही गवाना है ॥

भजन

सभी समस्याए ज्वलत है जब तक है उर मे अज्ञान ।
समाधान सबका हो जाता जब होता है निर्मल ज्ञान ॥

भजन

मोह आता है तो बेहोश मै हो जाता हूँ ।
राग आता है तो मै धूल मे सो जाता हूं ॥
राग कहता है चलो स्वर्ग का जमज ले तो ।
बिना समझे ही उसके सग मै हो जाता हूँ ॥
जब कषायो का जोर बहुत होता है मन मे ।
शुभ अशुभ भाव की शैय्या पै मै सो जाता हू ॥
क्या करू कैसे करू कैसे अपने को देखू ।
पर के ही जाल मे फॅस उसके पास जाता हू ॥
मोह की वारुणी पी स्वय को भुलाया है ।
इसलिए कष्ट बहुत मै हमेशा पाता हू ॥
अब समय आ गया है हित करू अपना स्वामी ।
इसलिए गीत मे निज के ही सदा गाता हू ॥
राग की बासुरी तोडी है मैने निज बल से ।
अपनी ही बासुरी मै रात दिन बजाता हू ॥

ज्ञान की मंदाकिनी ने ह्रदय निर्मल कर दिया ।
मोह तम को सर्वदा के लिए पूरा हर लिया ॥
दर्शनी पावन तरगो से सुवासित कर रही ।
शुद्ध अनुभव रस ह्रदय में आज पूरा भर लिया ॥
इन्द्रधनुषी सूर्य ने भी कया है मेरा नव्हन ।
मुझे गोदी में उठाकर ज्ञान रथ पर धर दिया ॥
यथाख्यात महान आकर कठ से मेरे लगा ।
मुक्ति रमणी ने स्वतः आकर प्रफुल्लित कर दिया ॥
कल्पनाओ के विपिन में अब न जाऊगा कभी ।
निर्विकल्पी भावना ने सहज जीवन कर दिया ॥

तन धन यौवन परिजन सारे एक मात्र नश्वर संयोग ।
इनके पीछे पागल बनकर पापो का करता है योग ॥

भजन

श्री अभिनन्दन को वदन ।
चिदानन्द आनन्द कद के आज हुए दर्शन ॥
भाव शुभाशुभ की छाया में भयो कर्म बधन ।
निज स्वभाव की ज्ञान ज्योति से मिटे जगत क्रदन ॥
निज स्वरूप महिमा झलकत ही कियो आत्म चितन ।
ध्रुव अनुपम पंचम गति पायी पायो मोक्ष सदन ॥

पद्म प्रभुकी महिमा गाऊ ।
निज स्वभाव मय परम शान्त छविलख कर हर्षाऊ ॥
काम भोग बधन को तोडू ज्ञान भाव लाऊ ।
शुद्धात्मा का आश्रय लेकर समकित उपजाऊ ॥
पाप पुण्य से रहित अवस्था हे प्रभु प्रगटाऊ ।
वीतराग सर्वज्ञ चिदातम निज वैभव पाऊ ॥

श्री सुपार्श्वनाथ चरण कमल पूजिये जी ।
निज स्वभाव साधन से शिव हूजिये जी ॥
निज स्वरूप को निहार विषय भोग टार टार ।
अष्ट कर्म शत्रुओ से नित्य जूझिये जी ॥
पर विभाव को विदार शुद्ध भाव को संवार ।
भव दुख पहेली को आज बूझिये जी ॥

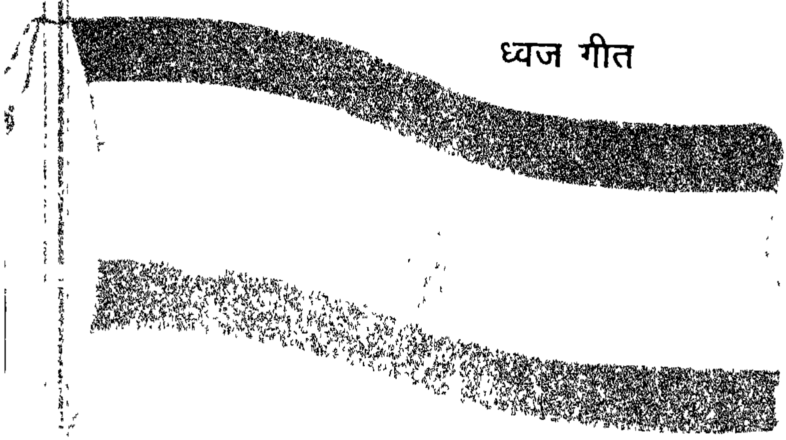
चद्र प्रभु चरण चित्त धरिये ।
चेतयिता चारित्र चक्रवर्ती निज पद वरिये ॥
चि(मय चेतन चिद्रूपी जिन का सुमरिन करिये ।
चिन्ताहरण चतुर्गति नाशक शिव सुख उर धरिये ॥
मिथ्या मिमिर विनाशक सम्यक् दर्शन आदरिये ॥

राजमल पवैया रचित शताधिक पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें

१ चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
२ तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र विधान
३ सम्मेद शिखर विधान
४ वृहद् इन्द्रध्वजमडल विधान
५ शान्ति विधान
६ विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
७ चौसठ ऋद्धि विधान
८ पचमेरु नदीश्वर विधान
९ जिन गुण सपत्ति विधान
१० तीर्थंकर महिमा विधान
११ याग मडल विधान
१२ पचपरमेष्ठी विधान
१३ पच कल्याणक विधान
१४ कर्म दहन विधान
१५ जिन सहस्रनाम विधान
१६ कल्पद्रुम विधान
१७ गणधर वलय ऋषिमडल विधान
१८ जैन पुजाजलि
१९ तीर्थ क्षेत्र पुजाजलि
२० श्रुत स्कध विधान
२१ पूजन किरण
२२ पूजन दीपिका
२३ मगल पुष्प द्वितीय
२४ मंगल पुष्प तृतीय
२५ समकित तरग
२६ नित्यपाठ अपूर्व अवसर
२७ तीस चौबीसी विधान
२८ आदिनाथ भरत बाहुबलि पूजन
२९ शाति कुन्थु अरनाथ विधान
३० नेमि पार्श्वनाथ महावीर
३१ गोम्मटेश्वर बाहुबलि
३२ भगवान महावीर
३३ जैन धर्म सार्व धर्म
३४ वीरो का धर्म
३५ जन मगल कलश
३६ जीवन दान
३७ सिद्ध चक्र वदना
३८ तीनलोक तीर्थ यात्रा गीत
३९ भक्तामर विधान
४० चतुर्विंशति स्तोत्र
४१ जिनेन्द्र चालीसा सग्रह
४२ चतुर्दश भक्ति
४३ जिन सहस्रनाम हिन्दी
४४ जिन वदना
४५ मुनि वन्दना
४६ आत्म वन्दना
४७ पचास्तिकाय विधान
४८ अनुभव
४९ परमब्रह्म
५० सैतालीस शक्ति विधान
५१ कुन्दकुन्द महिमा
५२ कुन्दकुन्द वाणी
५३ इन्द्रध्वज विधान
५४ एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
५५ कुन्दकुन्द वचनामृत
५६ श्री कल्पद्रुम मडल विधान
५७ श्री तत्वार्थ सूत्र विधान
५८ श्री दसलक्षण विधान
५९ श्री प्रवचन सार विधान
६० श्री नियमसार विधान
६१ श्री अष्टपाहुड विधान
६२ श्री समयसार विधान
६३ श्री रत्नकरड श्रावकाचार विधान
६४ श्री परमात्म प्रकाश विधान
६५ श्री षटखडागम सत्प्ररूपणा विधान
६६ कार्तिकेयानुप्रेक्षा विधान
६७ श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय विधान
६८ श्री योगसार विधान
६९ श्री द्रव्य सग्रह विधान
७० श्री कसायपाहुड विधान
७१ समाधि शतक विधान
७२ श्री गोम्मटसार विधान
७३ श्री समयसार कलश विधान
७४ श्री पद्मनन्दि श्रावकाचार विधान
७५ श्री धर्मोपदेशामृत विधान
७६ तत्त्वानुशासन विधान
७७ श्री दानोपदेश विधान
७८ इष्टोपदेश विधान
७९ श्री तत्त्वज्ञान तरगिणी विधान
८० श्री श्रवण बेलगोला विधान
८१ श्री ज्ञानार्णव विधान
८२ श्री आत्मानुशासन विधान
८३ श्री सोलह कारण विधान
८४ श्री बारस अणुवेक्खा विधान
८५ श्री पच बालयति विधान
८६ श्री नियमसार कलश विधान
८७ श्री तत्त्वार्थ सार विधान
८८ श्री सम्मेद शिखर अर्घ्यावलि

ॐ

श्री कर्म दहन विधान



ध्वज गीत

जिन शासन ध्वज श्रेष्ठ हमारा

जिन ध्वज ऊँचा रहे हमारा ।
गूँजे चहुँ दिशि जय जयकारा ॥
पच महाव्रत रग ह न्यारा ।
धर्म अहिसा सत्य शील अपरिग्रह व्रत अचौर्य है प्यारा ॥
भेद ज्ञान की निधि पाएँगे,
सम्यक् दर्शन उर लाऐंगे,
पर उपकार हृदय मे धारा ।
जिन ध्वज ऊँचा रहे हमारा ॥
स्वाध्याय की रुचि जागी है,
मिथ्यामति पूरी भागी है,
पूर्ण मोक्ष का लक्ष्य विचारा ।
जिन ध्वज ऊचा रहे हमारा ॥

तारादेवी पवैया ग्रथमाला भोपाल की भेट

ॐ

श्री कर्म दहन विधान

जिनेन्द्र वंदना रत



तारादेवी पवैया

की स्मृति में संस्थापित

तारादेवी पवैया ग्रथमाला ४४ इब्राहीमपुरा भोपाल ४६२ ००१

आध्यात्मिक विधानों की श्रृखला निर्माण करने वाली एक अमूठी सस्था